नन्दी मंदिर (विश्वनाथ मंदिर के समीप)खजुराहो

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

पर्यटन मंत्रालय,भारत सरकार, नई दिल्ली

जनवरी- मार्च, 2021

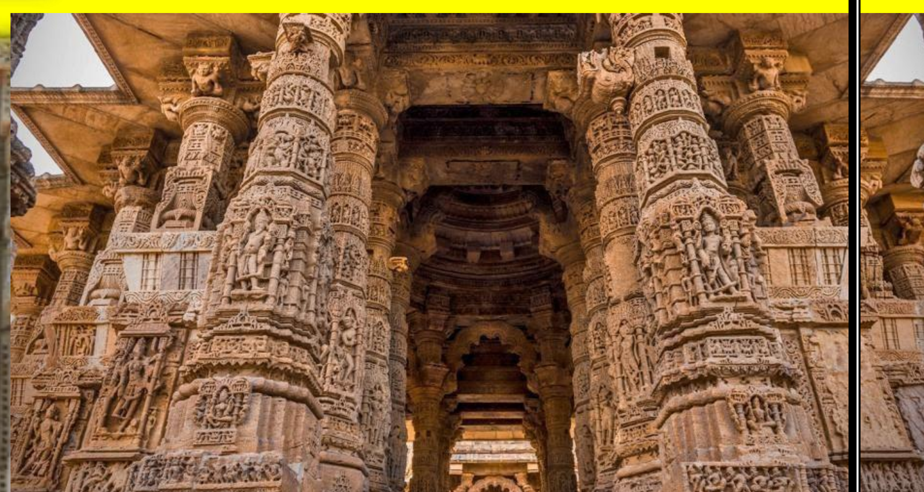

सूर्य मंदिर, मोढेरा(गुजरात)

नागस्तम्भ वराही देवी मंदिर

जैन मंदिर, खाजुराहो के आंगन में स्तम्भ।

देश के दो अन्य प्रसिद्ध सूर्य मंदिर श्रीनगर (ऊपर) तथा कोणार्क (नीचे)

भारतीय मुद्रा (रुपए) पर पर्यटन स्थल

यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल: रानी की वाव (बावड़ी) पाटन (गुजरात) तथा नार्थ बे (अंडमान एवं निकोबार द्वीप)

अतुल्य भारत

।। भारत सरकार,पर्यटन मंत्रालय की त्रैमासिक गृह पत्रिका।।

- संरक्षक : श्री अरविंद सिंह, सचिव, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार
- प्रधान संपादक एवं परामर्शदाता : श्री ज्ञान भूषण, आर्थिक सलाहकार, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार
- सम्पादक : श्रीमती संतोष सिल्पोकर,संयुक्त निदेशक, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार
- प्रबंध-संपादक : श्री मोहन सिंह, कंसल्टेंट, पर्यटन मंत्रालय
- अन्य सहयोगी : श्री राज कुमार, पर्यटन मंत्रालय

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं । सरकार अथवा पर्यटन मंत्रालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

इस अंक में अधिकतर चित्र लेखकों द्वारा ही उपलबध कराए गए है और कुछ 'गूगल' और अतुल्य भारत से लिए गए हैं, जिनके के लिए हम उनके आभारी हैं।

कृपया अपने लेख एवं सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें :

संपादक, अतुल्य भारत,
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार,
7वां तल, चन्द्रलोक बिल्डिंग,
36, जनपथ, नई दिल्ली - 110011. दूरभाष : 011-23724255
ई-मेल- editor.atulybharat@gmail.com

सूचनाओं के प्रचार हेतु नि:शुल्क वितरण

वर्ष : 6 अंक 23

इन पृष्ठों पर इस बार....

5.	प्रधान सम्पादक की ओर से	
7.	खजुराहो यात्रा: एक अविस्मरणीय दैवीय अनुभव	डॉ. विदुषी शर्मा
17.	जैसलमेर से निकली - आशा की किरण	डा. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
21.	स्वर्ण त्रिभुज के अज्ञात पर्यटन स्थल	अबिनाश दाश
38.	छत्तीसगढ़ के व्यंजन	सल्ला विजयकुमार और श्रीमती यशोधरा पांडा
43.	प्राकृतिक सुंदरता के अनदेखे गंतव्य	सुन्दर लाल 'सुनेहरी'
51.	कहानी भूतनाथ	सुशांत सुप्रिय
57.	सूर्य मंदिर : मोढ़ेरा	आशाबेन पटेल
66.	कविताएं	इन्दुकांत अंगिरस, घनश्याम दास बैरवा सुश्री अनीता कुमारी
68.	याद इन्हें भी कर लें - नरेन्द्र चंचल और सागर सरहदी	
74.	पर्यटन मंत्रालय की सचित्र गतिविधियां और समाचार	

डिजाइन एवं प्रस्तुति :मोहन सिंह

परामर्शदाता व प्रधान सम्पादक
ज्ञान भूषण,आई.ई.एस.
आर्थिक सलाहकार
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

प्रधान सम्पादक की ओर से....

'अतुल्य भारत' का 23वां अंक आपके सामने सहर्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। पर्यटन मंत्रालय भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सतत प्रयास कर रहा है और इसमें ''अतुल्य भारत'' पत्रिका का भी अपना एक सुनिश्चित योगदान है। इसके माध्यम से मंत्रालय और उसके अधीनस्थ कार्यालयों के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को भी अपनी प्रतिभा दर्शाने का अवसर मिला है।

भारत की संस्कृति और पर्यटन में मंदिरों का अपना एक विशिष्ट स्थान है। इसीलिए बहुत से लोग इन स्थलों पर तीर्थ के समान पर्यटन करते हैं। लेकिन मंदिर के शहर और उसकी अपनी विशेषता का भी महत्व होता है। मध्य प्रदेश में स्थित खजुराहो के मंदिर अपनी ही एक मिसाल हैं। यह स्थान यूनेस्को की सूची में ''विश्व विरासत स्थल'' के रूप में सूचीबद्ध है। यहां प्रतिवर्ष हजारों देसी - विदेशी पर्यटक और तीर्थयात्री ही नहीं आते बल्कि इनकी अद्भुत आकर्षक वस्तुकला के बारे में और जानने हेतु शोधकर्ताओं का भी बड़ी संख्या में आगमन होता है। इसी कड़ी में डॉ. विदुषी शर्मा ने अपने आलेख, 'खजुराहो यात्रा: एक अविस्मरणीय दैवीय अनुभव' के माध्यम से अपने अनुभवों को पाठकों के साथ साझा किया है।

देश अभी तक कोरोना के प्रभाव से उभर नहीं पाया है और इसका सबसे अधिक असर पर्यटन क्षेत्र पर ही पड़ा है। सरकार द्वारा पर्यटन उद्योग सहारा देने के लिए घरेलु या स्थानीय पर्यटन को बढ़ावा देने के योजनाबद्ध प्रयास शुरु किए गए हैं। ऐसे में राजस्थान की स्वर्णनगरी जैसलमेर के पर्यटन से जुड़े कारोबारियों ने भी पर्यटन को बचाने की एक अनूठी पहल की है। जिसका राजेन्द्र प्रसाद शर्मा ने अपने आलेख 'जैसलमेर से निकली आशा की किरण' में विवरण दिया है।

ओडिशा को "मंदिरों की भूमि" के रूप में जाना जाता है। यहां पर्यटकों या तीर्थयात्रियों का आगमन तो होता है, फिर भी, ओडिशा के कई सुंदर गंतव्य अभी भी पर्यटकों की दृष्टि से

ओझल हैं। ऐसे ही कुछ गंतव्यों के बारे में जानकारी एकत्रित कर सुधि पाठकों के लिए प्रस्तुत की है, श्री अबिनाश दाश ने ''स्वर्ण त्रिभुज के अज्ञात पर्यटन स्थल'' में ।

''एक भारत - श्रेष्ठ भारत'' कार्यक्रम के तहत देश के प्रत्येक राज्य को किसी अन्य राज्य/ संघ शासित प्रदेश के साथ जोड़ा गया है ताकि वह एक दूसरे की भाषा, साहित्य, व्यंजन/भोजन, त्यौहारों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, पर्यटन आदि के क्षेत्रों में एक दूसरे के साथ रचनात्मक रूप से जुड़ें और देश भर में समझ की एक भावना प्रतिध्वनित हो। इसी को ध्यान में रख कर श्री सल्ला विजयकुमार और श्रीमती यशोधरा पांडा ने ''छत्तीसगढ़ के व्यंजन'' प्रस्तुत किए हैं।

पिछले अंक में आपने अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के बारे में जाना था। इसी श्रृंखला में अब की बार श्री सुन्दर लाल 'सुनेहरी' ने अपने आलेख ''प्राकृतिक सुंदरता के अनदेखे गंतव्य'' में इस द्वीपीय प्रदेश में अनुपम सुंदरता, चकित कर देने रहस्यमयी कुछ स्थानों का उल्लेख किया है। इनके साथ ही श्री सुशांत सुप्रिय की कहानी ''भूतनाथ'' को प्रस्तुत की गई है।

भारत के मंदिरों की श्रृंखला में, गुजरात के महसाणा जिले में स्थित, मोढ़ेरा के सूर्य मंदिर को विश्व वास्तुशिल्प का एक चमत्कार माना जाता है। इसे भी यूनेस्को ने ''विश्व विरासत स्थल'' के रूप में सूचीबद्ध किया है। सुश्री आशाबेन पटेल ने 'सूर्य मंदिर : मोढ़ेरा' के माध्यम से इस सूर्य मंदिर की वास्तुकला और भव्यता के साथ ही वहां आयोजित किए जाने वाले वार्षिक ''उत्तरायण महोत्सव'' के वर्णन सहित गंतव्य की प्राकृतिक विशेषताओं की सटीक जानकारी प्रस्तुत की है।

इनके साथ ही श्री इन्दुकांत आंगिरस, सुश्री अनीता कुमारी और श्री घनश्याम दास बैरवा की कविताओं को स्थान दिया गया है। याद इन्हें भी कर लें में श्री नरेन्द्र चंचल और श्री सागर सरहदी के बारे में बताया गया है। ''पर्यटन मंत्रालय की सचित्र गतिधियां और समाचार'' भी प्रस्तुत किए गए है।

अतुल्य भारत पत्रिका को प्रोत्साहित करने के लिए हम माननीय पर्यटन मंत्री जी का भी धन्यवाद करते हैं। इस पत्रिका के प्रकाशन में हम आदरणीय सचिव (पर्यटन) महोदय का भी आभार व्यक्त करते हैं जो देश में पर्यटन के संवर्धन तथा प्रोत्साहन के लिए हमें सतत प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्रदान करते रहे हैं ।

अंत में, सभी लेखकों तथा पाठकों तथा गणमान्य अतिथियों का आभार व्यक्त करता हूं जो इस पत्रिका में निरंतर अपना सहयोग प्रदान करते रहे हैं । आपके विचारों तथा प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा ।

ह/-

(ज्ञान भूषण)

प्रधान संपादक

खजुराहो यात्रा एक अविस्मरणीय दैवीय अनुभव

- डॉ. विदुषी शर्मा

यात्रा.... जिसका नाम आते ही मन में अजीब सी तरंगे उठने लगती हैं। एक खुशी, एक उत्साह, उत्पन्न हो जाता है कि जीवन में लगातार एक ही तरह की दिनचर्या से हटकर कुछ समय घूमने को और कुछ नया देखने को सीखने को मिलेगा। जहां हम स्वच्छंद होंगे, पारिवारिक जिम्मेदारियों का बोझ शायद कुछ कम होगा। जहां अपनी भावनाओं, अपने सपनों, आपनी इच्छाओं को जीने का एक अवसर मिलेगा।

इसी के साथ- साथ अपने अनुभवों को, अपनी यादों को, अपने आनंद को हम कैमरे के माध्यम से एक अनंत ख़ज़ाने के रूप में अपने साथ लेकर आएंगे। यही है एक यात्रा की सुखद अनुभूति। इन यात्राओं के स्मृति चित्रों को हम जब भी दोबारा देखते हैं तो जैसे एक फिल्म की भांति पूरी यात्रा हमारी आंखों के सामने से गुजरने लगती है और हमें फिर से एक नई ताज़गी के साथ जीने की प्रेरणा दे जाती है। हां, यदि यह यात्रा किसी धार्मिक स्थल, तीर्थ स्थल और ऐतिहासिक स्थल के साथ-साथ प्रकृति से भी जुड़ी हो तो क्या बात है ?

हम हमेशा से ही सपने देखते हैं। पर यह सपने ऐसे होते हैं जिन्हें किसी के साथ शायद ही साझा कर पाएं हों। कोई भी चित्र देखकर, कोई फिल्म देखकर, कोई दृश्य देखकर या किसी की बातें या कोई वृत्तांत सुनकर हमारे मन में भी कहीं ना कहीं एक इच्छा बलवती होती है, एक हूक सी उठती है कि हमें भी उस विशेष स्थान को देखना है। जीवन में कभी न कभी तो ऐसा मौका जरूर मिलेगा।

हम सभी के जीवन में यह पल जरूर आते हैं जब हमारी दबी हुई इच्छाएं साकार रूप ले लेती है। जब हमें उनको पूरा करने का कोई कारण, कोई हेतु प्राप्त होता है। यात्रा कहीं की भी हो, अपने आप में अनोखी ही होती है और इसके साथ ही जब वहां के चित्र भी पास में हो तो

वह जीवन भर के लिए एक यादगार बन जाती है। यदि इस यात्रा के अनुभव चित्र सहित हम दूसरों के साथ साझा करते हैं तो वह संस्मरण बन जाते हैं।

वैसे तो जीवन भी एक लंबी यात्रा ही है जिसमें विभिन्न प्रकार के पड़ाव आते हैं सुख-दु:ख, हानि- लाभ, मिलन - जुदाई। जीवन की यात्रा के कुछ भी अविस्मरणीय, अवश्यम्भावी पड़ाव होते हैं जो सभी के जीवन में एक अलग अनुभव और सीख ले कर आते हैं। जब इन्हीं अनुभवों को यदि शब्द प्रदान कर दिए जाते हैं तो वह 'रचना' बन जाती और शब्द ब्रह्म है इसलिए वह अमर हो जाती है।

मैं बचपन से ही कभी भी खजुराहो के बारे में, उसके मंदिरों इत्यादि के बारे में किसी मैगजीन में या किसी कार्यक्रम इत्यादि में देखती थी तो मन में इच्छा होती थी कि जीवन में एक बार तो वहां जरूर जाना ही है, सोचती थी न जाने कब ये इच्छा पूरी होगी।

यह सुअवसर मुझे 1-फरवरी-2020 को खजुराहो में Environment and Social Welfare Society की तरफ से दो दिवसीय अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी में जाने के अवसर के रूप में प्राप्त हुआ। खजुराहो में संगोष्ठी का आयोजन, मेरी इस यात्रा का एक महत्वपूर्ण कारण था। मन प्रसन्नता हो गया। जल्द से जल्द ट्रेन की टिकट रिज़र्व करवा लिए क्योंकि समय पर खजुराहो पहुंचना था और मैं निश्चित समय पर खजुराहो पहुंच गई।

मन में बहुत उत्साह था कि आज बचपन का सपना सच होने जा रहा था। सबसे पहले संगोष्ठी में उपस्थित रहना भी आवश्यक था इसीलिए नियत समय पर संगोष्ठी प्रारंभ हो गई। वहां भारत सरकार के पर्यावरण, वन तथा जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के वैज्ञानिक, डॉ. देवी शंकर सुमन जी और जर्मनी से आए, जर्मन एसोसिएशन ऑफ होम थेरेपी के अध्यक्ष, डॉ. उलरिच वर्क का मेरे द्वारा विधिवत स्वागत किया गया। बहुत ही सुंदर संगोष्ठी और पर्यावरण पर आधारित विषयों के साथ सभी ने अपने शोधपत्र/ रिसर्च पेपर (पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन) प्रस्तुत किए जिनसे बहुत कुछ सीखने, जानने का मौका मिला ।

डॉ. उलरिच ने ''हवन थेरेपी'' पर बहुत सुंदर प्रस्तुतीकरण दिया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार से हवन हमारे पर्यावरण के लिए, हमारे अस्तित्व के लिए और हमारे स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है। यह विडंबना ही कहेंगे कि हम अपनी सभ्यता, संस्कृति को भूलते हुए पश्चिमीकरण की तरफ बढ़ते जा रहे हैं। यह कुछ समय की मांग और कुछ मजबूरी कही जा सकती है। जबकि प्राचीन काल से हमारे ऋषि-मुनियों द्वारा कोई भी शुभ कार्य हवन, यज्ञ इत्यादि से प्रारंभ किया जाता था जिससे न केवल वातावरण शुद्ध होता था बल्कि हर तरफ एक आध्यात्मिक, सात्विक ऊर्जा का संचार होता था जो हमारे मन मस्तिष्क तथा विचारों को भी सात्विकता प्रदान करता था। आज जब हमारे चारों ओर प्रदूषण का बोलबाला है तो इस तरह का कार्य बहुत सही

दिशा में काम करेगा। कुल मिलाकर संगोष्ठी का अनुभव बहुत ही अच्छा और स्मरणीय रहा। पर मेरे मन में तो खजुराहो घूम रहा था। इसके पश्चात ही, मैं निकल गई अपनी खजुराहो की यात्रा पर और एक टैक्सी किराए पर ले ली ताकि कम समय में अपनी यात्रा पूरी कर सकूं।

खजुराहो के मंदिर अपने आप में अपनी ही एक मिसाल हैं। खजुराहो के मंदिरों को चंदेल वंश के राजाओं ने बनवाया था। कहते हैं कि शुरू में यहां 85 मंदिर थे, लेकिन उनमें से सिर्फ़ 20 ही बचे हैं। खजुराहो के मंदिरों की बाहरी दीवारों की कामुक मूर्तियां विश्वप्रसिद्ध हैं। यह स्थान यूनेस्को की सूची में ''विश्व विरासत स्थल'' के रूप में सूचीबद्ध है। प्रतिवर्ष हजारों विदेशी पर्यटक इन्हें देखने आते हैं। यहां केवल पर्यटक और तीर्थयात्री ही नहीं, इसकी अद्भुत आकर्षक वस्तुकला के बारे में और जानने के लिए शोधकर्ताओं का भी बहुत आगमन होता है। सभी मंदिरों के बारे में एक साथ बताने की बजाय मैं एक एक मंदिर की विशेषता और उसके बारे में कुछ स्मृतियां आपके साथ बांटना चाहती हूं।

खजुराहो के मंदिर अपने आप में अद्वितीय हैं। यहां हर पत्थर पर जीवन दिखाई देता है। प्रत्येक मंदिर अपने आप में भव्यता का सबसे बड़ा नमूना कहा जा सकता है। यहां की स्थापत्य कला, शिल्प कला देखते ही बनती है। प्रत्येक मंदिर के द्वार पर अर्ध चंद्र या सूर्य के चित्र बने हुए हैं जिसके दोनों ओर शंख दिखाई देते हैं। सभी मंदिर अपने आप में भव्यता लिए हुए हैं जिनका अलग अलग महत्व है। यहां पर सभी मंदिर सूर्योदय पर खुलते हैं और सूर्यास्त पर बंद हो जाते हैं। यही व्यवस्था-तंत्र बनाया हुआ है जिसका यहां पर बहुत ही सख्ती से पालन किया जाता है।

एक मंदिर में रात को 'लाइट एंड साउंड शो' किया जाता है जिसकी टिकट ढाई सौ रुपए रखी गई है। यह लगभग सवा घंटे का शो होता है जिसमें मंदिरों के बारे में बहुत विस्तार से बताया जाता है साथ में उनके इतिहास तथा इन मंदिरों के निर्माण के पीछे जो कथाएं किवदंतियां हैं उनके बारे में विस्तार से सूचना दी जाती है।

खजुराहो के इन सभी मंदिरों में जीवन के सभी पड़ावों पर प्रकाश डाला गया है। मंदिर में जाने से पहले वहां पर अप्सराओं की मूर्तियां है जो नारी सौंदर्य को उजागर करती हैं। यह इस बात का प्रतीक है कि हमें जीवन में इस तरह के अवसर मिलते रहेंगे जब विषय वासनाएं हमें अपनी ओर आकृष्ट करती हैं। हमें फिर भी स्वयं पर संयम रखते हुए अपना कर्म करते रहना है। यह अप्सराएं विभिन्न मुद्राओं में दिखाई देती हैं जिनमें दैनिक जीवन से संबंधित कार्यकलाप भी सम्मिलित हैं। इसके बाद गृहस्थ धर्म, प्रेम, समर्पण भाव भी दिखाया गया है।

अभी तक हम लोग यह सोचते थे कि खजुराहो के मंदिर केवल स्त्री पुरुष के मिलन, कामशास्त्र की गाथाओं का वर्णन करते हैं। वहां पर अंतरंग चित्र अधिक दिखाई देते हैं। प्रेम

संबंधों को बहुत सूक्ष्मता से दिखाया गया है। परंतु इनके पीछे जो इतिहास है और जो भावनाएं हैं वह अलग है। यहां पर प्रेम प्रदर्शन के साथ इन मूर्तियों के चेहरों के भावों पर कहीं भी वासना या उत्तेजना नहीं दिखाई देती है। उनके चेहरों पर एक दिव्यता, एक समर्पण, एक संतुष्टि, एक तेज दिखाई देता है जो गृहस्थ धर्म के स्तंभ माने गए हैं। यही प्रेम संबंध, समर्पण सृष्टि चक्र का आधार है। यहीं से एक औरत मां बनने का सौभाग्य प्राप्त करती है और मां बनना पूर्णता को प्राप्त करना है। प्रसव पीड़ा का आनंद और उसके बाद का फल क्या होता है इसके बारे में शब्दों में बता पाना संभव नहीं है। ईश्वर की प्राप्ति का हेतु हमारा शरीर और मन ही है। हम अपने शरीर, अपने मन के द्वारा संतुष्टि को प्राप्त करने के बाद ईश्वर की ओर अधिक दृढ़ता पूर्वक कदम बढ़ाते हैं। तृप्ति भी हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है। शरीर और आत्मा तृप्त होने के बाद हम एक दूसरे पायदान पर चलते हैं जहां पर हमें दिव्यता, भव्यता और स्वार्गिक आनंद की प्राप्ति हो सकती है क्योंकि इन सब के लिए हमारे चरित्र में बहुत सी चीजों की आवश्यकता है।

दुलादेव मंदिर :

इन सारी रचनाओं के बीच एक ऐसी संरचना भी शामिल है जो यहां के अन्य मंदिरों की तुलना में उतनी प्रसिद्ध नहीं है, वह है दुलादेव मंदिर। यह मूलतः शिव मंदिर है। यहां पर एक

शिवलिंग है जिसमें 108 छोटे-छोटे शिवलिंग बने हुए हैं। यहां की विशेषता है कि केवल शिवरात्रि पर ही शिवलिंग की पूजा - अर्चना की जाती है। दूसरे शब्दों में केवल शिवरात्रि पर ही इसके कपाट खोले जाते हैं। कहा जाता है यहां पर सुहागिनें अपने पति की लंबी आयु के लिए आशीर्वाद मांगती हैं। इस मंदिर का नाम दुल्हादेव मंदिर इसलिए पड़ा है कि एक बार एक बारात जा रही थी तो दूल्हे की तबीयत अचानक से खराब हो गई और वह परलोक सिधार गया तो इसी मंदिर

में उसकी पत्नी ने आकर पूजा- अर्चना की तो उसे पुनः जीवनदान मिल गया। इसलिए इस मंदिर का नाम दुल्हादेव मंदिर है।

कुल मिलाकर आज मेरा भ्रम भी दूर हो गया कि खजुराहो के मंदिर केवल प्रेम, संबंधों पर ही आधारित नहीं है बल्कि यहां पर बहुत कुछ देखने, बहुत कुछ सीखने को भी मिलता है।

कुछ इतिहासकार इसे कुंवरनाथ मंदिर भी कहते हैं। उसका एक कारण यह भी हो सकता है कि उत्तर मध्य भारत में दूल्हे (दामाद) को आदर से कुंवरजी भी कहा जाता है।

इसका निर्माणकाल लगभग 1000 ई. है। प्रसिद्ध वास्तुकार सर जॉब चॉरनोक के मतानुसार दुलादेव

मंदिर 'नोरनधारा' प्रासाद प्रकृति का मंदिर है, जिसका अर्थ है कि यह ऐसा मंदिर जिसमें कोई चल पथ नहीं है। दुलादेव मंदिर का निर्माण 'नागर' वास्तुशैली का उपयोग करके किया गया था। सुंदर प्रतिमाओं से सुसज्जित, इस मंदिर में गंगा की चतुर्भुज प्रतिमा अत्यंत ही सुंदर ढ़ंग से अंकित की गई है। यह प्रतिमा इतनी आकर्षक है कि एक बार आपको लगता है कि गंगा जी आकाश में उड़ने का प्रयास कर रही है। मंदिर के भीतरी बाहरी भाग में अनेक प्रतिमाएं अंकित की गई है, जिनकी भावभंगिमाएं सौंदर्यमयी तथा दर्शनीय हैं।

नारियों, अप्सराओं एवं मिथुन की मूर्तियां इस तरह अंकित की गई है ऐसे लगता है जैसे कि सब अपने अस्तित्व के लिए सजग है।

मंतेश्वर महादेव मंदिर:

बहुत ही शांत तथा स्वच्छ निर्मल वातावरण, अविस्मरणीय अनुभव प्रस्तुत चित्र मंतेश्वर महादेव मंदिर का है। यहां पर प्रात:काल के समय भक्तजन पूजा करने आते हैं जैसा कि मैंने

पहले भी कहा है कि खजुराहो में मंदिर सूर्योदय के समय खुलते हैं और सूर्यास्त पर बंद हो जाते हैं। प्रस्तुत मंदिर में लगभग 18 फुट लंबा शिवलिंग एक बहुत बड़े चबूतरे पर स्थित है।

मैंने अभी तक कि अपने जीवन में इतना बड़ा शिवलिंग नहीं देखा है। अद्भुत, अद्वितीय, आकर्षक भगवान शिव का प्रतीक अनंतता और विशालता लिए हुए हैं जिसे देख कर आत्मिक शांति, एक सात्विक ऊर्जा का संचार हुआ। वहां पर पंडित जी ने बताया कि यह शिवलिंग कुल 18 फुट का है जिसमें 9 फुट ऊपर और 9 फुट नीचे है।

कहते हैं कि चंदेल वंश के राजाओं के द्वारा शिवलिंग के नीचे एक बहुमूल्य मणि दबाई गई थी। शायद उस मणि का ही प्रभाव है कि अभी तक यह शिवलिंग कहीं से खंडित नहीं नजर आता। बहुत ही सुंदर नजारा। मैं अपने आप को भाग्यशाली समझती हूं कि मैं यहां पहुंचकर इस शिवलिंग के दर्शन कर पाई।

खजुराहो के जैन मंदिर के कुछ चित्र यहां पर शाकाहार परोपकार, पर्यावरण संरक्षण इत्यादि के बारे में कितने ही सुंदर संदेश देते हैं। इसी के साथ यहां पर पौराणिक भारतीय सभ्यता के बारे में बहुत सुंदर वर्णित चित्र भी प्रस्तुत करते हैं। जैन धर्म के मंदिर में ऐसे बहुत से पुराने चित्र दिखाई दिते हैं, जिन पर शोध की बहुत सी संभावनाएं हैं। कितना विशाल है हमारा भारत देश और उसका धर्म, उसकी संस्कृति, उसकी विरासत। गर्व है हमें हमारे भारतीय होने पर। जय मां भारती।

कंदरिया महादेव :

खजुराहो के मंदिरों की विशाल श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण 'कंदरिया महादेव' मंदिर की बात करते हैं। सभी मंदिरों की तरह यह मंदिर भी बहुत भव्य तथा मनमोहक है। यहां की शांति और सौम्यता तो देखते ही बनती है। कंदरिया महादेव मंदिर पश्चिमी समूह के मंदिरों में सबसे बड़ा, सबसे ऊंचा और अलंकृत मंदिर है।

अपनी भव्यता और संगीतमयता के कारण प्रसिद्ध, इस विशाल मंदिर का निर्माण चन्देल राजा विद्याधर ने महमूद गजनवी पर अपनी विजय के उपलक्ष्य में कराया था। इसका निर्माण लगभग 1050 ईसवीं में किया गया था। कुछ विद्वानों के अनुसार, तांत्रिक समुदाय को प्रसन्न करने के लिए इसका निर्माण किया गया था।

कंदरिया महादेव मंदिर लगभग 107 फुट ऊंचा है। मकर तोरण इसकी मुख्य विशेषता है।

मंदिर के संगमरमरी शिवलिंगम में अत्यधिक ऊर्जावान मिथुन हैं। अलेक्जेंडर कनिंघम के अनुसार यहां सर्वाधिक मिथुनों की आकृतियां हैं। उन्होंने मंदिर के बाहर 646 आकृतियां और भीतर 246 आकृतियों की गणना की थीं।

मंडप के प्रवेश द्वार पर अर्धचंद्र तथा शंख के चित्र बनाए गए हैं। उसके बाद अंदर रोशनी का प्रबंध इस प्रकार से किया गया है कि आर पार आने वाली रोशनी का केंद्र सामने पड़ी मूर्ति पर बिल्कुल स्पष्ट रूप से दिखाई दे। यहां जो चित्र दिखाई देते हैं उन पर भी किसी तरह के कृत्रिम प्रकाश का कोई प्रबंध नहीं है क्योंकि जैसा कि मैंने पहले भी कहा है कि यहां मंदिर सूर्य उदय पर खुलते हैं और सूर्यास्त पर बंद हो जाते हैं तो अधिकतर कृत्रिम रोशनी की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। मंदिरों के अंदर भी वास्तु कुछ इस प्रकार से है कि रोशनी को मुख्य मंदिर की मूर्ति तक केंद्रित किया गया है ताकि बहुत स्पष्ट और सुंदर तरीके से भगवान के दर्शन हो सके। **यह जो चित्र लिए गए हैं मोबाइल के कैमरे से लिए गए हैं और देखिए कितने स्पष्ट, सुंदर हैं।**

इसी के साथ मंदिर के मंडप में जाने से पहले दाएं तरफ एक लिपि अंकित की गई है जिसमें प्रथम "ओम नमः शिवाय" बिल्कुल स्पष्ट दिखाई दे रहा है उसके बाद शायद हम पढ़

पाने में संभव नहीं हो पाए। परंतु इससे स्पष्ट हो जाता है कि उस समय भी हमारा विज्ञान इतना उन्नत था कि लिपियां आसानी से पढ़ी और समझी जा रही थीं तभी तो वह पत्थरों पर उकेरी गई। यहां की शिल्प कला बहुत ही अद्‌वितीय है। पत्थरों पर अंकित मूर्तियां अपने आप में इतनी सौम्य और सुंदर है कि उनको शब्दों में अभिव्यक्त कर पाना शायद मेरे बस में नहीं है।

देवी जगदम्बा मंदिर :

कंदरिया महादेव मंदिर के चबूतरे के उत्तर में जगदम्बा देवी का मंदिर है। जगदम्बा देवी का मंदिर पहले भगवान विष्णु को समर्पित था और इसका निर्माण 1000 से 1025 ईसवीं के बीच किया गया था। सैकड़ों वर्षों पश्चात यहां छतरपुर के महाराजा ने देवी पार्वती की प्रतिमा स्थापित करवाई थी इसी कारण इसे देवी जगदम्बा मंदिर कहते हैं। यहां पर उत्कीर्ण मैथुन मूर्तियों में भावों की गहरी संवेदनशीलता शिल्प की विशेषता है। यह मंदिर शार्दूलों के काल्पनिक चित्रण के लिए प्रसिद्‌ध है। शार्दूल वह पौराणिक पशु था जिसका शरीर शेर का और सिर तोते, हाथी या वराह का होता था। कुल मिलाकर इस मंदिर की यात्रा अविस्मरणीय रही।

विश्वनाथ मंदिर:

खजुराहो के मंदिर की श्रृंखला में महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय मंदिर है विश्वनाथ मंदिर। इसमें भगवान विश्वनाथ शिवलिंग रूप में विराजमान है। प्रत्येक मंडप में बहुत सुंदर चित्रकारी और शिल्प कला, नक्काशी देखने को मिलती है। नंदी मंडप में जब मैंने देखा तो नंदी जी की इसने विशाल प्रतिमा देखी कि मन गदगद हो गया। बहुत सुंदर शांत वातावरण ऐसा लगता है जैसे ईश्वर का साक्षात्कार हो गया हो।

यहां के मंदिरों की विशेषता यह है कि एक ही पत्थर के बनाए गए हैं और पता नहीं उन में कौन सी धातु मिलाई गई है कि अभी तक इतने मजबूत और चिकने है कि इसके दर्शनार्थी दांतो तले उंगली दबा लेते हैं। यहां की भव्य सुंदरता देखते ही बनती है।

मंदिर के कक्ष में जहां विश्वनाथ जी, की शिवलिंग की स्थापना है वहां पर रोशनी का इस तरह से प्रबंध किया गया है कि बिना किसी रोशनी के अंदर आते ही शिवलिंग के दर्शन बहुत ही सुंदर प्रकार से हो जाते हैं

क्योंकि दोनों तरफ की रोशनी शिवलिंग पर दिखाई देती है। हर प्रकार के मंदिर के दरवाजे के बाहर अर्धचंद्र या सूर्य का बिंब पूर्ण गोला बनाया गया है।

उसके दोनों तरफ शंख हैं। विश्वनाथ मंदिर के मंडप के बाहर एक लिपि का चित्र भी दिखाई दिया जहां पर ओम नमः शिवाय बिल्कुल साफ दिखाई दे रहा है। यानी तब तक हम यह लिपियां और भाषा बिल्कुल सही से पढ़ना और लिखना सीख गए थे। यह एक अनुसंधान का विषय है । कुल मिलाकर इस मंदिर की यात्रा भी अविस्मरणीय रही।

खजुराहो में जो बात सबसे अच्छी लगी वह यह कि यहां पर पुजारी के दर्शन बहुत ही कम हुए और कहीं भी किसी ने दान- दक्षिणा के लिए मजबूर नहीं किया जैसा कि आजकल तीर्थों पर होता है कि आप को दान- दक्षिणा के लिए मजबूर किया जाता है। यदि हम ऐसा नहीं करते तो तरह-तरह की बातें बनाई जाती हैं और हमारी श्रद्धा और आस्था पर प्रश्न चिन्ह लगाया जाता है। मैं यह पूछना चाहती हूं कि यदि जो लोग पैसा नहीं देते या नहीं दे सकते हैं क्या उनकी ईश्वर में आस्था नहीं है? वे लोग इतनी दूर यदि इतना सब कुछ खर्च करके,अपने पीछे से हर तरह से व्यवस्था करके आए हैं तो क्या बिना आस्था, बिना श्रद्धा के आए हैं? और यदि हम 50 -100 रुपए चढ़ा दें तो क्या वह श्रद्धा जाग जाएगी ? इस तरह के कार्यकलापों से मन दु:खी हो जाता है। पर यहां ऐसा कुछ नहीं था जिसे देख कर मन को सुकून मिला।

बस इसके बाद वापसी का समय हो गया और वैसे भी खजुराहो के सभी मंदिरों के दर्शन ईश्वर की असीम कृपा से मैंने कर ही लिए थे। यह एक ऐसा वृतांत है जो मन में बहुत शांति, श्रद्धा और एक नई चेतना लेकर आया था। ईश्वर का बहुत-बहुत धन्यवाद इतने पवित्र स्थल के दर्शन मैं कर पाई। बहुत ही अविस्मरणीय यात्रा। इस यात्रा के लिए मैं उस असीम शक्ति का हृदय से धन्यवाद देती हूं। इसी के साथ-साथ मन में बहुत कुछ और भी जागृत हो गया है कि काश कभी तमिलनाडु के मदुरै, तिरुचिरापल्ली के मंदिर देखने का भी सौभाग्य प्राप्त हो ? देखते

हैं यह इच्छा कब पूरी हो पाती है, सब कुछ प्रभु के हाथ है। जब प्रभु इच्छा....जितना मिला है उसमें भी संतोष करना चाहिए। बस इससे अधिक और क्या लिखना है इति शुभमस्तु।

कैसे पहुंचे :
वायु मार्ग : खजुराहो के लिए दिल्ली, वाराणसी और आगरा से सीधी फ्लाइट्स हैं। खजुराहो एयरपोर्ट शहर से लगभग चार कि.मी. दूर है।
रेल मार्ग : दिल्ली और वाराणसी से खजुराहो के लिए रेल सेवा उपलब्ध है। पर्यटकों के लिए झांसी भी सुविधाजनक रेलवे स्टेशन है। रेलवे स्टेशन से टैक्सी या बसों की सेवाएं है।

कहां ठहरें :
एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर का गंतव्य होने के कारण खजुराहो में आवास की अनेक सुविधाएं उपलब्ध हैं। यहां देश के नामी पांच सितारा होटल्स, स्टार श्रेणी के रिसार्ट, बजट होटल्स मौजूद हैं।

----

* **सम्प्रति : अकादमिक काउंसलर, IGNOU,विशेष कार्य अधिकारी (OSD) नैशनल ओपन स्कूल।, विशेषज्ञ, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, भारत सरकार, नई दिल्ली**
M 9811702001 E-mail drvidushisharma9300@gmail.com

पर्यटन पर एक नई पहल

जैसलमेर से निकली आशा की किरण

-डा. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

कोरोना से प्रभावित पर्यटन क्षेत्र अभी तक उभरने की स्थिति में नहीं है। इसका एक सबसे बड़ा कारण विदेशी पर्यटकों का आवागमन शुरु नहीं होना है तो दूसरी और यूरोपीय देशों सहित दुनिया के अनेक हिस्सों में कोरोना का दूसरा दौर आना भी है। ऐसे में पर्यटन उद्योग को बचाना एक बड़ी चुनौती हो गया है। सरकार द्वारा पर्यटन उद्योग को पटरी पर लाने के लिए घरेलू या स्थानीय पर्यटन को बढ़ावा देने के योजनाबद्ध प्रयास शुरु किए जा रहे हैं।

स्थानीय पर्यटन को बचाने हेतु जैसलमेर की पहल समूची दुनिया में इस मायने में अनूठी मानी जा सकती है कि यहां के पर्यटन उद्योग को बचाने के लिए स्थानीय उद्यमी आगे आए हैं। दुनिया के देशों में कोरोना के दौर में शायद यह एक मात्र उदाहरण होगा कि पर्यटकों को लाने के लिए पर्यटन उद्योग से जुड़े लोग बिना किसी लाभ-हानि की परवाह किए आगे आए हैं।

जैसलमेर में इन दिनों मरु उत्सव चल रहा है। घाटे के चलते पिछले दिनों यहां पर उड़ान भरने वाली स्पाइस जेट कंपनी ने उड़ान बंद करने का निर्णय किया तो स्थानीय प्रशासन और स्थानीय उद्यमी आगे आए और एक मंच पर बैठकर इसका हल निकालने के लिए सकारात्मक सोच विचार किया गया। जैसलमेर के उद्यमियों ने कम यात्री होने के कारण उड़ानों से होने वाली संभावित हानि की पूर्ति करने का विश्वास दिलाया और इस आशय का समझौता कर स्वर्णनगरी जैसलमेर के पर्यटन को बचाने की अनूठी पहल की गई है।

दरअसल कोरोना के बाद से देश के अन्य स्थानों की तरह जैसलमेर के लिए अभी तक रेल सेवाएं शुरु नहीं हो सकी हैं। वहीं घाटे के चलते स्पाइस जेट ने भी पर्यटकों को लाने के लिए जैसलमेर की उड़ान चालू रखने में असमर्थता व्यक्त कर दी। कंपनी का कहना रहा है कि पर्याप्त यात्री नहीं होने से स्पाइस जेट की फ्लाइट जैसलमेर लाना कंपनी के लिए एक बड़े घाटे का सौदा हो गया है। ऐसे में जैसलमेर के पर्यटन उद्योग को बचाने के लिए जिले के युवा कलक्टर आशीष मोदी के सतत प्रयासों से जैसलमेर के पर्यटन कारोबारियों और स्पाइस जेट के बीच एक करार हुआ है कि स्पाइस जेट कंपनी को होने वाले नुकसान की भरपाई जैसलमेर के पर्यटन कारोबारी करेंगे।

इस करार के बाद 12 फरवरी, 2021 को दिल्ली से 57 यात्रियों को लेकर स्पाइस जेट की फ्लाइट जैसलमेर पहुंची तो जैसलमेर में खुशी की लहर सी फैल गई। इसके साथ ही आने वाले पर्यटकों का परंपरागत तरीके से जोरदार स्वागत किया गया।

सूर्यास्त सफारी

मरुस्थल में टेंट सिटी

वैसे भी देखा जाए तो जैसलमेर ही नहीं अपितु दुनिया के सभी देशों में कोरोना के चलते पर्यटन क्षेत्र को बहुत बड़ा झटका लगा है। सरकार द्वारा पिछले दिनों से देशी पर्यटन को अवश्य प्रोत्साहित किया जा रहा है और इससे थोड़ी आशा की किरण भी देखी जाने लगी है।

पर्यटन आज बड़ा उद्योग हो गया है। हजारों लोग इस उद्योग से जुड़कर अपना जीवन यापन कर रहे हैं। पर्यटन से स्थानीय नागरिकों यानी की पर्यटन स्थल के आसपास रहने वाले लोगों को तो रोजगार मिलता ही है इसके साथ ही होटल उद्योग, पर्यटक परिवहन संचालकों, टैक्सी चालकों तथा साथ ही स्थानीय हस्तशिल्प कलाकारों सहित ना जाने कितने ही लोगों को रोजगार मिलता है। कोरोना के कारण सामान्य स्थिति नहीं होने और विदेशी पर्यटकों की आवाजाही नहीं के बराबर होने के कारण भारत सरकार और राजस्थारन राज्य पर्यटन द्वारा घरेलू यानि देशी पर्यटकों को ही प्रोत्साहित किया जा रहा है।

जहां तक जैसलमेर का प्रश्न है वहां इस समय पर्यटन सीजन है। ऐसे में यदि बाहर से आने वाली हवाई उड़ान के विकल्प पर विराम लग जाता है तो इस साल का पूरा पर्यटन सीजन बेकार हो जाने की स्थिति हो सकती है। जहां तक स्पाइस जेट का कहना है दिल्ली से एक फ्लाइट के संचालन पर लगभग छः लाख रुपए की लागत आती है। करार के बाद जो पहली फलाइट जैसलमेर पहुंची है उसमें भी केवल 57 पर्यटक आए, जबकि 90 सीटें होने से 33 सीटें खाली रही थी। करार के अनुसार तीन दिन दिल्ली से फ्लाइट आने के साथ ही तीन दिन अहमदाबाद से

फ्लाइट आएगी। पाक्षिक आधार पर लाभ हानि का हिसाब किया जाएगा और यदि नुकसान रहता है तो उसे जैसलमेर के पर्यटन क्षेत्र के कारोबार से जुड़े कारोबारियों द्वारा वहन किया जाएगा।

जैसलमेर से घंटे भर की दूरी पर रहस्मयी कुलधरा गांव

जहां तक जैसलमेर के जिला प्रशासन और पर्यटन कारोबारियों की पहल का प्रश्न है उसकी जितनी सराहना की जाए वो इस मायने में कम है कि उन्होंने पर्यटन मानचित्र पर जैसलमेर को इन हालातों में भी बनाए रखने की पहल की है।

जैसलमेर का किला

केन्द्र सरकार को भी पर्यटन उद्योग को राहत देने के प्रयास करने ही चाहिए। लगभग एक साल से बंद पर्यटन उद्योग को सरकारी राहत की दरकार है। इसके लिए सरकार को आगे आकर पहल करनी चाहिए और पर्यटन स्थलों तक लोगों की पहुंच को सहज बनाए रखने और इससे होने वाली हानि को 'सब्सिडी' के रुप में संबंधित हवाई सेवा उपलब्ध कराने वाले संस्थान को देने के लिए आगे आना चाहिए। इसी तरह से होटल उद्योग व अन्य उद्योगों को राहत पैकेज देने की पहल की जानी चाहिए ताकि इस क्षेत्र से जुड़े लोगों को राहत मिल सकें।

वैसे भी कोरोना के कारण लंबे समय तक प्रभावित रहने वाले उद्योगों में से पर्यटन और इससे जुड़ी गतिविधियां ही प्रमुख है। इस उद्योग और इससे जुड़ी गतिविधियों को पटरी पर लाने में अभी समय लगेगा, ऐसे में सरकारी सहयोग व पैकेज की दरकार इस उद्योग को बचाए रखने के लिए जरुरी हो जाती है। पर्यटन को बड़े कारोबारियों तक ही जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए बल्कि हमें इसे समग्र रुप में देखना होगा। पर्यटक आते हैं तो स्थानीय स्तर पर वाहन चालकों, होटलों, पेंइंग गेस्ट के रुप में रहने वाले पर्यटकों को सुविधाएं उपलब्ध कराने वालों, खासतौर से गाइड के रुप में सेवाएं देने वालें स्थानीय युवाओं, स्थानीय कलाकारों और शिल्पियों के उत्पादों को बाजार मिलता है। इससे शिल्प की विश्वव्यापी पहचान बनती है। ऐसे में इसे केवल घूमने-घामने तक ही सीमित नहीं मान कर, इसे समग्र रुप से समझना होगा कि पर्यटन से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रुप से कितने लोगों को रोजगार मिलता है। अभी तक प्राय: असंगठित क्षेत्र होने के कारण इसके सही सही आंकड़े मिलने में भी कठिनाई होती है। इस उद्योग से जुड़े लोगों को भी ऐसी ही कोई राहत दिए जाने की आवश्यकता लम्बे समय से महसूस की जा रही है ताकि इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ाए जा सकें। सबसे बड़ी बात यह है कि इस असंगठित क्षेत्र के लोगों की रोजी रोटी इसी रोजगार पर निर्भर होती है। इसलिए यह जरुरी हो जाता है कि सरकार इस उद्योग के लिए कोई ना कोई राहत पैकेज दे।

ऐसे में जैसलमेर एक उदाहरण के रुप में उभरा है पर इसी तरह के प्रयास पर्यटन के अन्य क्षेत्रों में भी करने होंगे। सरकार को आगे बढ़कर इस तरह के क्षेत्रों को चिन्हित करते हुए आसानी से पहुंच बनानी होगी। सरकार की छोटी सी पहल इस उद्योग को नया जीवन दे सकेगी।

***संप्रति : राजस्थान सरकार में जनसंपर्क अधिकारी। दूरदर्शन तथा आकाशवाणी के कार्यक्रमों में प्रतिभागिता, प्रमुख समाचार पत्रों में निरंतर लेखन।**

ओडिशा पर्यटन के संदर्भ में एक अवलोकन अध्ययन

स्वर्ण त्रिभुज के अज्ञात पर्यटन स्थल

- अबिनाश दाश

ओडिशा को "मंदिरों की भूमि" के रूप में जाना जाता है। यहां के श्री जगन्नाथ मंदिर, सूर्य मंदिर, लिंगराज मंदिर, राजरानी मंदिर और रामचंडी जैसे मंदिर पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। पुरी के समुद्र तट को विश्व के श्रेष्ठ समुद्र तटों में स्थान प्राप्त है। यहां का पिपली गांव अपनी कला और शिल्प के लिए प्रसिद्ध है। एक ओर भुवनेश्वर के मुक्तेश्वर मंदिर, उत्तरेश्वर मंदिर आदि शामिल हैं तो दूसरी ओर पुरी और कोणार्क चौसठ योगिनी मंदिर जैसी जगहें हैं, जो अपनी सुंदरता और इतिहास के लिए जाने जाते हैं। देश के बहुत से अन्य राज्यों की तरह ओडिशा की अर्थव्यवस्था में पर्यटन का मुख्य योगदान (ओडिशा के सकल घरेलू उत्पाद का 13%) है । फिर भी, ओडिशा के कई सुंदर गंतव्य अभी भी पर्यटकों की दृष्टि से ओझल हैं और अभी भी ऐसे कई स्थान हैं, जिन्हें पर्यटन की दृष्टि से प्रचारित और विकसित नहीं किया जा सका है । इसलिए वह पर्यटकों में अभी तक लोकप्रिय नहीं हो पाए हैं।

ओडिशा को "स्वर्ण त्रिभुज पर्यटन" स्थल के रूप में भी जाना जाता है। यह ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर, कोणार्क और पुरी को कवर करता है। इस लेख का मुख्य उद्देश्य ओडिशा के स्वर्ण त्रिभुज के भीतर स्थित अनेक पर्यटन की आकर्षक जगहों का पता लगाना और उन्हें सूचीबद्ध करना है। अपनी एक अलग वास्तुशैली, धार्मिक और सांस्कृतिक अहमियत के कारण इनमें एक प्रसिद्ध पर्यटक गंतव्य बनने की क्षमता है। यहां पर्यटकों था तीर्थयात्रियों का आगमन तो होता है फिर भी, अधितर पर्यटक इन स्थानों के बारे में नहीं जानते?

वर्ष 2013 -14 के दौरान पर्यटन विभाग द्वारा ओडिशा का एक 'पर्यटक प्रोफाइल सर्वेक्षण' किया गया था। । उस समय प्रवास की औसत अवधि विदेशी पर्यटकों के मामले में लगभग 11.0 दिन और घरेलू पर्यटक के मामले तीन से सात दिन थी। वर्ष 2018-19 में, पर्यटन विभाग द्वारा एक और 'पर्यटक प्रोफाइल सर्वेक्षण' किया गया, ताकि पता लगाया जा सके कि पिछले

प्रोफ़ाइल में कोई परिवर्तन हुआ है या नहीं? यह पाया गया कि एक विदेशी पर्यटक के मामले में प्रवास की औसत अवधि अधिकतम लगभग नौ दिन और घरेलू पर्यटक के मामले में लगभग तीन से चार दिन रही है। इसी तरह ओडिशा में प्रवास के दौरान एक **विदेशी पर्यटक द्वारा 4,147/- रुपए जबकि एक घरेलू पर्यटक द्वारा 2,760/- रुपये प्रति** व्यक्ति **औसत** व्यय किया गया था। ओडिशा के पर्यटन विभाग द्वारा 31 मार्च-2019 तक निम्नलिखित पर्यटन गंतव्यों की पहचान की गई है ।

1. **खुर्दा (19)** अत्री, बानापुर, बारूनेई (खुर्दा), भुवनेश्वर, भुसांदपुर, चिलिका (बरकुल), धौली, गडामनट्री, हीरापुर, जयदेव केंदुली, खंडगिरि - उदयगिरि, कोसलसुनीति खुरणिपीठ, नंदनकानन, रामेश्वर देउला, मुंडेश्वर, रामेश्वर (मौसीमां), श्री अनंत पुरुषोत्तम देव (जगुलाई पटना), संकटमोचन महावीर मंदिर और शिस्सु अनंतापीठा (बालिपत्तन)

2. **पुरी (21)** अष्टांग, बालीघाई, बलिहारचंडी, बराला (बालकुंवरपीठा), बिश्वनाथ हिल, बेलेश्वर, ब्रह्मगिरि, चौरासी वाराही, चिल्का (सतपाड़ा), जहांपिरा, काकटपुर, कोणार्क, कुरुमा, मणिकापट्टन, पिपली, पुरी, रघुराजपुर, रघुपुर, बालिगांव (भक्त दासिया स्मृतिपीठ) और मां मंगला मंदिर (मातृशक्तिपीठ)

ओडिशा देश के उन राज्यों में से एक है जो अपनी समृद्ध विरासत और जीवंत और रंगीन सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। इतिहास के नियत समय में कई शासकों द्वारा इस पर आक्रमण भी किए गए। आज ओडिशा क्षेत्रफल के हिसाब से आठवां बड़ा और जनसंख्या की दृष्टि से 11वां सबसे बड़ा राज्य है। ओडिशा को मुख्यत: भव्य कोणार्क मंदिर का पर्यायवाची कहा जाता है, जो देश का गौरव है। ओडिशा का स्वर्ण त्रिभुज कई ऐसे सुंदर आकर्षणों से भरा पड़ा है, जिससे आज भी बहुत से पर्यटक ही नहीं हमारे देश के लोग भी अंजान हैं।

1. खुर्दा यानि भुबनेश्वर के आसपास

1.1 काईपदर दरगाह : खुर्दा से लगभग 14 कि.मी. की दूर काईपदर की आबादी 4,000 से कुछ अधिक है। यह जगह बुखारी बाबा की दरगाह के लिए प्रसिद्ध है, जो हिंदुओं और मुसलमानों के लिए अद्वितीय पूजा स्थल है। पीर का स्थान एक विस्तृत संरचना है, जो आसपास के कमरों और एक बड़े आंगन से घिरा हुआ है। परिसर में एक बड़ी दरगाह है। यह वह स्थान है जहां हिंदू और मुस्लिम दोनों एक साथ आराधना करते हैं। बोखारी बाबा, पीर को त्रिनाथ सिकंदन द्वारा लिखित एक पुस्तक में कैफ़दार के बुखारी बाबा नामक संबोधित किया गया था। यहां की पूजा

पद्धति अन्य धर्मस्थलों से अलग है। प्रति दिन भोर में, मुख्य द्वार खोलने से पहले खादिम नगाड़ा बजाता है। नगाड़ा बजाते – बजाते ही धर्मस्थल का दरवाजा खोला जाता है और दरगरह या कहें कि मंदिर को साफ किया जाता है। लाईयों की व्यवस्था करते हैं। खादिम घी का दीपक जलाने के बाद चंदन का पेस्ट, गुडिया, फूल और

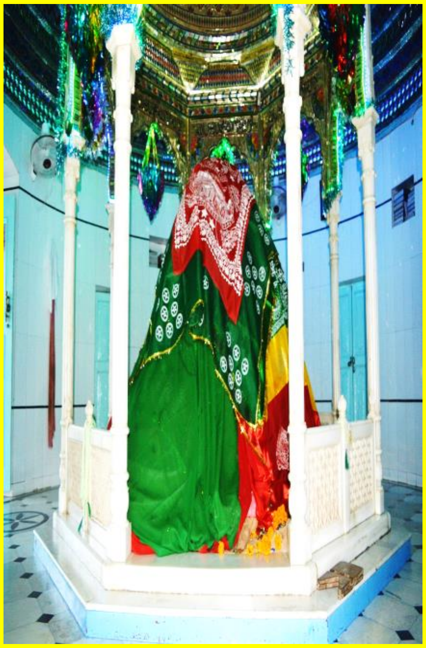

मिठाईयां चढ़ाई जाती हैं।

शाम के समय नगाड़े के साथ ढोल भी बजाया जाता है। मुराद पूरी होने पर बहुत से भक्त ढोल भी चढ़ाते हैं। स्थान रात 9 बजे तक खुला रहता है। गुरुवार को गरीबों और फकीरों को खाना और जरूरत की वस्तुएं दान की जाती है। वार्षिक उर्स, रमज़ान मनाए जाते हैं।

1.2 परशु रामेश्वर मंदिर : भुवनेश्वर शहर में स्थित परशुरामेश्वर मंदिर, सातवीं और आठवीं शताब्दी ईस्वी के बीच सेलोडाभव काल के लिए आरंभिक उत्कल शैली का सबसे अच्छा संरक्षित नमूना माना जाता है। भगवान शिव को समर्पित यह मंदिर, राज्य के सबसे पुराने मौजूदा मंदिरों में से एक है। माना जाता है कि इस मंदिर का निर्माण 950 ईस्वी के दौरान नागर शैली में हुआ था और इसमें 10 वीं शताब्दी से पूर्व की उत्कलशैली के मंदिरों की सभी मुख्य विशेषताएं हैं। परशुरामेश्वर मंदिर में एक विमना, गर्भगृह और एक बाड़ा है, जिसकी छत के ऊपर वक्राकार शिखर है, जिसकी ऊंचाई 40.25 फीट है। यह पहला मंदिर है जिसमें एक अतिरिक्त संरचना है जिसे जगमोहन कहा जाता है, पहले के मंदिरों की तुलना में केवल विमना था। इस मंदिर में शिव के साथ ही सकटा देवताओं की मूर्तियां हैं। भुवनेश्वर के मंदिरों में यह मंदिर पहला है जिसमें सप्त मातृकाओं अर्थात् चामुंडा, वराही, इंद्राणी, वैष्णवी, कौमारी, शिवानी और ब्राहमी के चित्रण हैं

1.3 सिद्धेश्वर मंदिर : सिद्धेश्वर मंदिर 10 वीं शताब्दी का माना गया है और यह मुक्तेश्वर मंदिर के परिसर में स्थित है। इतिहासकारों का कहना है कि भुवनेश्वर में सभी 10 वीं शताब्दी के मंदिरों में हिंदू, बौद्ध और जैन मंदिर वास्तुकला का मिश्रण है। सिद्धेश्वर मंदिर मुक्तेश्वर मंदिर की तुलना में लंबा है और इसकी बाहरी दीवारों पर खूबसूरत नक्काशी की गई है। मंदिर मुक्तेश्वर के रूप में अलंकृत नहीं है, लेकिन जहां तक निर्माण शैली का संबंध है, इसका अपना एक अलग ही आकर्षण है। मंदिर की वास्तुकला शास्त्रीय कलिंग वास्तुकला की पंचरत्न शैली में निर्मित मंदिर का शिखर, लघु बुर्ज की एक पंक्ति द्वारा समूहीकृत किया गया है और शिखर के चारों तरफ चार सिंह स्थापित किए गए हैं ।

1.4 अनंत बासुदेव मंदिर :

अनंत वासुदेव मंदिर भगवान कृष्ण को समर्पित है। अनंत वासुदेव मंदिर 13 वीं शताब्दी ईस्वी में बनाया गया था।

अनंत वासुदेव मंदिर

इस प्रकार पूर्वी गंगा वंश की रानी चंद्रिका को एक नया मंदिर बनाने के लिए प्रेरित किया था ऐसा प्रतीत होता है कि विष्णु की मूल प्रतिमा की पूजा उस स्थान पर की गई थी, जहां अब अनंत वासुदेव मंदिर है । एक पुराना मंदिर रहा होगा जहां यह विष्णु प्रतिमा स्थापित की गई थी। कुछ ग्रंथों में जिक्र किया गया है कि मराठों ने 17 वीं शताब्दी के अंत में महानदी नदी तक अपने साम्राज्य का विस्तार कर लिया था । उन्होंने ही भुवनेश्वर में विष्णु मंदिर का पुनर्निर्माण कराया था। मंदिर के गर्भगृह में मिली मूर्तियों में जगन्नाथ मंदिर, पुरी की छवियों की पूरी संरचना है। मूर्तियां काले ग्रेनाइट पत्थर से बनी हैं। इस मंदिर के आपसपास का शहर चक्रक्षेत्र (गोलाकार जगह) के रूप में है, जबकि पुरी का नाम शंखक्षेत्र (घुमावदार स्थान) है । यहां कृष्ण, बलराम और सुभद्रा की पूर्ण मूर्तियों की पूजा की जाती है ।

इस मंदिर का प्रसाद लिंगराज मंदिर के बाद भुवनेश्वर में दूसरा लोकप्रिय प्रसाद है। प्रत्येक दिन हजारों लोग और पर्यटक आध्यात्मिकता के स्पर्श के साथ इस प्रसाद का आनंद लेते हैं

1.5 मेघेश्वर मंदिर : मेघेश्वर मंदिर भी भगवान शिव को समर्पित है। वास्तुकला की सप्तरथ शैली में निर्मित मंदिर को सुंदर नर्तकियों, जानवरों, पक्षियों और फूलों की नक्काशी से सजाया

गया है। तंकापानी रोड पर पांडव नगर में स्थित, मंदिर परिसर में भास्करेश्वर और ब्रह्मेश्वर के दो और मंदिर हैं, जो समान रूप से अलंकृत हैं। भास्करेश्वर मंदिर संरचनात्मक स्वरूप में राज्य के सभी मंदिरों से अलग है। मंदिर को एक गोलाकार मंच पर खड़ा किया गया है और इसके अंदर नौ फुट ऊंचा शिव लिंग विराजित है। परिसर के एक शिलालेख के अनुसार, मेघेश्वर, उसके पास पानी की टंकी के साथ, भोईं अनंगभीमा (1192-95 ईस्वी) के शासनकाल के दौरान गंगा राजा राजराजा के बहनोई स्वप्नेश्वर ने निर्माण कराया था। परिसर में ब्रह्मेश्वर मंदिर मेघेश्वर मंदिर से मिलता जुलता है जहां तक दीवारों पर की गई नक्काशी का संबंध है। मंदिर की बाहरी दीवारों पर और संरचना के पश्चिम की ओर नर्तकियों और संगीतकारों के चित्रण के साथ ही भगवान शिव और चामुंडा की आकृतियां हैं।

1.6 शिशुपालगढ़ : प्राचीन भारत की सबसे प्रसिद्ध लड़ाइयों में से एक कलिंग युद्ध था, जिसने (262 ईसा पूर्व में) एक महत्वाकांक्षी और मौर्य साम्राज्य के सम्राट अशोक को तलवार फैंक कर दुनिया में बौद्ध धर्म-दर्शन एवं अहिंसा का पक्षधर और शांति समर्थक, पहला राजा बना दिया था । इतिहासकारों का मानना है कि शिशुपालगढ़ में खुदाई में यहां एक विशाल किलेदार शहरी केंद्र के अवशेष मिले हैं जो कलिंग के तत्कालीन प्राचीन साम्राज्य की राजधानी हो सकते हैं। मौर्य से भी पूर्व काल का यह किला शायद सघन नहीं था क्योंकि किले के अंदर ही चरागाह भी था। आक्रमणकारियों से बचाने के लिए इसके चारों तरफ पानी की एक बड़ी खाई बनाई गई थी। शहर की किलेबंदी की दीवारों पर मिट्टी की प्राचीर (दीवारें) थीं जो अभी भी संरक्षित हैं और यहां तक कि सबसे ऊपर ईंट की दीवार भी मौजूद है। आठ प्रवेश द्वारों के किले की दीवारें नौ मीटर ऊंची हैं। खाई पार करने के बाद शहर में प्रवेश होता है । यह द्वार एक समान दूरी पर

रखे प्राचीर के दोनों ओर विस्तृत रूप से ईंट और पत्थर की संरचनाएं थीं। इनमें से, उत्तरी प्रवेश द्वार सबसे महत्वपूर्ण था क्योंकि इसमें सुरक्षा चौकी और वॉच टॉवर थे।

1948 में बी.बी. लाल के नेतृत्व में इस स्थल पर पहली खुदाई की गई थी। उन दिनों में यह स्थान एकदम जंगल में था। 2005 से 2009 तक किए गए उत्खनन के अनुसार एम.एल. स्मिथ और आर. मोहंती ने शहर के शुरुआती अनुसंधान में इसे 555 ईसा पूर्व, और उत्तरी प्राचीर को 510-400 ईसा पूर्व दिनांकित किया था। प्राचीन काल की भूमि को किसी तरह संरक्षित किया गया और आज यह स्थल भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा राष्ट्रीय धरोहर के रूप में संरक्षित है।

यह राजधानी भुवनेश्वर के बाहरी इलाके में है। यह भुवनेश्वर रेलवे स्टेशन से आठ कि.मी. दूर है। लेकिन पर्यटन की दृष्टि से बात करे तो यहां पर्यटक आगमन बहुत कम है।

1.7 बारूनी हिल्स : बारूनी पहाड़ी का प्रमुख आकर्षण देवी बारूनेई है। बारूनी पहाड़ियों की तलहटी में स्थित बारूनेई मंदिर में दो प्रमुख देवियां बारूनेई और करूनेई हैं। दोनों देवियों को शक्ति के रूप में माना जाता है। कई लोग देवी बरूणी को देवी अरूणी के रूप में जानते हैं।

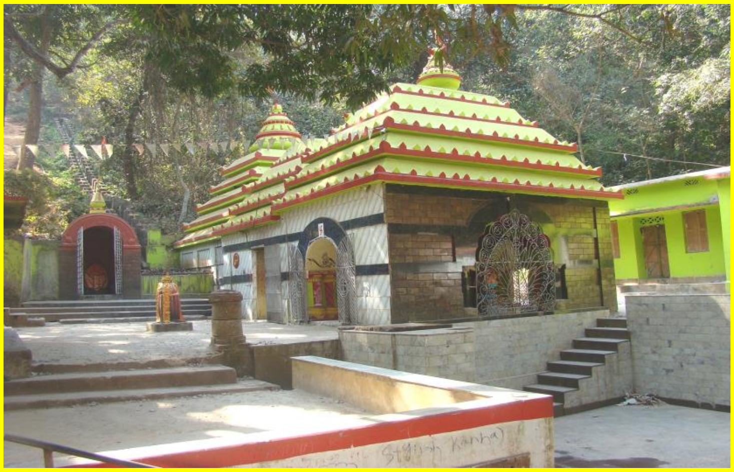

इस मंदिर की दोनों देवियों की मूर्तियां कालामुगुनी पत्थर से बनी हैं। दोनों मूर्तियों ने युद्ध के कपड़े पहने हैं। खुर्दा के भोई वंश के पारिवारिक देवी के रूप में देवी की पूजा की जाती है और माना जाता है कि वर्ष 1590 के आसपास मंदिर का निर्माण भोई राजवंश के संस्थापक राजा रामचंद्र देव- प्रथम ने कराया था।

राजा रामचंद्र देव- प्रथम ने अपनी नई राजधानी के रूप में खुरदा की स्थापना की और इसे "जगन्नाथपुरतक" नाम दिया।

बारूनी पहाड़ी पर ट्रैकिंग

यहां देवी को एक विशेष प्रकार का लड्डू चढ़ाया जाता है जो चावल, दाल और नारियल के पत्तों से बना होता है- ओड़िया में इसे "पीठा" कहा जाता है और चावल को दाल के साथ पकाया जाता है जिसे ओड़िया में "खेचडी" कहा जाता है।

यह माना जाता है कि भगवान श्रीराम इन पहाड़ियों पर से होते हुए गए थे। पांडव भी अपने वनवास के दौरान इस स्थान पर आए थे। यहां की पहाड़ी पर पर्यटक ट्रैकिंग करने भी आते हैं। लोग इन दोनों शक्तिशाली देवियों को खुर्दा राज्य की रक्षक मानते हैं। बारूनी पहाड़ी भुवनेश्वर के बरमुंडा बस स्टैंड से लगभग 25 कि.मी. और खुर्दा रोड रेलवे स्टेशन से केवल 13 कि.मी. दूर है। यहां जाने के लिए टैक्सियां भी मिल जाती हैं।

2. पुरी : पुरी भगवान जगन्नाथ की पवित्र नगरी है। यह भारत के चार पवित्र स्थानों में से एक है, जिसे "चार धाम" कहा जाता है। यह बंगाल की खाड़ी के तट पर स्थित इसका समुद्र तट दुनिया में सबसे अच्छे तटों में से एक माना जाता है। यह स्थान सदियों से तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को आकर्षित करता रहा है। पुरी रथ यात्रा के अपने वार्षिक उत्सव के लिए प्रसिद्ध है।

2.1 मां मंगला मंदिर : काकटपुर मंदिर भारत के पूर्वी तट पर काकटपुर में स्थित है। यह 15 वीं शताब्दी का मंदिर कलिंग की प्राचीन विरासत का प्रतीक है। यह मंदिर पूर्वी तट पर स्थित "प्राची" नदी में स्थित है। नदी प्राची को पहले सरस्वती नाम दिया गया था।

"मां मंगला" को "शक्तिपीठ" कहा गया है। मंदिर को कलिंग की विशिष्ट शैली "उत्कल्यापीठ विमना शैली" में बनाया गया है। यहां ठोस पत्थर से बना एक बिस्तर है जिसके बारे में कहा जाता है कि माँ मंगला प्रतिदिन पूरे ब्रह्मांड का भ्रमण करने के बाद इस पर आराम करती हैं । शक्ति पंथ के भक्तों के लिए एक प्रमुख तीर्थ है। तीर्थयात्री अक्सर मां मंगला का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आते हैं।

भगवान जगन्नाथ की संगति - कहा जाता है कि जब पुरी में भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और देवी सुभद्रा की मूर्तियों को नकाबलेवारा संस्कार के दौरान वस्त्र बदले जाते हैं तब मंदिर के पुजारी काकतपुर मंदिर में मां मंगला से उन्हें दिव्य मार्गदर्शन देने की प्रार्थना करते हैं। मंदिर जाने के लिए कटक, भुवनेश्वर, पुरी, जगतसिंहपुर और पारादीप से सुव्यवस्थित सड़क मार्ग उपलब्ध है।

2.2 बलिहारचंडी : पुरी जिले के ब्रहमगिरी क्षेत्र में समुद्र-तट के निकट एक रेतीली पहाड़ी पर स्थित मंदिर देवी हरचं**डी** को समर्पित है। यहां पर फैले कैसुरीना के पेड़ों की मोटी शाखाओं के बीच इसकी सुरम्य स्थिति के कारण, श्रद्धालु स्थानीय रूप से इसे बाली-हरखंडी कहते हैं। बंगाल की खाड़ी के नीले पानी की अनोखी छटा और एक विशाल रेत के टीले पर मंदिर अपने स्थान का राजसी रूप देता है।

जल और नौवहन की देवी के रूप में, मछुआरे और नाविक देवी दुर्गा की आठ भुजाओं वाली बलिहरचंडी के रूप में विशेष रूप से आराधना करते हैं। नवरात्रि, महानवमी, दुर्गा पूजा, चैत्र मंगला बारा, रामनवमी आदि पर बड़ी श्रद्धा के साथ उत्सव मनाए जाते हैं। पुरी से 24 कि.मी. और भुवनेश्वर से 84 कि.मी. दूर मंदिर जाने के लिए भुवनेश्वर और पुरी से अच्छी बस सुविधाएं उपलब्ध हैं। धार्मिक स्थल के साथ ही यह पिकनिक के लिए भी बहुत अच्छी जगह है

2.3 सिद्ध बकुल:

सिद्ध बकुला श्री जगन्नाथ मंदिर से एक किलोमाटर, बाली शाही रोड पर गंभीरा मंदिर के पास स्थित है। सिद्ध बकुला हरिदास ठाकुर का भजन कुटीर है, जहां उन्होंने प्रतिदिन कृष्ण के 3,00,000 नामों का जाप किया। एक छोटा मंदिर है जिसमें बैठे मुद्रा में जप जप करते हुए नमस्कार श्रील हरिदास ठाकुर की मूर्ति है। यहां बकुला का असाधारण पेड़ है जो आंगन के चारों ओर घुमावदार और चढ़ाई करता है। पेड़ ऐसा लगता है,जैसे वह फट गया हो या यह लकड़ी की तरह पूरी तरह से सूखा हुआ दिखाई देता है; फिर भी यह हरे-भरे पत्तों और सुगंधित फूलों के साथ आश्चर्यजनक रूप से फल-फूल रहा है।

मंदिर की एक अन्य वेदी में बीच में सद्भुजा गौरांग (छः सशस्त्र गौरांग) और श्री नित्यानंद प्रभु और अद्वैत आचार्य हैं। यहां भगवान नरसिंहदेव देवता भी विराजमान हैं।

2.4 बारला बालकुनेश्वर : पुरी का बारला गांव, क्षेत्रीय महत्व का एक गांव है, जहां एक प्रसिद्ध शिव मंदिर स्थित है। इस शिव मंदिर को बारला बालकुनेश्वर मंदिर या बराला बालुन्केस्वा शिवमंदिर के नाम से जाना जाता है।

यह पुरी के सबसे महत्वपूर्ण शिव मंदिरों में से एक है। मंदिर पूर्वमुखी है और गर्भगृह में एक संरक्षित शिवलिंग स्थापित है। यहां शिव की भगवान बालकुनेश्वर के रूप में आराधना की जाती है। इस मंदिर में दुर्गा, खेसरपताला, वराही अन्नपूर्णा, अर्द्धनारीश्वर, दामोदर, गोपाल, नरसिंहा, अंबिका और पार्श्वनाथ की प्रतिमाओं के 25 छोटे-छोटे शिखर हैं

बालकुनेश्वर मंदिर की वास्तुकला विमान (मुख्य मंदिर), जगमोहन (प्रवेश द्वार) और नटमंडप (नृत्य हॉल) वास्तव में ही दर्शनीय है। मंदिर के पूर्व में सिंह द्वार, एक ऊंची दीवार से घिरा है। यह पुरी से लगभग 22 कि.मी. दूर है ।

2.5 हरि सहदेव : बालपुर पुरी जिले में सत्यबाड़ी तहसील का एक गांव है। यह जिला मुख्यालय के पुरी से 20 कि.मी. उत्तर में स्थित है। राज्य की राजधानी भुवनेश्वर से सत्यबाड़ी 39 कि.मी. है। इस मंदिर में शिव और कृष्ण की एक महान मिश्रण संस्कृति है। यहां आसपास के ग्रामीणों द्वारा गाय का पहला दूध 'चढाबा प्रसाद' के रुप चढ़ाया जाता है।

2.6 बिश्वनाथ मुंडिया : यह मंदिर पुरी जिले में देलांग के पास बिश्वनाथ मुंडिया पहाड़ी के ऊपरी भाग पर स्थित है, जो पुरी और भुवनेश्वर के बीच में स्थित है और पहाड़ी से दूर समुद्र को भी देखा जा सकता है। पुरातत्वविदों का मानना है कि इस पहाड़ी में कई बौद्ध स्तूप हैं। बिश्वनाथ हिल, दिग्नाग के प्राचीन मठ, बौद्ध तर्कशास्त्री और दार्शनिक के लिए जाना जाता है। यह वराह मूर्तियों के पुरातत्विक अवशेष भी है। बिश्वनाथ मंदिर, बिश्वनाथ मुंडिया के रूप में लोकप्रिय भगवान शिव के लिए प्रसिद्ध है। यह एक मुंडिया (पहाड़ी) के चोटी पर है। महा शिवरात्रि, महाबीष एवं व संक्रांति आदि के आयोजन किए जाते हैं। इस स्थान की विशेषता है कि यह सदा ही बादलों से घिरा रहता है। यह पिकनिक के लिए बहुत अच्छी जगह है।

2.7 चंदन हजुरी : चंदन हजुरी (1827-1870) यह स्थान 'चाखि खुंटिया' के नाम से लोकप्रिय है। चंदन हजुरी जगन्नाथ मंदिर के पुजारी और 1857 के भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाले कवि थे। उनका जन्म पुरी के हरचंडी में प्रसिद्ध हजारी परिवार में हुआ था।

कुछ ग्रंथों में चाखि खुंटिया' के महारानी लक्ष्मीबाई का पारिवारिक पुजारी होने का उल्लेख मिलता है। 1857 के आजादी के संग्राम से पहले वह जगन्नाथ मंदिर के पंडा थे। उन्होंने देश भर में यात्रा करने के दौरान सिपाहियों को एकत्र करने और संग्राम के सेनानियों को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के समय, उन्हें सीधे ही विद्रोहियों के साथ संपर्क

कर गुप्त सूचनाएं प्रेषित करने के लिए जाना जाता था। उन्हें गया (बिहार) में गिरफ्तार किया गया था और उनकी सारी संपत्ति ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा जब्त कर ली गई थी। उन्हें 1858 में रिहा कर दिया गया और वे पुरी लौट आए।

चाखी खुंटिया ने अपना बाकी समय पुरी में बिताया और भगवान जगन्नाथ पर भक्ति गीतों की रचना में समर्पित किया। उनकी याद में राज्य सरकार ने कई स्थानों पर उनकी आदमकद प्रतिमाएं लगाई हैं और पुरी में उनके घर को स्मारक बनाने का प्रस्ताव है।

2.8 सुआंडो : पुरी जिले में सत्यबाड़ी तहसील में एक छोटा सा गांव है। पुरी के पास सुआंदो गांव में 9 अक्टूबर,1877 को गोपबंधु दास का जन्म हुआ था। एक सामाजिक कार्यकर्ता, सुधारक, राजनीतिक कार्यकर्ता, पत्रकार, कवि और निबंधकार, गोपालबंधु दास उत्कलमणि के नाम से जाने जाते हैं। उन्हें ओडिशा के गांधी के रूप में भी जाना जाता है। ग्राम सभा ने, 1975 में उनके नाम पर एक संग्रहालय बनाया है। सुंदर नदी तट, प्राकृतिक दृश्यों और भुवनेश्वर से मात्र 38 कि.मी. दूरी के कारण यह जगह पर्यटकों को आकर्षित करने की क्षमता रखती है।

2.9 वन विद्यालय और पंचसखा स्मृति उपवन: सत्यवादी बन-बिद्यालय ओडिशा के सत्यबाड़ी ब्लॉक में स्थित साखीगोपाल (साक्षीगोपाल) के निकट भारतीय गुरुकुल परंपरा में संचालित एक माध्यमिक विद्यालय है। इसकी स्थापना 1909 (ब्रिटिश शासनकाल) में प्रसिद्ध लेखक और सामाजिक कार्यकर्ता गोपबंधु दास ने की थी। यह सत्यबादी बकुल बन बिदयालय के रूप लोकप्रिय है। यह डेक्कन एजुकेशन सोसायटी से प्रेरित और संचालित था और (रूढ़िवादियों के विरोध के बावजूद) एक गैर-संप्रदाय के आधार पर उदार शिक्षा प्रदान करना इसका लक्ष्य था। उनका मानना था कि अगर लोगों को जन्मजात स्वतंत्रता और अपने देश के प्रति अपने कर्तव्य

के प्रति जागरूक होना है तो शिक्षा जरूरी है क्योंकि शिक्षा ही बच्चे को मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से विकसित करने में मदद कर सकती है। यहां सभी जातियों और पृष्ठभूमि के बच्चों को एक साथ बैठने, एक साथ भोजन करने और एक साथ अध्ययन करना होता था। स्कूल में आवासीय स्कूली शिक्षा, एक प्राकृतिक वातावरण में अध्यापन और शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध जैसी विशेषताएं थीं। उनके प्रयासों से स्कूल अगले वर्ष में हाई स्कूल में परिवर्तित हो गया। इसने कलकत्ता विश्वविद्यालय से संबद्धता प्राप्त की और 1914 में अपनी पहली मैट्रिक परीक्षा आयोजित की । इसे 1921 में राष्ट्रीय विद्यालय बनाया गया था। बन-बिद्यालय के साथ ही सटा है **पंचसखा स्मृति उपवन ।** पंडित गोपबंधु दास, आचार्य हरिहर दास, पंडित नीलकंठ दास, पंडित कृपासिंधु मिश्रा और पंडित गोदभरीश मिश्र इन पांच स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षाविद्, साहित्यकार, राष्ट्रवादी, दार्शनिक और समाज सुधारक समान विचारधारा की इस मित्र मंडली को लोकप्रिय रूप से "सत्यवादी की पंचासखा" के रूप में जाना जाता है। इस उपवन में उद्यान विभाग द्वारा विभिन्न प्रजातियों के अनेक पौधे और वृक्ष लगाए गए हैं। स्मृति पार्क, साखी गोपल से बस डेढ कि.मी. दूर है। **बहुत से टूर ऑपरेटर साक्षी गोपाल दर्शन के समय पर्यटकों को इस स्थान पर भी लाते हैं।**

2.10 : सतपाड़ा डॉल्फिन अभयारण्य : पुरी से 50 कि.मी दूर, यह राज्य के सबसे लोकप्रिय पर्यटक आकर्षणों में से एक है। यहां खूबसूरत डॉल्फ़िन मछलियों के साथ-साथ ख़ूबसूरत सूर्योदय और सूर्यास्त देखने का भी मौका मिलता है। लेकिन डॉल्फ़िन को देखने हेतु पर्यटक आगमन बहुत कम है। यह एक ऐसी जगह है जहां बच्चे घूमना पसंद करते हैं और इसलिए यह जगह दोस्तों और परिवार के साथ घूमने के लिए एक बहुत ही योग्य जगह है।

यहां डॉल्फिन मोटर बोट एसोसिएशन की ओर से मोटर बोट सुविधा की भी व्यवस्था है। इसका टिकट भी बहुत किफायती हैं। डॉल्फिन अवलोकन स्थल पर, शांति बनाए रखने के लिए मोटर बोट का इंजन बंद कर दिया जाता है।

3. कोणार्क : कोणार्क को कोणादित्य के नाम से भी जाना जाता है, यह ओडिशा राज्य के पुरी जिले का एक छोटा सा शहर है। यह भुवनेश्वर से लगभग 65 कि.मी. दूर यह स्थान 13 वीं शताब्दी के सूर्य मंदिर और चंद्रभागा नदी के लिए प्रसिद्ध है। 'कोणार्क' नाम कोना - कोना और अर्का - कोनों ऑफ सन से लिया गया है; यह पुरी के उत्तर-पूर्व में स्थित है। कोणार्क का सूर्य मंदिर, जिसे अक्सर काला पगोडा कहा जाता है, का निर्माण गंगा वंश के राजा नरसिंह देव-प्रथम द्वारा मध्य तेरहवीं शताब्दी में कराया गया था और यह उस समय के कलात्मक गौरव का पर्याप्त प्रमाण है। यहां देश विदेश के सैकड़ों पर्यटकों का प्रति दिन आगमन होता है।

3.1 रामचंडी मंदिर : यह कोणार्क की पीठासीन देवी के स्थान के रूप में लोकप्रिय है। रामचंडी मंदिर वास्तुकला की दृष्टि के साथ ही, धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। यह पुरी के प्रसिद्ध शक्ति पीठों में से एक है।

इसके मुखालस के साथ मुख्य मंदिर एक मंच 3'.2" ऊंचे मंच पर बनाया गया था। मंदिर की दीवारों के तीन ओर यानी दक्षिण, पश्चिम और उत्तर में सूर्य देव की तीन प्रतिमाएं थीं।

रामचंडी मंदिर के निकट आधुनिकीकृत समुद्रतट।

इन्हें आज भी देखा जा सकता है। जबकि पश्चिमी तरफ की आकृतियां वहां से हटा कर नई दिल्ली में राष्ट्रीय संग्रहालय में संरक्षित की गई है। इस प्रतिमा के बारे में कहा जाता है कि इसमें मूर्तिकला की एक अलग ही विशेषज्ञता है और माना जाता है कि आकार में छोटी होने के पर भी यह सूर्य देव की सुंदर मूर्तियों में से एक है। मंदिर से कुछ ही दूर साफ सुथरा समुद्र तट है। **पर्यटन मंत्रालय की प्रशाद योजना के तहत यहां विकास कार्य किया जा रहा है। आसपास के क्षेत्रों से लोग सप्ताहांत का आनंद लेने आते हैं।**

3.2 वराही मंदिर: ओडिशा के पूर्वी तट पर कोणार्क से 25 कि.मी. दूर स्थित, वराही मंदिर नौवीं शताब्दी में निर्मित एक प्राचीन मंदिर है। चौरासी वराही मंदिर अपने आप में एकाधिक रूप में अनोखा है। इस मंदिर में निहित मूर्ति को पूरे भारत में पाए जाने वाले देवताओं की मूर्तियों से अलग माना जाता है। इस मंदिर का निर्माण सोमवंशी शासन के दौरान 10 वीं शताब्दी की पहली तिमाही में वराही के सम्मान में किया गया था।

कर्कर नामक पत्थर से बनी मूर्ति एक पद पर ललितासन पर पूर्वाभिमुखी मुद्रा में विराजमान की गई है। दिव्य मूर्ति महिला का शरीर और वराह का मुख है। वह दाहिने हाथ में मछली और बायें हाथ में कपाल धारण किए है। उसने अपना दाहिना पैर अपने वाहन - भैंसे पर रखा है जो नीचे की ओर पीठ पर बैठा है। वराही को उसके माथे पर तीसरी आंख के साथ दर्शाया गया है जो वर्तमान में स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देता है। उसके बाल सर्पिल रूप में सजाए गए हैं। वास्तुकला की दृष्टि से, चौरासी में वराही का मंदिर प्राची घाटी में सबसे सुंदर स्मारक है। मंदिर एक उपन्यास शैली का प्रदर्शन करता है जो उत्कल नामकरण के अनुसार खखरा या गौरीचारा किस्म का है। भूमि योजना कुछ हद तक भुवनेश्वर के बैताल दौला से मेल खाती है, मंदिर योजना और निर्माण दोनों में एक पंचरथ प्रकार प्रस्तुत करता है। विमना क्रॉस सेक्शन में आयताकार है और इसकी लम्बी मेहराबदार छत और अन्य वास्तुशिल्प विशेषताओं के साथ यह वैशाली मंदिर की तुलना में भुवनेश्वर के गौरी मंदिर से अधिक मिलता जुलता है। विमना आकार का कलश 18 फीट 22 फीट और उसकी ऊंचाई 27 फीट है ।

3.3 कुरुमा : कोणार्क बस स्टेशन से सात कि.मी. की दूरी पर, कुरुमा या कुड़ुम, पुरी जिले का एक छोटा सा गांव है। यह अपने ऐतिहासिक महत्व के कारण प्रसिद्ध कोणार्क पर्यटन स्थल का ही एक हिस्सा है। यहां एक खुदाई में मिली भगवान बुद्ध की भुमिस्पर्श मुद्रा में दाहिने हाथ से क्रॉस लेटी हुई प्रतिमा मिली थी,जिसका बायां हाथ उनके बाएं घुटने के ऊपर रखा है। मूर्ति में एक सुंदर मुकुट और एक सुंदर नक्काशीदार हार भी पहना हुआ दिखाई देता है। यह प्रतिमा राष्ट्रीय संग्रालय में रखी गई है।

कुरुमा उड़ीसा के प्रमुख पुरातत्व उत्खनन स्थलों में से एक है और इसका उल्लेख अशोक और श्रीलंका के कई बौद्ध ग्रंथों में मिलता है। चीनी यात्री ह्वेन त्सांग ने भी इसका उल्लेख किया है। इस स्थल का उत्पत्ति काल 8वीं -9वीं शताब्दी ईस्वी के बीच का माना गया है ।

बुद्ध की प्रतिमा के अलावा, खुदाई में दो अन्य मूर्तियां भी पाई गई थी। इनमें से एक की पहचान 'हेरुका' के रूप में की गई है। स्थानीय लोग इस प्रतिमा को 'धर्म' का रूप कहते हैं, सूर्य देव और एक अन्य प्रतिमा को यम के रूप में जाना जाता है। इस बौद्ध मठ में प्रत्येक दिशा में 12 ब्लॉक हैं और केंद्र में एक खुला प्रांगण है। साइट से प्राप्त मूर्ति की अब एक छोटे से शेड के भीतर अर्चना-आराधना की जाती है।

गांव के बाहरी तालाब के निकट बुद्ध की प्रतिमा देखकर, इस स्थल की सूचना सबसे पहले ब्रजबंधु दास नाम के एक स्कूल शिक्षक ने दी थी और बाद में 1971 से 1975 तक ओडिशा राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा यहां खुदाई की गई।

कुछ विशेष शोधार्थियों आदि को छोड़ कर, अब आम लोगों को मठ में प्रवेश की अनुमति नहीं है। पर्यटक यूजीएमई स्कूल के पास शिक्षक श्री ब्रजबंधु दास के कमरे में जा सकते हैं, जहां खुदाई के कुछ नमूने जैसे पत्थर पर लिपि, प्राचीन सिक्के आदि उनकी निगरानी में रखे गए हैं। पुरातात्विक दृष्टि से कुरुमा भिन्न नहीं है। यह अपने ऐतिहासिक महत्व के कारण प्रसिद्ध कोणार्क पर्यटन स्थल का ही एक हिस्सा है। बहुत से टूर ऑपरेटर अपने पैकेज में इसे शामिल करते हैं। भारत के इतिहास का पता लगाने के लिए एक बार यहां की यात्रा की जानी चाहिए है।

3.4 जोडा लिंग शिब मंदिर : अध्यात्म हमेशा चमत्कार से जुड़ा और पूर्ण होता है। ऐसा ही आश्चर्यजनक मंदिर है। जोडा लिंग शिब मंदिर जो कोणार्क से 60 कि.मी. दूर बालिपुट में स्थित है । शिब मंदिर सुंदर हरियाली और प्राकृतिक सुंदरता से घिरा हुआ है।

यहां दो शिब लिंग एक साथ प्रकटित है। सर्दियों में यह स्थान उन लोगों के लिए सबसे अच्छा हो सकता है जो प्रकृति के साथ ही आध्यात्मिकता की इच्छा करते हैं ।

इनमें से अधिकांश को पुरातात्विक स्थल और अवशेष अधिनियम 1958 के तहत संरक्षित किया गया है। इन गंतव्यों पर पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए अवसंरचना में सुधार किए जाने की आवश्यकता है। इन स्थानों के पर्यटन को बेहतर बनाने के लिए कुछ कार्य किए जा सकते हैं, जैसे कि -

- लेखक या ट्रैवल जर्नलिस्ट्स और ब्लॉगर्स को इन जगहों के बारे में जानने और फिल्में बनाने/ लिखने के लिए प्रोत्साहित करना
- सरकार द्वारा मुख्य सिटी सेंटर से इन स्थानों के लिए टूर पैकेज या विशेष बसें उपलब्ध करना ।
- इन स्थानों के बारे में आसपास के शहरों में आसान संकेतक लगाना।
- आस-पास अधिक रेस्तरां और होटल का निर्माण।
- इन स्थानों की स्वच्छता में सुधार करना।
- इन गंतव्यों के लिए सड़क परिवहन को बेहतर बनाना।
- उस क्षेत्र में पर्यटन गतिविधि में सुधार के बारे में स्थानीय लोगों को सूचित करना और उन्हें पर्यटकों के साथ सहयोग करने के लिए कहना।
- पर्यटक स्थलों के आसपास के क्षेत्रों का सौंदर्यीकरण।
- इन जगहों पर छोटे-छोटे कार्यक्रम आयोजित करना।

***सम्प्रति : पुस्तकालयाध्यक्ष, होटल प्रबंधन संस्थान, पर्यटन मंत्रालय, भुवनेश्वर**

आपका योगदान :
श्रेष्ठ भारत का निर्माण

छत्तीसगढ़ के व्यंजन

-सल्ला विजयकुमार और श्रीमती यशोधरा पांडा

एक भारत श्रेष्ठ भारत की पहल से देश के लोग न केवल एक-दूसरे के करीब आए हैं, बल्कि आपस में जोड़े गए दो राज्यों के खानपान, वेशभूषा, रीति-रिवाजों और लोक संस्कृति, उनकी विरासत आदि के बारे में जानकारी मिली है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत छत्तीसगढ़ और गुजरात राज्यों की जोड़ी बनाई गई है। सांस्कृतिक एकता में अपना योगदान प्रदान करने के उद्देश्य से हमने छत्तीसगढ़ राज्य के खानपान और उसके व्यंजनों पर एक नजर डालने का प्रयास किया है। छत्तीसगढ़ी व्यंजनों की इस की खोज में, मेरे साथ श्रीमती यशोधरा ने अध्ययन कर, विशिष्टताओं का पता लगाया है। तदनुसार, हमने छत्तीसगढ़ के कुछ बेहतरीन व्यंजन बनाए और उनका सभी ने आनंद लिया। यह इनके स्वाद से अधिक उन व्यंजनों की समृद्धि को जानने और तलाशने का गंभीर प्रयास है।

सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती मनाने के लिए 31 अक्टूबर, 2015 को आयोजित राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री द्वारा विभिन्न क्षेत्रों के संप्रदायों के बीच एक निरंतर और संरचित सांस्कृतिक संबंध की कल्पना की थी। माननीय प्रधान मंत्री जी ने यह प्रतिपादित किया कि सांस्कृतिक विविधता एक ऐसी खुशी है जिसे विभिन्न राज्यों और संघशासित प्रदेशों के लोगों के बीच पारम्परिक संपर्क और पारस्परिक रूप से मनाया जाना चाहिए ताकि देश भर में समझ की एक सामान्य भावना प्रतिध्वनित हो। "एक भारत - श्रेष्ठ भारत" कार्यक्रम के तहत देश के प्रत्येक राज्य और संघ शासित प्रदेश को एक वर्ष के लिए किसी अन्य राज्य / संघ शासित प्रदेश के साथ जोड़ा गया ताकि वह एक दूसरे की भाषा, साहित्य, व्यंजन/भोजन, त्यौहारों , सांस्कृतिक कार्यक्रमों, पर्यटन आदि के क्षेत्रों में एक दूसरे के साथ रचनात्मक रूप से जुड़ें और जानकारी ले सकें ।

छत्तीसगढ़ को "भारत का धान का कटोरा" कहा जाता है क्योंकि देश में धान (चावल) उत्पादन में छत्तीसगढ़ राज्य की अधिकतम हिस्सेदारी है। प्राकृतिक संपदा से भरपूर, छत्तीसगढ़ की वन उपज में औषधीय जड़ी बूटियां, बीज और फलों से लेकर पत्तियों, छाल, जड़ों और फूलों तक होते हैं। देश के बहुत से राज्य इनका अपने आहार में उपयोग करते हैं। छत्तीसगढ़ के आहार और व्यंजन इसके पड़ोसी राज्य झारखंड के खानपान से प्रभावित हैं।

जनजातीय संस्कृति में भोजन के लिए आसानी से उपलब्ध और ताजा सामग्री का उपयोग करने का अधिक प्रचलन देखा जाता है। सब्जियां, साग, बांस के अंकुर, यहां तक कि लाल चींटियों की प्रसिद्ध चटनी, चावल और चावल के आटे से बने फ़रा/ मुथिया यहां के कुछ स्वादिष्ट प्रसिद्ध व्यंजन हैं। खाने के बाद प्राय:एक गिलास 'बोर-बासी' पका हुआ चावल में डूबा हुआ पानी/ छाछ जरूर दिया जाता है। यह पेय चिलचिलाती गर्मी के शरीर में पानी के स्तर को बनाए रखने में मदद करता है।

आदिवासी और ग्रामीण आबादी महुवा नामक एक स्थानीय पेड़ के छोटे, मलाईदार सफेद फूल से बना काढ़ा पीते हैं। साधारण सामग्री और पारंपरिक खाना पकाने के तरीकों से भोजन को अपना विशिष्ट स्वाद मिलता है।

"सांस्कृतिक विविधता" का अर्थ कभी-कभी एक विशिष्ट क्षेत्र में या पूरे विश्व में मानव समाजों या संस्कृतियों में भिन्नता से लिया जाता है। सांस्कृतिक विरासत किसी भी संस्कृति की गुणवत्ता है। भारत में एक दूसरे की सांस्कृतिक परम्पतराओं में विविधता होते हुए भी उनका सम्मान करते हुए उनका आनन्द लेने का उल्लेख कर सकते हैं। वैश्वीकरण से दुनिया की सांस्कृतिक विविधता पर अक्सर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

इस आलेख में छत्तीसगढ़ के कुछ लोकप्रिय व्यंजनों के बारे में अध्ययन करने के बाद बताया जा रहा है। यहां हम कुछ प्रचलित व्यंजनों का ही उल्लेख करेंगे :

आमट : यह बस्तर के क्षेत्र से उत्पन्न हुआ है, यह व्यंजन छत्तीसगढ़ का एक उत्तम व्यंजन है। यह पारंपरिक रूप से बांस के अंकुरों से तैयार किया जाता है जिसमें बांस के अंकुर के साथ पूरी तरह से पकी हुई कई सब्जियों, मसालों और अदरक-लहसुन के पेस्ट के साथ तैयार किया जाता है। उबल जाने के बाद इसमें सुगंधित मसाले और चीकू भी डाला जाता है। इससे यह और स्वादिष्ट हो जाता है। आमट को छत्तीसगढ़ का सांभर कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। इसे उबले हुए चावल, और कई बार रोटी, के साथ भी परोसा जाता है ।

बारा : बारा छत्तीसगढ़ का सबसे स्वादिष्ट स्नैक है और दक्षिण भारत के 'वड़ा' के समान है। यह आमतौर पर छत्तीसगढ़ी त्यौहारों पर तैयार किया जाता है। बारा को तैयार करने में बहुत अधिक तेल का उपयोग नहीं किया जाता

है। उड़द की भीगी दाल को पीसने के बाद, हरी मिर्च और ताजा धनिया और प्याज को बहुत बारीक काट कर फेंटने के बाद इसकी जरूरत के हिसाब से गोलियां बनाकर कर गरम तेल में तली जाती हैं। टमाटर की चटनी या इमली की चटनी के साथ परोसे जाने पर इसका स्वाद अच्छा लगता है।

फर्रा: नमकीन फरा या फर्रा छत्तीसगढ़ के लोगों के सबसे प्रसिद्ध और स्वस्थ नाश्ते में से एक है, जो इसके मुख्य घटक के रूप में चावल से तैयार किया जाता है। यह उबले हुए चावल में लाल मिर्च, दही, नमक और सरसों के बारीक कटे पत्ते मिलाकर गूंथकर, फिंगर रोल (लम्बे गोलाकार) बनाकर,10-15 मिनट के लिए भाप पर रख दिया जाता है। फिर तिल-मिर्च से छौंक लगाया जाता है। इस व्यंजन को छत्तीसगढ़ी स्टाइल का मोमो भी कह सकते हैं। इसे लाल मिर्च की चटनी के साथ परोसा जाता है।

दूध फर्रा: इसे मीठे के रूप में भी बनाया जाता है। मगर मीठे फरा में गुड़ डाला जाता है। इसे दूध में डालकर, ऊपर से बादाम के टुकड़ों के साथ परोसा जाता है ।

बफौरी : चना, मूंग, उड़द, मसूर की दालों को बराबर मात्रा में, पानी में भिगोकर, दरदरा पीसकर, मूट्ठी से गोल आकार देकर, भाप से पकाने के बाद सरसों तथा मिर्च से तेल में छौंका गया व्यंजन है। कभी कभी बफौरी को सफेद चने (बंगाली चना) के बेसन से भी बनाया जाता है। धनिया और पुदिना चटनी के साथ परोसे जाने पर इसका स्वाद सबसे अच्छा होता है। बफौरी को स्वास्थ्य वर्धक माना जाता है।

हथफोड़वा : यह व्यंजन आमतौर पर चावल के घोल से तैयार किया जाता है। बाहर से आने वाले पर्यटक इसे छत्तीसगढ़ी इडली भी कह सकते हैं क्योंकि देखने में यह बिल्कुल दक्षिण भारत की इडली जैसा है।

लेकिन इस व्यंजन को मिट्टी के तवे पर भाप में पकाया जाता है। इसकी खास बात यह है कि इसे नमकीन या मीठा दोनों तरह से खाया जाता है। नमकीन को चटनी या तरीदार सब्जियों के साथ परोसा जा सकता है। मीठे को दूध और शक्कर के साथ परोसा जाता है।

इडार : भरवां कोलोसेकिया पत्तियों को टमाटर, इमली और प्याज की ग्रेवी में उबाल कर पकाया जाता है।

जिमिकंद की खट्टी सब्जी: बस्तर शैली में रतालू की विशेष खाद्य पदार्थ के रूप में बनाई जाती है।

डबकी कढ़ी : डबकी कढ़ी छत्तीसगढ़ का एक दही आधारित व्यंजन है। इसमें दही और चने के आटे से बनी उड़द की दाल के पकौड़े को प्याज, टमाटर,लहसुन और अदरक से ग्रेवी में डूबा कर पकाया जाता है। फिर इसमें भिगो कर पीसी गई उड़द की दाल से बनी छोटी पकौड़ियां उबलती कढ़ी में डाली जाती हैं।

डबकी कढ़ी कई पहलुओं में पंजाबी कढ़ी से बहुत अलग है। पंजाबी कढ़ी के लिए पकौड़ी को पहले तल कर फिर कढ़ी में डाला जाता है जबकि डबकी में पकौड़ी को पहले तला नहीं जाता बल्कि कच्चे ही कढ़ी में उबाला जाता है। इसलिए यह स्वस्थ और कैलोरी में कम होता है।

इस डबकी कढ़ी में पकौड़ी भी चने की दाल से भी बनाई जाती है। डबकी कढ़ी पकाने में आसान और स्वादिष्ट है। इसे उबले हुए चावल या जीरा-पुलाव के साथ परोसा जाता है। इसे रोटी या पराठे के साथ खाया जा सकता है।

खुरमी:

यह गहरे तले हुए गुड़ और गेहूं के आटे के बिस्कुटनुमा सूखा पकवान है। इसे खीर भी कहा जाता है। खुरमा मीठा दूध और सेंवई से तैयार किया जाता है। यह मीठा पकवान चीनी या गुड़ को थोड़े पानी और दूध में उबालकर एक तार की चाश्नी तैयार होने पर इसमें सेंवई को भूना जाता है। लाल होने पर इसमें सूखे मेवे डालकर मथा या घोटा जाता है और सख्त होने से पहले हल्की मात्रा में घी मिलाकर इसकी टिकिया बनाई जाती

अंगाकार रोटी : अंगाकार रोटी छत्तीसगढ़ की सुप्रसिद् और पारंपरिक रोटी है जिसे चावल आटे से तैयार किया जाता है। पहले चावल या पुराने चावल के चावल के आटे को गूथ कर उसे बड़ा गोला आकार देते है फिर उसके ऊपर और नीचे दोनों तरफ पलास के पत्ते से ढक कर अंगार (कोयले की आंच) पर पकाया जाता है।

चउँसेला : चावल के आटे को गरम पानी में थोड़ा नमक मिलाकर गूंधकर और रोटी के समान बेलकर, तेल से तली गई पूड़ी होती है। जिसे तरीदार सब्जी के साथ परोसा जाता है।

हलवा मूंग दाल : आमतौर पर मूंग की दाल से खाना बनाया जाता है। लेकिन इससे हलवा जैसे रोचक मीठे व्यंजन भी तैयार किया जाता है। यह व्यंजन मूंग की दाल, चीनी और घी से तैयार किया जाता है। बारीक कटे ड्राई फ्रूट्स और इलायची पाउडर इस डिश को और स्वादिष्ट बनाते हैं।

देहोरी : छत्तीसगढ़ के चावल के घोल से तैयार उबले हुए स्वादिष्ट पकौड़े हैं। यह भोजन आम तौर पर छत्तीसगढ़ के ग्रामीण इलाकों में सर्दियों के मौसम में नाश्ते के रूप में उपयोग किया जाता है और इसे धनिया पत्ती और तिल के साथ खूबसूरती से सजाया जाता है।

मुथिया : इस स्नैक को बिना तले ही बनाया जाता है जिससे इसके अपने अवयवों के मूल तत्व बरकरार रहते हैं। गुजराती व्यंजनों में भी मुथिया बनाया जाता है। लेकिन छत्तीसगढ़ में नाश्ते के रूप में अधिक लोकप्रिय है।

पूरन लड्डू : गेंहू के आटे को घी में लाल भून कर, शक्कर, मेवा और गुड़ की चाशनी में मिलाया जाता है और ताज़ी बनाई बूंदी के साथ, गर्म होने पर पिन्नी के चारों ओर लपेटा जाता है। मुठ्ठी से दबाकर गोल बनाया गया पूरन लड्डू एक सूखा मिष्ठान है।

खाद्य पेय की दुनिया में हमारे पास मुक्त-बाज़ार की एक विचारधारा है। इस पारी के लिए रसोइए के बौद्धिक औचित्य पर निश्चित रूप से बदलाव की मांग की जा रही है। भले ही हम भोजन की प्रामाणिकता के बारे में प्रचार करते हैं। अपनी समृद्ध पाककला पर हमें गर्व करना चाहिए ।

स्थानीय संस्कृति की एक विशेषता यह है कि यह अनौपचारिक है। आम तौर इस तरह की संस्कृति का आधार एक गहरी जड़ों वाली लोक संस्कृति से अलग है। यह व्यंजन मूलतः अपने शुद्ध और पारंपरिक विशिष्ट है। मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूं कि इन विशिष्ट उप-व्यंजनों के लिए हमें और प्रामाणिक अनुसंधान कर, खाद्य पेय की विरासत को संजोना चाहिए।

मैं यहां पाककला के संरक्षण पर उनकी बहाली के लिए प्रेरित करना चाहता हूं। आइए वास्तुकला, संस्कृति के साथ साथ पाककला के रहस्यों का भी संरक्षण करें ताकि हमारी भावी पीढ़ियों के लिए यह एक खजाना साबित हो।

***सम्प्रति : वरिष्ठ व्याख्याता, होटल प्रबंधन संस्थान, पर्यटन मंत्रालय, गांधी नगर (गुजरात)**

अंडमान व निकोबार-।। प्राकृतिक सुंदरता के अनदेखे गंतव्य

-सुन्दर लाल 'सुनेहरी'

खूबसूरत और मन मोहक जंगल, सफेद रेतीले समुद्री तट और समुद्र का क्रिस्टल क्लीयर पानी निकोबार द्वीप का प्रमुख आकर्षण है। इन द्वीपों में पक्षी और फूल भी प्रमुख आकर्षण है, जो बड़ी संख्या में पर्यटकों को यहां आने के लिए आमंत्रित करते हैं। निकोबार के मनोरम दृश्यों में विविधता लिए समुद्री तट भी शामिल है। सबसे पहले हम यहां वाइपर द्वीप की बात करेंगे क्योंकि पोर्ट ब्लेयर स्थित सेलुलर जेल (जिसके बारे में आप पिछले अंक में पढ़ चुके हैं) उससे पहले वाइपर नाम का द्वीप स्वतंत्रता सेनानियों को काले पानी की सजा देने के लिए उपयोग में लाया जाता था।

वाइपर द्वीप : अंडमान के वाइपर द्वीप का भी अपना एक ऐतिहासिक महत्व है। लेकिन इसके बारे में नहीं के बराबर ही जानकारी दी जाती है। वाइपर द्वीप पोर्ट ब्लेयर से बस 22 कि.मी. दूर एक बहुत अच्छे क्षेत्र में स्थित है। वर्तमान में इस द्वीप को एक प्रसिद्ध पिकनिक स्थल के रूप में विकसित किया गया है। अंडमान आने वाले विदेशी पर्यटकों के बीच में यह द्वीप काफी लोकप्रिय हो रहा है। आवासीय सुविधाएं होने के कारण, अन्य स्थानों की अपेक्षा यह द्वीप 24 घंटे खुला रहता है।

कुछ पुस्तकों में इस स्थान का नाम वाइपर द्वीप रखे जाने का जिक्र इस प्रकार है कि लेफ्टिनेंट आर्चीबाल्ड ब्लेयर ने दिसंबर,1788 से अप्रैल 1789 के बीच अंडमान-निकोबार का सर्वे किया था जिसके परिणामस्वरूप गवर्नर-जनरल ने समुद्री डाकुओं से लड़ने में एक सुरक्षित बंदरगाह बनाने के लिए द्वीपों में बस्तियां बनाने का फैसला किया। ब्लेयर 1788 में H.M.S. वाइपर नामक जहाज से अंडमान और निकोबार द्वीप समूह आए थे। माना जाता है कि इसी द्वीप पर उनका जहाज दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। सबसे पहले अंग्रेजों ने यहीं पहली बस्ती बसाई थी और उसके नाम पर ही इसका नाम रखा गया था।

1864-67 के दौरान समुद्री डाकुओं को पकड़ने के बाद उन्हें कैद करने के लिए यहां एक पहाड़ी के ऊपर सबसे पहली जेल बनाई गई, जिसे बाद में वाइपर जेल कहा गया। ब्रिटिश शासन में जब सजा पाए अपराधियों और स्वतंत्रता सेनानियों को 'काला पानी' की सजा दे कर भेजा जाता था तो उन्हें इसी द्वीप पर उतारा जाता था। इसके निर्मम अतीत के साक्षी टूटे-फूटे फांसी घर के खंडहर और फांसी के फंदे आज भी मौजूद हैं। यहां महिलाओं को भी रखा जाता था।

सॉलिटरी सैल, लॉक-अप और कोड़ों से पीटना वाइपर जेल की विशेषता थी। चूंकि यहां कैदियों लोहे की जंजीरों में बांध कर रखा जाता था, इसलिए खुद अंग्रेज ही इसे "वाइपर चैन

गैंग" कहने लगे थे। जेल का स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक अलग स्थान है। पुरी के महाराजा जगन्नाथ के नाम से प्रसिद्ध राजा बृज किशोर सिंह देव को वाइपर जेल में ही रखा गया था और यहीं 1879 में उनकी मृत्यु हुई थी। 8 फरवरी,1872 को होप टाउन जेट्टी में भारत के वायसराय लॉर्ड मेयो की हत्या करने के आरोप में पेशावर के एक पठान शेर अली को यहीं पर फांसी दी गई थी। 1906 में सेलुलर जेल बनने के बाद, इस जेल को खाली कर दिया। जिससे वाइपर जेल का महत्व कम हो गया और धीरे धीरे यह गुमनाम हो गई

जब भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की चर्चा होती है तो उसमें में अक्सर सेलुलर जेल का ही जिक्र मिलता है। इस जेल की भूमिका के बारे में प्राय: पुस्तकें मौन हो जाती हैं। जबकि सेल्युलर जेल बनने से कई साल पहले, देश को ब्रिटिश शासन का विरोध करने वाले लोगों पर अंग्रेजों ने अत्याचार करने के लिए, वाइपर द्वीप की इस जेल का ही उपयोग किया था। आज, दो मंजिला जेल भवन बाहरी दीवारों के साथ वीरान पड़ा है।

यहां आने के लिए फेयरी का किराया 75 रुपए से लेकर 150 तक है। स्थानीय सड़क मार्ग से भी इस अद्भुत स्थान की यात्रा की जा सकती है।

इंदिरा पॉइंट - निकोबार द्वीप: निकोबार के ग्रेट निकोबार द्वीप में, भारत के धुर दक्षिणी सिरे पर स्थित इंदिरा पॉइंट एक विशाल लाइटहाउस है। मनोरम खूबसूरती और काव्यात्मक सुंदरता भरे इस स्थान की निकोबार द्वीप समूह के मुख्या आकर्षणों में गिनती होती है। समुद्र के जल में स्थित यहां का लाइट हाउस दुनिया के सुव्युवस्थित रखरखाव वाले लाइट हाउसों में और सबसे ज्यादा पर्यटक आगमन में से एक है जो पर्यटकों को अपनी चमत्कारिक मौजूदगी से मंत्र-मुग्ध कर देता है। इस स्थान को देखने भारतीयों की अपेक्षा विदेशी सैलानी कहीं अधिक उत्साह से आते हैं। इस भव्य लाइट हाउस को देखने के लिए आने वाले पर्यटकों की संख्या में निरंतर

वृद्धि हुई है। आसपास की प्राकृतिक खूबसूरती के बीच समुद्री तट प्रकृति प्रेमियों को आकर्षित करते हैं। यह स्थल प्रदूषणरहित वातावरण में कुछ वक्त बिताने का न्योता देता है।

आज भी यह भारत होते हुए मलेशिया और मलक्का जाने वाले समुद्री जहाजों को दिशा दिखाता है। यह एक मात्र लाइट हाउस है जो सैलानियों के लिए खुला है और इसकी रेंज 16 नौटिकल मील तक है।

यहां से आस पास का दृश्य उतना ही सुन्दर दिखता है जितना कि पूरा अंड़मान और निकोबार द्वीप। इस लाइट हाउस स्टेशन को पहले पार्सस पॉइंट और फिर पैग्मलियन पॉइंट कहा जाता था।

इंदिरा पॉइंट के बारे में कुछ रोचक तथ्य:

•इंदिरा पॉइंट को पहले पैग्मलियन पॉइंट और पार्सन्स पॉइंट के रूप में जाना जाता था।

•इंदिरा पॉइंट की ऊंचाई समुद्र तल से 47 मीटर है।

•श्रीलंका का तलैमन्नार द्वीप यहां से सिर्फ 20 समुद्री मील (nautical mile) दूर है।

•दिसंबर 2004 में आई सुनामी ने इंदिरा प्वाइंट की ऊंचाई 4.25 मीटर कम कर दी।

•यहां सिर्फ चार परिवारों के 27 लोग ही रहते हैं। चार कार्मिक ही लाइटहाउस की व्यरवस्थार और देखभाल करते हैं।

19 फरवरी, 1984 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने इस स्थान की यात्रा की थी । श्रीमती गांधी की मृत्यु के बाद, 10 अक्टूबर 1985 को तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी ने भी इस स्थल की यात्रा की और एक समारोह में उन्होंने इसे इंदिरा पॉइंट का नाम दिया। लाल और सफ़ेद धारियों से अलंकृत और हैलीपैड युक्त, यह भव्य लाइट हाउस बहुत आकर्षक है। 24 दिसंबर 2004 की विनाशकारी सुनामी ने पूरे भारतीय क्षेत्र को बुरी तरह प्रभावित किया था। लेकिन लाइटहाउस को अधिक क्षति नहीं हुई थी।

कार निकोबार : अंडमान और निकोबार के प्रमुख आकर्षणों में शामिल है, कार निकोबार। प्रकृति की रहस्यमय सुंदरता को इस द्वीप पर ज्यादा करीब से अनुभव किया जा सकता है। उर्वरा धरती और नारियल के पेड़ों के झुंडों के साथ सामने दहाड़ते समुद्र को पर्यटक बहुत दिनों तक

भुला ही नहीं पाते हैं। खूबसूरत सफेद रेतीले समुद्री तट ने इस द्वीप को सबसे ज्यादा पसंदीदा पर्यटन गंतव्य बनाया है। कार निकोबार द्वीप पर वन्यजीवों और वनस्पति की विविध प्रजातियां देखते हुए, जंगल और समुद्री तटों के बेहतरीन नजारों के साथ निकोबारी झोपड़ियों में रह सकते हैं। इनकी एक खास बात है कि यह लकड़ी से बनी होती है, जिसकी पर्यटक प्रशंसा करते हैं। इनमें ठहरने का अपना अलग ही अनुभव है। पोर्ट ब्लेयर से इस द्वीप तक पहुंचने में समुद्र के रास्ते 16 घंटे का समय लगता है।

निकोबार अपने बेहतरीन द्वीपों के लिए लोकप्रिय है। कार निकोबार और ग्रेट निकोबार जैसे पर्यटन आकर्षण अपनी बेइंतहा प्राकृतिक खूबसूरती की वजह से खासे लोकप्रिय हैं। मनोरम दृश्यों के लिए सबसे आकर्षक कच्छल द्वीप है। यहां के कुछ पर्यटन केंद्र खासे लोकप्रिय हैं, जहां सालभर पर्यटकों का जमावड़ा रहता है।

ग्रेट निकोबार द्वीप : इको-फ्रेंडली की श्रेणी में रखे गए ग्रेट निकोबार द्वीप के समुद्री तटों की खूबसूरती का बखान शब्दों में नहीं हो सकता। यह हर मौसम में पर्यटकों को बड़ी संख्या में आकर्षित करता है। ग्रेट निकोबार की अनदेखी प्राकृतिक सुंदरता को निहारने के लिए, प्रति वर्ष पूरी दुनिया के अलग-अलग कोनों से बड़ी संख्या में पर्यटक पहुंचते हैं। पर्यटक आगमन में बड़ी संख्या विदेशियों की होती है। यहां जीव विज्ञान और वनस्पतिशास्त्र के विद्वान भी आते हैं।

कच्छल द्वीप : वैसे तो कहा जा सकता है कि ज्यादातर समुद्र तट एक जैसे ही होते हैं, पर कच्छल द्वीप पर तट के साथ खूबसूरत बादलों की अलग ही बात है। लगभग 174.4 वर्ग कि.मी. में फैले, कच्छल को पहले तिहन्यू के नाम से जाना जाता था। यहां के खूबसूरत समुद्र तट और समृद्ध वनस्पति व वन्यजीवों के बसेरों में प्राकृतिक सुंदरता के उत्कृष्ट स्तर के नमूने देखने को मिलते हैं। समुद्र के 'क्रिस्टल क्लीयर' जल के साथ, समुद्र कई तरह की मछलियों और मूंगो से भरा हुआ कच्छल का समुद्री तट सूर्योदय और सूर्यास्त का नजारों का एक अविस्मरणीय अनुभव देता है। यह 'सनबाथ' यानि समुद्री रेत पर नंगे बदन धूप में लेटना और तैराकी के लिए भी सबसे अच्छा माना जाता है। इसकी बेमिसाल प्राकृतिक सुंदरता के कारण यह द्वीप भी विश्व भर में पर्यटकों में खासा लोकप्रिय है। इस द्वीप पर गर्मियों या सर्दियों में कभी भी आ सकते हैं। यहां आवास की अच्छी सुविधाएं हैं।

कच्छल द्वीप पहुंचने के लिए पोर्ट ब्लेयर से सरकारी फेरी ही सबसे अधिक सुविधाजनक और आसानी से सुलभ साधन है। यहां से लगभग आठ घंटे लगते हैं। पर्यटकों के ग्रुप हेतु

प्राइवेट फेरी भी हैं, जिनका शुल्क थोड़ा अधिक है लेकिन यात्रा में दो घंटे कम लगाती है। इसके अलावा, सीटें आरामदायक और खानपान आदि भी रहता है।

हैवलॉक द्वीप से भी कच्छल द्वीप के लिए विभिन्न ऑपरेटरों द्वारा संचालित नौका सेवाएं है। वहां कच्छल द्वीप तक पहुंचने के लिए लगभग 10 घंटे लगते हैं। पहले से अग्रिम बुकिंग करानी होती है। यहां से हेलीकॉप्टर जैसी सी-प्लेन सेवाएं भी मौजूद हैं।

बैरन द्वीप : यूनेस्को की ''विश्व धरोहर स्थल'' का दर्जा प्राप्त यह द्वीप पोर्ट ब्लेयर से 138 कि.मी. दूर उत्तर पूर्व में स्थित, भारत का एकमात्र (अभी भी) सक्रिय ज्वालामुखी है। अपने नाम के अनुरूप, तीन कि.मी.के क्षेत्र में फैला यह निर्जन द्वीप केवल सक्रिय ज्वालामुखी के कारण ही प्रसिद्ध है। बैरन द्वीप में सक्रिय ज्वालामुखी कैसा दिखता है? यह बताने के लिए पोर्ट ब्लेयर में सरकार द्वारा संचालित कियोस्क भी हैं। दुनिया के लोकप्रिय स्थानों में बैरेन द्वीप को दुनिया के शीर्ष स्कूबा डाइविंग गंतव्यों में से श्रेष्ठ माना जाता है। निर्मल जल की दृश्यता के साथ ही ज्वालामुखी का साफ तौर पर दिखना ही यहां का प्रमुख आकर्षण है। प्रशासन द्वारा नवंबर से फरवरी तक बैरेन द्वीप का दौरा करने की अनुमति दी जाती है। पर्यटक मात्र एक घंटे के लिए ही लाए जाते हैं। बोट की गतिधीमी कर, द्वीप का एक चक्कर लगाने के बाद एक स्थान पर रूक कर स्कूबा डाइविंग आदि का आनंद ले

सकते हैं। रात में ठहरने की अनुमति नहीं है।

बैरन द्वीप की यात्रा के लिए अपने पहचान पत्र, विवरण आदि के साथ ANIDCO के कार्यालय से दो दिन पहले सम्पर्क करना जरूरी है।

आवागमन के साधन :

पोर्ट ब्लेयर से बैरन द्वीप पर जाने के लिए बोट्स हैं। सीप्लेन की अतिरिक्त सेवा भी है। इनके बारे में पोर्ट ब्लेयर में फिनिक्स बे पर वाणिज्यिक केन्द्र के टिकट काउंटर सम्पर्क किया जाता है। सीप्लेन टिकट की लागत (लगभग)16000 रुपए प्रति व्यक्ति है।

हैवलॉक द्वीप और बैरन द्वीप के बीच की दूरी 140 कि.मी. है और इस द्वीप से, बैरेन द्वीप तक पहुंचने में लगभग 4 से 5 घंटे लगते हैं। यहां से बैरन द्वीप ले जाने के लिए सप्ताह में एक दिन छोटे जहाज उपलब्ध हैं। नेविगेशन में आसानी और पोर्ट अधिकारियों के निरंतर संपर्क में रहने के लिए यह जहाज जीपीएस सिस्टम से लैस हैं। जिनकी क्षमता - प्रति यात्रा अधिकतम आठ वयस्क होती है। टिकट 20,000 रुपए प्रति व्यक्ति है, जिसमें आने-जाने का किराया, पूरी यात्रा में आवश्यकतानुसार अल्पाहार तथा पेयजल की उपलब्धता के साथ ही मछली पकड़ने आदि जैसी सुविधाएं शामिल है। चार्टर यात्रा के माध्यम से हैवलॉक से बैरन द्वीप तक चार से पांच पर्यटकों के समूह को निजी चार्टर यात्रा में प्राथमिकता दी जाती है। इस यात्रा में समुद्र के मनोरम दृश्य देखने को मिलते हैं। यहां से चार्टर सी-प्लेन से यात्रा भी उपलब्ध है, जिससे सक्रिय ज्वालामुखी का एक हवाई दृश्य देखा जा सकता है।

नार्कोंदम द्वीप : अंडमान सागर में देश के सुदूर पूर्व में महत्वपूर्ण भू-आकृति विशेषताओं के साथ पृथ्वी के इतिहास के प्रमुख चरणों का प्रतिनिधित्व करता रहस्यमयी नार्कोंदम द्वीप पोर्ट ब्लेयर से लगभग 240 कि.मी दूर है। यह ज्वालामुखी मूल का 6.8 कि.मी लंबा एक छोटा द्वीप है। इस द्वीप की मुख्य चोटी समुद्र स्तर से 710 मीटर की ऊंचाई पर है। इसे भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण ने एक निष्क्रिय ज्वालामुखी के रूप में वर्गीकृत किया है। अंतिम बार जून 2005 में इस ज्वालामुखी से कीचड़ और धुआं निकलने की सूचना दी गई है।

कुछ ग्रंथों के अनुसार, इस द्वीप का नाम तमिल शब्द ''नारा कुंदरम'' (पिट ऑफ हेल यानि नरक का गड्ढा) से लिया गया है। यद्यपि नारकोंदम के घने उष्णकटिबंधीय वर्षावनों के कारण द्वीप तक पहुंचना असंभव सा ही है, फिर भी, इसकी अछूती सुंदरता उत्सुक यात्रियों को यहां

खींच लाती है। एक अन्य विशेषता जो द्वीप को अलग करती है, वह है इसकी पिरामिड जैसी संरचना, जो पानी के किनारे से बढ़ती है।

यह द्वीप उत्तर-मध्य अंडमान जिले के अंतर्गत डिगलीपुर तालुक का हिस्सा है। 1968 तक क्षेत्र निर्जन था। कुछ विदेशियों के यहां होने की सूचना मिलने के बाद सरकार ने यहां एक पुलिस चौकी बनाई थी (जिसे अब पुलिस स्टेशन बना दिया गया है), जिसमें 18 पुलिसकर्मियों के अलग-अलग दल रोटेशन पर तीन महीने की ड्यूटी करते हैं। अब पुलिस स्टेशन के पास एक कालोनी भी बनाई गई है। इसमें पुलिस के अलावा कुछ अन्य सरकारी कार्मिक तथा अधिकारी रहते हैं। नारकोंदम की ढलानों पर 1983 में एक लाइटहाउस की स्थापना की गई।

नार्कोंदम द्वीप के नीचे जंगल में घूमने का स्थान

नार्कोंदम द्वीप पर एशियाई हॉर्नबिल्स और ओ'ब्रायन प्रजाति को देखा जा सकता है। इसे IUCN की रेड लिस्ट में लुप्तप्राय माना जाता है और इसे भारत के वन्य जीवन संरक्षण अधिनियम की के तहत संरक्षित किया गया है। नार्कोंदम हॉर्नबिल के अलावा, यहां बौने (ड्वार्फ) पक्षियों जैसे अंडमानी उल्लू, निकोबारी चमगादड़, शियरवेटर्स, आर्कटिक स्कुअस, ब्रिडल, ब्लैक-नैप्ड और सूटी टर्न्स जैसे पक्षी भी देख सकते हैं।

हॉर्नबिल पक्षी

आवागमन: नार्कोदम द्वीप के लिए डिगलीपुर से चलने वाले जहाजों से पहुंचा जा सकता है। हेलीकाप्टर सुविधा भी उपलब्ध है। नार्कोदम द्वीप की यात्रा करना आसान नहीं है। खानपान जटिल है। साथ ही, गृह और पर्यावरण मंत्रालय और तटरक्षक बल से विशेष अनुमति भी आवश्यकता है। हालांकि, यह सब आपका टूर एजेंट या जिस होटल में आप ठहरे हैं, वह सब प्रबंध कर देते हैं। नार्कोदम में कोई आवास नहीं है, इसलिए ठहरने की भी व्यवस्था नहीं है। समुद्र तट फार्म के पास लकड़ी के तख्तों वाले तलों पर स्लीपिंग बैग में कुछ देर आराम कर सकते हैं। संक्षेप में, जगह एक साहसिक यात्रा है।

निकोबार द्वीप में मनोरम दृश्यों का अर्थ है सांस रोक देने वाले खूबसूरत समुद्री तट और जंगल जो अपने विस्तार और सुनहरी रेत की वजह से मन मोहक बन गए हैं। यहां के समुद्री तट सभी चिंताओं से मुक्त कर आत्मा को तरोताजा करने की ताकत रखते हैं और जिंदगी के खुशनुमा और मजेदार पल देते हैं। यह उन लोगों के लिए एक आदर्श स्थल है जो अपनी छुट्टियां पूरी तरह से किसी शांत जगह पर बिताना चाहते हैं। पर मत भूलिए कि यह यात्राएं काफी महंगी हैं।

***सम्प्रति :** चित्रकार, मूर्तिकार तथा फोटोग्राफर। वन्यजीव तथा समुद्र तटों की फोटोग्राफी के लिए 2001 में ताइवान सरकार के पर्यटन मंत्रालय से पुरस्कृत तथा 2002 में भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से सम्मानित। लेख के लिए चित्र उन्हीं के द्वारा दिए गए हैं। उनके यही चित्र गुगल तथा अन्य साइटों पर भी उपलबध हैं।

भूतनाथ

मौलिक व अप्रकाशित कहानी

- सुशांत सुप्रिय

रात के नौ सवा नौ का वक़्त रहा होगा। आकाश बादलों से घिरा हुआ था। हल्कीबूंदा-बांदी हो रही थी। बादलों के बीच में से कभी कभी आधा चाँद निकलता और झाँक कर फिर छिप जाता। हवा न ज़्यादा तेज़ बह रही थी, न कम। बीच-बीच में बिजली कड़कती और बादल गरजते। ऐसे समय में एक उदास और अकेला भूत किसी इलाक़े से गुज़र रहा था। सम्भवत: वह पुराने ज़माने का भूत था। शायद गाँधीजी और सुभाष चंद्र बोस जैसे स्वतंत्रता-सेनानियों का समकालीन रहा होगा। उसके बाक़ी सभी साथी भूत की योनि से मुक्त हो गए थे। पर यदि ईश्वर था तो वह शायद इस भूत को भुला चुका था। एक ही इलाक़े में रहते-रहते यह भूत अपनी नियति से इतना तंग आ गया था कि वह ऐसे मौसम में भी कहीं घूमने के लिए निकल पड़ा था। उसने देखा कि सामने एक आदमी सड़क पार कर रहा था। तभी पीछे से तेज गति से आ रही एक गाड़ी ने उसे टक्कर मार दी। गाड़ी वाला टक्कर मार कर रफ़ूचक्कर हो गया और वह आदमी सड़क पर लहुलुहान पड़ा था। आसपास से गुज़र रहे कुछ लोग वहां रुके। पर कोई भी उसकी मदद के लिए आगे नहीं आया। वह व्यक्ति दर्द से कराह रहा था पर लोग आपस में बातें कर रहे थे :

''ऐक्सिडेंट का मामला है। पुलिस-केस बनता है।''

''ड्राईवर ने शराब पी रखी होगी।''

''कैसे-कैसे लोग है पी कर गाड़ी चलाते हैं, कानून नाम की कोई चीज नहीं है।''

''देखा, गाड़ी वाला कैसे टक्कर मार कर भाग गया!''

''अमीर लोग खुद को समझते क्या हैं? कितने निर्दयी होते हैं लोग !''

''अरे, कोई इसकी मदद करो भाई, नहीं तो यह मर जाएगा ...''

यह सारा हादसा भूत की आँखों के सामने हुआ था। अपने ज़माने में भूत भी आम इंसानों की तरह स्वार्थी और मतलबी था। पर जब से वह मर कर भूत बना था, उसके चरित्र में बदलाव आ गया था। उसमें परोपकार और दूसरों की मदद की भावना बलवती हो गई थी। ऐसा लगता था जैसे वह अपने जीवन-काल के दौरान किए गए कार्यों के लिए अब प्रायश्चित्त करना चाहता था। जब उस घायल की मदद के लिए कोई आगे नहीं आया तो भूत से रहा नहीं गया। कोई इंसान बिना मदद के किसी भूत के सामने तड़प-तड़प कर मर जाए और भूत कुछ न करे, यह तो भूत के भूतत्व की तौहीन होती। लिहाज़ा भूत ने मोर्चा संभाला। उसने इंसान का रूप

धारण कर एक रिक्शा रुकवाया और घायल व्यक्ति को रिक्शे में लादकर सरकारी अस्पताल पहुंचाया।

भूत जब अस्पताल से बाहर आया तो रात के बारह बज रहे थे। बहुत अरसे से उसने बुरी तरह घायल किसी इंसान को इतने क़रीब से नहीं देखा था। उस लहुलुहान आदमी को देखकर भूत की रूह भी कांप गई थी। शायद वह भी थक गया था और उसने सोचा कि यहीं आस-पास में ही रहने के लिए कोई जगह ढूंढ़ी जाए।

कुछ ही दूरी पर एक रिहाइशी इलाक़ा था। पास ही एक पार्क था जिसके किनारे एक बहुत पुराना वटवृक्ष था। भूत को वह इलाक़ा पसंद आ गया। उसने सोचा - क्यों न कुछ दिन यहीं रहा जाए। शायद यहां का हवा-पानी रास आ जाए। यह सोच कर उस उदास और अकेले भूत ने उस वट-वृक्ष पर रहने की सोच कर वहीं अपना डेरा जमा लिया।

धीरे-धीरे भूत को वह इलाक़ा अच्छा लगने लगा। शाम के समय में पार्क में बच्चे खेलने के लिए आते। एक दिन भूत से रहा नहीं गया। वह भी इंसान का रूप धर कर बच्चों के खेल में शामिल हो गया। धीरे-धीरे वह इलाक़े के बच्चों से घुल-मिल गया। वह उनके साथ कबड्डी, गिल्ली-डंडा, हॉकी, फ़ुटबॉल और क्रिकेट खेलने लगा। बच्चे उससे पूछते -- अंकल, आपका नाम क्या है ? वह कहता -‘भूतनाथ।‘

बच्चे ख़ूब हंसते... धीरे धीरे वह बच्चों का लाड़ला अंकल बनकर 'भूतनाथ चाचा' हो गए। वह बच्चों के साथ खेलता और उन्हें स्वतंत्रता-संग्राम की कहानियां सुनाता था। पार्क के पास ही एक हैंड-पंप था। इलाक़े की महिलाएं वहां सुबह-शाम घड़ों और बर्तनों में पानी भरने आती थीं। भूतनाथ अक्सर पानी भरने में बीमार महिलाओं और वृद्धाओं की मदद कर देता था। धीरे-धीरे वहां की महिलाओं के भी 'भूतनाथ भैया' बन कर, इसी नाम से लोकप्रिय हो गया। शाम को पार्क के किनारे पड़ी बेंचों पर इलाक़े के वृद्ध आ बैठते थे। इंसान अपने बुज़ुर्गों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, यह बात भूतनाथ से छिपी नहीं थी। वह अक्सर इन उपेक्षित वृद्धों के पास जा बैठता। उनकी बातें सुनता। उनका दुख-दर्द सुनता और उन्हें गाँधीजी और सुभाषचंद्र बोस की कहानियां सुनाता। फिर अफ़सोस भी जताता कि इतनी कुर्बानियों के बाद प्राप्त की गई आज़ादी के महत्व को बाद की पीढ़ियों ने नहीं समझा। उन्होंने देश का क्या हालकर दिया। धीरे-धीरे वह इलाक़े के बुज़ुर्गों का भी चहेता 'भूतनाथ बेटा' हो गया। जब वह बुज़ुर्गों के पैर छूता तो वह उसे 'जीते रहो बेटा' कहकर आशीर्वाद देते और वह हँस देता।

भूतनाथ उन्हें बताता कि वह एक भूत है, तो लोग खूब हंसते। उनको लगा कि वह शायद उन से मज़ाक़ कर रहा है। कोई उसकी बात पर यक़ीन ही नहीं करता। भूतनाथ जहां भी मौजूद होता वहां उसके चारों ओर गेंदे के फूलों की ख़ुशबू छाई रहती। लोग जब उससे इस बारे में पूछते तो वह भोलेपन से कहता, ''दरअसल मैं एक आम आदमी का भूत हूं। यदि मैं किसी राजा, मंत्री या अमीर आदमी का भूत होता तो शायद मुझ में से गुलाब के फूलों की गंध आती।'' लोग उसकी इस बात को मज़ाक़ समझ कर खूब हंसते।

देखते-ही-देखते भूतनाथ पूरे इलाक़े के लोगों का चहेता बन गया। यदि बीच रात में किसी की तबीयत ख़राब हो जाती और उसे अस्पताल ले जाने की नौबत आ जाती तो भूतनाथ झट से वहां मौजूद हो जाता। यहां तक कि इलाक़े में किसी को किसी भी तरह की मदद चाहिए होती तो भूतनाथ वहां हाज़िर मिलता । कभी स्थानीय लोगों में किसी बात पर कहासुनी हो जाती तो भूतनाथ उन्हें समझा कर उन में सुलह करवा रहा होता, कभी वह सुबह बच्चों को स्कूल-बस में चढ़ा रहा होता तो कभी वह किसी बीमार गृहिणी की रसोई में उस परिवार के लिए खाना बना देता और इस तरह इलाक़े के लोग उसे अपना मानने लगे थे। कोई त्योहार होता, भूतनाथ लोगों के बीच ही दिखाई देता था। रक्षा-बंधन पर वह महिलाओं से राखी बंधवा रहा होता। होली के अवसर पर वह रंगों में रंगा दिखता तो दीवाली पर दीप जलाते और पटाखे चलाता मिलता, तो ईद पर वह लोगों से गले मिल रहा होता। भूतनाथ को लोगों से जितना स्नेह और सम्मान मिलता उससे ज़्यादा प्यार वह लोगों में बाँटता ।

एक बार उस इलाक़े में बहुत चोरी-डकैतियां होने लगीं। एक रात वहां एक हत्या भी हो गई तो लोग सकते में आ गए। लोग पुलिसवालों से शिकायत करते तो वे अपनी मजबूरियां गिना देते --क्या करें? इतना बड़ा इलाक़ा है, उस पर पुलिस-स्टाफ़ इतना कम है। ऊपर से वी.आई.पी. ड्यूटी, चुनाव-ड्यूटी ...हम तो बेबस से हो गए हैं। लोगों ने भूतनाथ को भी बताया और एक भूत के लिए यह कौन-सा मुश्किल काम था। दो दिनों में ही भूतनाथ ने इलाक़े के सारे चोर बदमाशों को पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया। अब तो पुलिस-वाले भी भूतनाथ का आदर करने लगे और उन्होंने कहना शुरू कर दिया - भूतनाथ तो हमारा अपना आदमी है। हमारा ही मुखबिर है। वह हमारे लिए काम करता है।

इस तरह भूतनाथ की लोकप्रियता बढ़ती चली गई। इलाक़े के लोग इलाक़े की समस्याओं के प्रति अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों की उदासीनता से बेहद क्षुब्ध रहते थे। सड़कें सालों तक टूटी-फूटी रहतीं। बिजली सुबह से शाम तक ग़ायब रहती। नगर निगम के नलों में कई बार पानी नहीं आता था। हार कर लोगों ने भूतनाथ से मदद करने के लिए कहा। अब भूतनाथ के लिए

यह कौन-सा मुश्किल काम था। एक दिन एक, दूसरे दिन दूसरी, तीसरे दिन तीसरी...और पूरे इलाक़े में नई सड़कें बिछ गईं। इलाक़े में चौबीस घंटे बिजली रहने लगी। दो दिन बाद ही नगर पालिका के नलों में सारा दिन पानी आने लगा। इलाक़े के लोगों के हर्ष का ठिकाना नहीं रहा। सब यह मानने लगे कि यह भूतनाथ का ही काम है। उसकी पहुंच ऊपर तक है जो सारे काम फटाफट हो रहे हैं। उसकी लोकप्रियता आसमान छूने लगी। जब ऐसी ख़बर फैली तो अख़बार वाले और टी.वी. चैनल वाले भूतनाथ का इंटरव्यू लेने के लिए इलाक़े का चक्कर लगाने लगे। पर भूतनाथ का अता पता ही नहीं होता। वह किसी के सामने नहीं आता था। इस बीच कुछ लोगों को एक विचार सूझा। उन्होंने भूतनाथ जी को आगामी विधानसभा के चुनावों में इलाक़े से उम्मीदवार घोषित करने की तैयारी करनी शुरू कर दी।

उनका मानना था कि भूतनाथ जी एक सच्चे समाज-सेवी हैं। इस पर किसी ने चुटकी ली कि अब जीवित लोगों से ज़्यादा 'मृतात्माएं' ही इंसानों का दुख-दर्द समझ सकती हैं। इलाक़े में नारे लगने लगे - हमारा नेता कैसा हो, भूतनाथ भइया जैसा हो । इलाक़े के पढ़े-लिखे लोगों ने इस प्रस्ताव के समर्थन में हस्ताक्षर-अभियान चलाया और एक मशाल-जुलूस निकाला गया। पर भूतनाथ को जब लोगों की इस मुहिम का पता चला तो उसने विनम्रता पूर्वक इंकार कर दिया। इसकी वजह कोई नहीं जानता। कुछ लोगों ने दबी ज़बान से ज़रूर यह कहा कि शिष्ट और शालीन लोग राजनीति से दूर ही रहते हैं। कारण चाहे जो भी रहा हो, भूतनाथ के इंकार की वजह से राज्य एक अच्छे आदमी के राजनीति में आने की ऐतिहासिक घटना से वंचित रह गया जब भूतनाथ जैसा कोई जनता का सच्चा सेवक पहली बार किसी विधानसभा का सदस्य होता।

उधर कुछ लोग क्रिकेट के विश्वकप में भारत की हार से इतने पीड़ित थे कि उन्होंने इलाक़े में पोस्टर छपवा कर जगह जगह चिपका दिए जिसमें BCCI से पुरज़ोर मांग की गई कि भूतनाथ को भारतीय क्रिकेट टीम में एक आलराउंडर के रूप में शामिल करें क्योंकि लड़कों के साथ पार्क में क्रिकेट खेलते समय भूतनाथ जिस तरह से न केवल चौके-छक्कों की झड़ी लगा देता था बल्कि वह अपनी सधी हुई गेंदबाज़ी से कई बार हैट-ट्रिक भी ले चुका था। यही नहीं, भूतनाथ ने हॉकी और फ़ुटबॉल के खेलों में भी कमाल कर रखा था। जब वह गोलकीपर बन जाता तो गेंद की क्या मजाल थी कि वह गोलपोस्ट के भीतर जा पाती। देखते-ही-देखते लोगों की यह मांग भी ज़ोर पकड़ने लगी कि भारतीय हॉकी और फ़ुटबॉल के उद्धार के लिए भूतनाथ जी को राष्ट्रीय हॉकी और फ़ुटबॉल टीमों में भी स्थान दिया जाए। लोगों को विश्वास था कि ओलम्पिक खेलों में सौ करोड़ लोगों वाले देश भारत के लिए स्वर्ण- पदक का अकाल, केवल और केवल भूतनाथ ही दूर कर सकता है। पर एक बार फिर भूतनाथ ने विनम्रतापूर्वक हाथ जोड़ कर

लोगों से कहा कि वे ऐसी बातें नहीं करें। इस तरह देश एक बार फिर उस ऐतिहासिक अवसर से वंचित रह गया जब भूतनाथ जैसा कोई आदमी किसी खेल की राष्ट्रीय टीम में शामिल हो कर अंतरराष्ट्रीय मंचों पर देश का नाम रोशन करता।

इधर कुछ दिनों से भूतनाथ कुछ चिंतित सा दिखने लगा था। हुआ यह था कि इलाक़े के कुछ लोगों ने पहले उससे उसकी जाति पूछी, फिर कुछ लोग उसका धर्म पूछने लगे। भूतनाथ चकरा गया। उसे मरे हुए साठ साल से भी अधिक हो चुके थे। इस लंबे अरसे में वह अपनी जाति या धर्म के बारे में सब कुछ भूल चुका था। वैसे भी भूतों में कोई जाति-व्यवस्था तो होती नहीं और न भूतों में धर्म के नाम पर कोई विभाजन होता है। आजादी की लड़ाई में भूतनाथ को कभी जाति या धर्म के बिल्ले या पट्टे की ज़रूरत महसूस नहीं हुई। भूतनाथ ने अपने दिमाग़ पर बहुत ज़ोर डाला कि शायद कुछ याद आ जाए कि वह किस जाति या धर्म का था, पर निराशा ही हाथ लगी। दरअसल वह तो इंसानियत का भूत था। यूं भी इंसानों में अब इंसानियत बची ही कहां थी? भूतनाथ के बारे में इलाक़े के लोग अब जाति और धर्म के धड़ों में दिखने लगे थे। सवर्णों का यह कहना था कि भूतनाथ जैसा सर्वगुण-सम्पन्न व्यक्ति अवश्य किसी उच्च कुल का ही हो सकता है। दूसरी ओर इलाक़े के दलितों का यह दावा था कि भूतनाथ जैसी शख़्सियत का स्वामी कोई दलित ही हो सकता था। इस विवाद के चलते दोनों पक्षों में तनाव बन गया था।

भूतनाथ ने दोनों पक्षों को समझाने की कोशिश की पर किसी पर भी कोई असर नहीं हो रहा था। वह अपनी-अपनी बात पर अड़े हुए थे। प्रशासन अभी इस समस्या से जूझ ही रहा था कि एक राजनीतिक दल ने यह घोषणा कर दी कि भूतनाथ जी गर्व से सारे हमारे त्योहार मनाते हैं। इसलिए वह एक देशभक्त हिंदू है और आगामी चुनावों में उनकी राष्ट्रवादी पार्टी उसे अपना उम्मीदवार बनाएगी। एक अन्य दल ने इस बात पर कड़ा ऐतराज़ जताया। उस पार्टी का कहना था कि भूतनाथ तो हमेशा से ही ईद और मोहर्रम मनाता रहा है। इसलिए वह हमारा आदमी है। लिहाज़ा आगामी चुनावों में वह उसे अपने उम्मीदवार के तौर पर खड़ा करेगी। इससे पहले कि भूतनाथ कुछ समझ पाता, एक दिन अचानक स्थिति बेक़ाबू हो गई। भूतनाथ के नाम पर, कुछ शरारती तत्वों ने इलाक़े में दंगे शुरू कर दिए जिनमें कई बेक़सूर लोग मारे गए। प्रशासन ने इलाक़े में कर्फ़्यू लगा दिया और गलियों में अर्द्ध-सैनिक बल गश्त करने लगे।

भूतनाथ बेचारा सन्न रह गया। वह तो लोगों का प्यार पाना चाहता था और बदले में लोगों को स्नेह और सम्मान देता था। उसके कारण लोग एक दूसरे के ख़ून के प्यासे हो जाएंगे, ऐसा तो उसने कभी सोचा ही नहीं था। उसका दिल खट्टा हो गया। दिल पर पत्थर रखकर उसने फ़ैसला किया कि अब इस इलाक़े चले जाना ही सब के हित में होगा और उसी रात भारी

मन से भूतनाथ ने वह इलाक़ा छोड़ना ही उचित समझा। रात के बारह बज रहे थे। आकाश में चांद और सितारे स्तब्ध से खड़े थे। जाने से पहले भूतनाथ ने अंतिम बार उस इलाक़े की ओर मुड़ कर देखा, जहां उसे बहुत प्यार मिला था। पर वहीं उसका इंसानों से मोहभंग भी हुआ था। यदि भूत रोते होंगे तो उस रात भूतनाथ ज़रूर रोया होगा।

इलाक़े की एक युवती को भूतनाथ अच्छा लगने लगा था। वह भूतनाथ से बातें करके ख़ुश होती थी। भूतनाथ के चले जाने के बाद वह युवती गुमसुम, खोई-खोई और उदास रहने लगी। कहा जाता है कि इलाक़े में फिर किसी ने उसे कभी हंसते हुए नहीं देखा। भूतनाथ न मालूम कहां चला गया था। कुछ दिनों के बाद इलाक़े में तनाव कम हो गया। धीरे- धीरे स्थिति सामान्य हो गई। इलाक़े के कुछ लोगों ने भूतनाथ को शिवजी का अवतार मान कर एक मंदिर बनाया और उस में भूतनाथ की प्रतिमा स्थापित कर के पूजा-अर्चना शुरू कर दी। इलाक़े के कुछ लोगों ने भूतनाथ को एक पहुंचा हुआ फ़क़ीर क़रार दे दिया। उन्होंने भूतनाथ की मज़ार बना ली जहां चादर चढ़ाई जाने लगी और धागे बांध कर मन्नतें मानी जाने लगी। लेकिन इलाक़े के ज़्यादातर लोगों का कहना है कि जब रात में आकाश बादलों से घिरा हुआ होता है, हल्की बूंदा बांदी हो रही होती है, बादलों के बीच में से कभी-कभी आधा चाँद निकलता है और झांक कर छिप जाता है, बीच-बीच में बिजली कड़कती है और बादल गरजते हैं और हवा न ज़्यादा तेज़ बह रही होती है, न कम, तब उन्होंने उदास और अकेले भूतनाथ को कभी अस्पताल के पास, कभी पार्क के किनारे बरगद के वृक्ष के पास देखा है। जब लोग उसके पास जाते हैं तो वह ग़ायब हो जाता है।

ज़्यादातर लोग अब मानते हैं कि भूतनाथ असल में भूत ही था। उनका अपना प्यारा भूत, जिसे उन्होंने अपनी ग़लतियों की वजह से हमेशा के लिए खो दिया। और कुछ हुआ हो या न हुआ हो, भूतनाथ के जाने के बाद इलाक़े के लोगों का भूतों के प्रति नज़रिया ज़रूर बदल गया है। भूत दयालु, परोपकारी, मददगार और सुहृदय भी हो सकते हैं, ऐसा तो किसी ने पहले कभी सोचा भी नहीं था ।

***सम्प्रति : लोकसभा, भारत सरकार में अधिकारी। ई-मेल: sushant1968@gmail.com**

'जब माँ घर में होती है, तब सब कुछ सही रहता है।'
–इवान तुर्गनेव (रूसी लेखक)

गुजरात

सूर्य मंदिर : मोढ़ेरा

-आशाबेन पटेल

मेहसाणा के अद्भुत मोढ़ेरा सूर्य मंदिर में जाने से मन में विचारों की एक अजब सी लहर उठने लगती है। मोढ़ेरा की इस आश्चर्यजनक संरचना की सटीकता और इसके पीछे हजारों लोगों की मेहनत हमें हैरान कर देती है। पुष्पावती नदी के तट पर बना, मोढ़ेरा का सूर्य मंदिर, आज भी, एक शानदार खंडहर के रूप में खड़ा है। एक ऐसी पहेली जो हमें समय के अतीत में ले जाती है।

मोढ़ेरा का सूर्य मंदिर सोलंकी साम्राज्य के स्वर्ण युग की उत्कृष्ट कृति है जो उस युग की महिमा और भव्यता को दर्शाता है। सूर्य मंदिर के अवशेष उस समय के अवशेष हैं जब प्राकृतिक तत्वों अग्नि, वायु, पृथ्वी, जल और आकाश की श्रद्धा वैदिक देवताओं की असंख्य अभिव्यक्तियों के साथ अपने चरम पर थी। प्राकृतिक तत्वों की वंदना करने वाले प्राचीन दर्शन और मनुष्य के साथ इसके जुड़ाव को जीवन चक्र का प्रमुख बल और ऊर्जा माना गया है।

मंदिर के शांत परिसर के चारों ओर टहलने से आपको ऊर्जा की सकारात्मक रूप से मजबूत आभा का अहसास होता है, एक ऐसी जगह जो इसके माध्यम से ऊर्जा को करीब लाती है।

मोढ़ेरा के बारे में....

मोढ़ेरा मंदिर का निर्माण 11वीं शताब्दी की शुरुआत में, चालुक्य वंश के राजा भीम प्रथम के शासनकाल में हुआ था। स्कंद और ब्रह्म पुराणों में भी मोढ़ेरा का उल्लेख मिलता है। मोढ़ेरा और इसके आसपास के क्षेत्र को पौराणिक रूप से, धर्मारण्य के रूप में संदर्भित किया गया है।

इतिहासकार ए.के. मजूमदार के अनुसार, अपने राज्य की रक्षा के स्मरण के लिए इस सूर्य मंदिर का निर्माण किया गया हो सकता है। मुख्य मन्दिर, चालुक्य वंश के भीमदेव प्रथम के शासनकाल के दौरान बनाया गया था। 1024-25 के दौरान, महमूद गजनी ने भीमदेव के राज्य पर आक्रमण कर इसे हथियाने का असफल प्रयास किया था, लेकिन लगभग 20,000 सैनिकों की एक टुकड़ी ने युद्ध में उसे वापस जाने को विवश कर दिया और उसने भागते हुए सोमनाथ पर आक्रमण किया था। इसके तुरंत बाद भीम सोलंकी ने पुन: सत्ता सम्भाल ली। इसलिए मंदिर का मुख्य भाग, लघु और कुंड में मुख्य मंदिर 1026 ई के तुरन्त बाद बनाए गए थे। परिसर की पश्चिमी दीवार पर, उल्टा लिखा हुआ देवनागरी लिपि में "विक्रम संवत 1083" का एक शिलालेख है, जो 1026-1027 ईस्वी के अनुरूप है। कोई अन्य तिथि नहीं मिली है। चूंकि यह शिलालेख उल्टा है, इसे दृढ़ता से मन्दिर के निर्माण की तारीख के रूप में नहीं माना जाता है। कुछ इतिहासकारों के अनुसार, इस सूर्य मंदिर परिसर का निर्माण एक ही समय में नहीं हुआ था। 12वीं शताब्दी की तीसरी तिमाही में द्वार, मंदिर के बरामदे और मंदिर के द्वार और कर्ण के शासनकाल के दौरान कक्ष के द्वार के साथ नृत्य कक्ष को बहुत बाद में जोड़े गए थे। शैलीगत आधार पर, यह ज्ञात होता है कि इसके कोने के मंदिरों के साथ कुंड 11वीं शताब्दी की शुरुआत में बनाए गए थे। **इस स्थान को बाद में स्थानीय रूप से "सीता नी चौरी" और "रामकुंड" के नाम से भी जाना जाता है।**

मंत्रमुग्ध कला :

पूरे मंदिर को कमल के आकार की संरचना पर स्तंभित किया गया है और इसकी दीवारों पर हर इंच नुकीली और खूबसूरती नक्काशी है। एक ऐसी नक्काशी जो रामायण से महाभारत तक, मानव जीवन चक्र से लेकर कामशास्त्र तक हमारी संस्कृति के हर हिस्से का प्रतिनिधित्व करती है। पूरे मंदिर को तीन खंडों में विभाजित किया गया है। पहला है, सूर्य कुंड, जो मंदिर के

सामने एक गहरा, सीढ़ीनुमा तालाब है, जिसमें पहले शुद्ध पानी का भंडारण किया जाता था। लेकिन आजकल इसमें वर्षा जल संचित किया जाता है। यह माना जाता है कि पहले यहां एक भूमिगत झरना हुआ करता था। दूसरा है, सभा मंडप जो धार्मिक संगोष्ठियों और सम्मेलनों का स्थान हुआ करता था। इसके अलावा, तीर्थयात्रियों के बैठने और आराम करने के लिए भी इसका उपयोग किया जाता था। इस स्थान पर उनके लिए के लिए दीवारों के साथ भी बनाए गए स्लैब आज भी मौजूद हैं। आप खंभे और मेहराब के साथ मार्ग को पार करके गुड़ा मंडप या गर्भगृह तक पहुंच सकते हैं। तीसरा है गूढ़मंडप।

मोढ़ेरा मंदिर वास्तुकला की उल्लेखनीय तकनीकी भव्यता ग्रहों और सूर्य की स्थिति के आधार पर नियोजित इंजीनियरिंग है। मुख्य मंदिर या गर्भगृह को विषुव के दौरान सूर्योदय और सूर्यास्त की किरणों पर केंद्रित किया गया है। जिस तरह से संरचना को संरचित किया गया है, यह इक्विनॉक्स के दिनों पर सुनिश्चित किया गया था। सूर्य की नरम, रैखिक किरणों को सूर्यदेव की मूर्ति पर लाने का अदभुत प्रयास किया गया था। मोढ़ेरा सूर्य मंदिर वास्तव में आपको अजीब लग सकता है, जहां अद्वितीय रचनात्मकता और कठिन परिश्रम की सही तस्वीर देख सकते हैं।

कुछ तथ्य....

मंदिर का निर्माण सोलंकी वंश के राजा भीमदेव प्रथम ने करवाया था। सोलंकी वंश के राजा मुख्य रूप से भगवान सूर्य देव की अपने कुल देवता के रूप में आराधना करते थे। सम्भवत: इसीलिए मंदिर में भगवान सूर्य के आलावा किसी भी अन्य देवता की मूर्ति नहीं है।

अन्य दिनों में, गर्भगृह से पहले दो खंभे सूर्य की स्थिति के अनुसार पूरे दिन रोशन रहते थे। यह सभी अब केवल कल्पना तक ही सीमित हैं। सभा मंडप अभी भी 52 स्तंभों पर खड़ा है, जिसमें एक वर्ष में 52 सप्ताह दर्शाए गए हैं। इन पर सूर्य की नक्काशी, अन्य चार तत्वों यानि ''वायु, जल, पृथ्वी और अंतरिक्ष'' की एकता दीवारों पर देखी जा सकती है।

इन दीवारों पर सूर्य देव के बारह अलग-अलग पक्षों (हर महीने के लिए) को देखा जा सकता है। पौराणिक रूप से, मुख्य मंदिर के कुंड से गूढ़मंडप तक की पैदल यात्रा को मोक्ष यात्रा माना जाता था। इस मंडप में महमूद गजनी द्वारा लूटे जाने से पहले सूर्य देव की मूर्ति स्थापित थी।

मोढ़ेरा का विश्व प्रसिद्ध सूर्य मंदिर, गुजरात के मेहसाणा जिले में पाटन से 30 कि.मी. दक्षिण में पुष्पावती नदी के किनारे बसे मोढ़ेरा नामक गांव में है। अहमदाबाद से इसकी दूरी तकरीबन सौ कि.मी. है। 2014 में, मोढ़ेरा के सूर्य मंदिर को यूनेस्को की ''विश्व धरोहर स्थलों की सूची'' में शामिल किया गया है। अत: अब यह एक विश्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक धरोहर है और भारतीय पुरातत्व विभाग के संरक्षण में देख रेख की जाती है। देश विदेश से प्रति वर्ष लाखों श्रृद्धालु और पर्यटक इसकी बनावट और सुन्दरता देखने ही मोढ़ेरा आते है। वर्तमान समय में इस मंदिर में कोई पूजा-अर्चना नहीं की जाती है ! **(मंदिर में लगा स्वर्णमंडित चित्र)**

गूढ़मंडप

गूढ़मंडप का आकार 51 फीट 9 इंच और 25 फीट 8 इंच है। यह लगभग समान रूप से सभागार, गर्भगृह और धर्मस्थल में विभाजित है। दोनों छोटे पक्षों में से प्रत्येक पर एक प्रक्षेपण के साथ आयताकार हैं और प्रत्येक लंबे पक्षों पर दो अनुमान हैं। छोटे पक्षों पर ये अनुमान तीर्थ के प्रवेश द्वार और पीछे का निर्माण करते हैं। गुढ़मंडप की बाहरी दीवार के तीन अनुमानों में प्रत्येक तरफ खिड़कियां थीं और पूर्व प्रक्षेपण में द्वार था। उत्तरी खंड में इन खिड़कियों में छिद्रित पत्थर के पर्दे (दीवारें) है लेकिन दक्षिणी खंड गायब है। प्रदक्षिणा मार्ग का निर्माण गर्भगृह की दीवारों और गुढ़मंडप की बाहरी दीवारों के बीच से होता है। मार्ग की छत में पत्थरों के स्लैब आज भी देखा जा सकता है। इसका शिखर अब मौजूद नहीं है।

सभामण्डप, गूढमण्डप के साथ जुड़ा हुआ नहीं है, बल्कि एक अलग संरचना के रूप में इसे थोड़ा दूर रखा गया है। दोनों एक पक्के मंच पर बने हैं। इनकी छतें बहुत पहले ढह गई थीं, अब बस उसके कुछ निचले हिस्से ही बचे हैं। दोनों छतें 15 फुट नौ इंच व्यास की हैं, लेकिन अलग-अलग तरीके से बनाई गई हैं। इसका न्याधार मंच (या प्लिंथ,एरिया) उल्टे कमल के आकार का है।

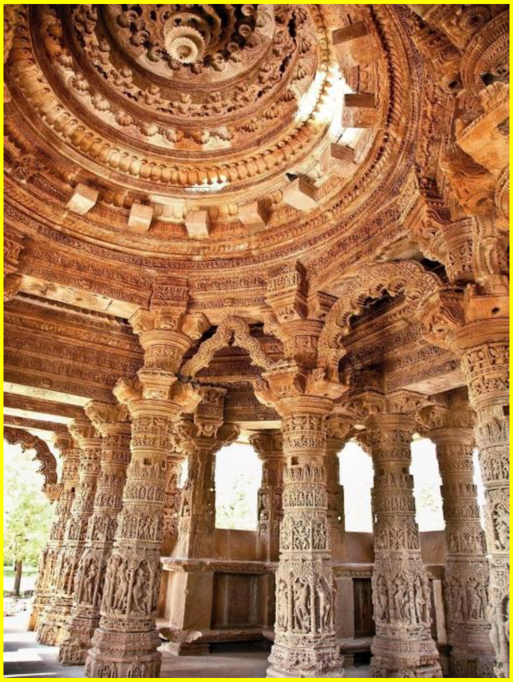

गूढ़मंडप यानि गर्भगृह की ऊंचाई 11 वर्ग फीट के आसपास है । मंदिर में दो कक्ष थे; ऊपरी कक्ष के स्तर के नीचे एक कक्ष है। ऊपरी कक्ष का फर्श अब गिर गया है जहां कभी सूर्य देव की मूर्ति स्थापित थी। यह मूर्ति अब एक गड्ढे में है। निचले कक्ष का उपयोग संभवतः भंडारण के लिए किया जाता होगा। मंदिर के अंदर की दीवारें साधारण हैं लेकिन बाहरी दीवार को सजाया गया है। प्रवेश द्वार के साथ नर्तकियों और खूबसूरत ताकों में सूर्य के बैठे चित्र उकेरे गए हैं। गर्भगृह को इस तरह से बनाया गया है कि उगते सूरज की पहली किरणें सौर विषुव के दिनों में सूर्य की छवि को रोशन करती हैं और ग्रीष्म संक्रांति के दिन, सूर्य सीधे मंदिर के ऊपर चमकता है।

भारत में विश्व प्रसिद्ध अन्य सूर्य मंदिर :

देश में तीन सूर्य मंदिर हैं। पहला जम्मू में स्थित मार्तंड मंदिर (8वीं शताब्दी ई.) दूसरा गुजरात में मोढ़ेरा का सूर्य मंदिर (11वीं शताब्दी ई.) और तीसरा ओड़िशा का कोणार्क मंदिर, (13वीं शताब्दी ई.)। सूर्य मंदिर मोढ़ेरा में विशुद्ध सोने से बनी भगवान सूर्य देव की विशाल प्रतिमा है। इसके अलावा इस मंदिर में सात घोड़े वाला रथ भी बनाया गया था, जिसमे भगवान सूर्य देव की प्रतिमा को विराजित किया गया है। सूर्योदय के समय, सूर्य की पहली किरण सूर्य मंदिर पर पड़ती थी। आज भी पर्यटकों को भोर में अक्सर यह अद्भुत दृश्य देखने को मिलता है।

मंदिर के सभामंडप के आधार और दीवारों को अद्वितीय नक्काशियों के साथ कई हिस्सों में विभाजित किया गया है। पीठ या अधिशेष, आधार में दो वर्ग हैं (जिन्हें भट कहा जाता है) और उसके बाद एक आयताकार नक्काशी (निचला भाग उत्तल और ऊपरी भाग अवतल) होता है। इसके बाद पद्मा या पद्मका है, जिसे एक उल्टे कमल के रूप में ढाला गया है। इसके ऊपर पतला सांचा है जिसे छाजा कहते हैं। अगले भाग में अलिंग द्वारा अलग किया गया एक और

छज्जा है। उसके अगले भाग में व्यापक रूप से फूल तथा पत्तियों और गजथरा पर हाथियों के चित्र उकेरे गए हैं। नरथरा में विभिन्न दृष्टिकोणों में पुरुषों के चित्र अंकित हैं।

मंडप में सुन्दरता से गढ़े पत्थर के स्तम्भ अष्टकोणीय योजना में खड़े किये गये है जो अलंकृत तोरणों को आधार प्रदान करते हैं। मंडप की बाहरी दीवारों पर चारों ओर आले (ताक) बने हुए हैं जिनमें 12 आदित्यों, दिक्पालों, देवियों तथा अप्सराओं की मूर्तियां प्रतिष्ठापित हैं। त्रिकोणीय योजना में बना सभामण्डप भी सुन्दर स्तम्भों से युक्त है।

सभामण्डप में चारों मुख्य दिशाओं से प्रवेश हेतु अर्धवृतीय अलंकृत तोरण हैं। सभामण्डप के सामने एक बड़ा तोरण और इसके ठीक सामने एक आयताकार कुंड है, जिसे "सूर्य कुण्ड"' कहते हैं (स्थानीय लोग इसे "राम कुण्ड" कहते हैं।) कुण्ड के जल-स्तर तक पहुंचने के लिये इसके अंदर चारों ओर प्लेटफार्म तथा सीढ़ियां बनाई गई हैं। वहां कुंड के भीतर कई शीतलामाता, गणेश, नटेश (शिव), शेषशायी-विष्णु तथा अन्य देवी-देवताओं को समर्पित छोटे बड़े मंदिर भी बनाए गए हैं

मोढ़ेरा उत्तरायण महोत्सव :

मोढ़ेरा का सूर्य मंदिर, एक वास्तुशिल्प चमत्कार है जो इसके इतिहास और इसके संरक्षक, सोलंकियों की भव्यता का वर्णन करता है। इसकी भव्यता को बनाए रखने के लिए वार्षिक ''उत्तरायण महोत्सव'' का आयोजन किया जाता है। मोढ़ेरा संगीत उत्सव को उत्तरायण महोत्सव के नाम से जाना जाता है। यह देश के संगीत, नृत्य और संस्कृति के सबसे प्रसिद्ध समारोहों में से एक है। गुजरात पर्यटन निगम लि. महोत्सव के तीन दिवसीय कार्यक्रम का

आयोजन करता है। प्रदेश की लोककलाओं के प्रदर्शन से मोढ़ेरा महोत्सव स्वर्णिम इतिहास के अतीत में ले जाकर भारतीय नृत्य और संगीत की जीवंत विरासत का अनुभव करने का भी एक अवसर प्रदान करता है। कलाकार एक मिश्रित माहौल में मंदिर के तल पर उकेरे गए बलुआ पत्थर की मूर्तियों के बीच में लोकगीत गाते हुए, उस काल की किंवदंतियों का वर्णन करते हैं। अब इसमें एक दिन के शास्त्रीय संगीत और नृत्य के कार्यक्रम में देश के नामीगिरामी कलाकारों को भी आमंत्रित किया जाने लगा है।

नृत्य और संगीत के इस अविश्वसनीय महोत्सव का नाम सूर्य के ग्रह और खगोलीय विन्यास से लिया गया है। उत्तरायण में सूर्य उत्तर की ओर अपनी यात्रा शुरू करते हुए,एक ग्रह से दूसरे ग्रह पर स्थानांतरित होता है, इस अवधि को उत्तरायण कहते है। उत्तरायण के समय दिन लंबा और रात छोटी होती है। उत्तरायण में तीर्थयात्रा, धामों के दर्शन और उत्सवों का समय होता है।

उत्तरार्ध नृत्योत्सव :

निगम द्वारा जनवरी के तीसरे सप्ताह में ही उत्तरायण महोत्सव के बाद 'उत्तरार्ध महोत्सव' मनाया जाता है, जिसमें प्रत्येक वर्ष तीन दिवसीय नृत्योत्सव का आयोजन किया जाता है। इसका उद्देश्य शास्त्रीय नृत्य रूपों को उसी तरह के माहौल में प्रस्तुत करना है, जिसमें वे मूल रूप से प्रस्तुत किए जाते थे। देश के सभी क्षेत्रों से प्रसिद्ध नृत्य मंडलियां अथवा कलाकार अपने विभिन्न नृत्य रूपों और शैलियों का एक पैनोरमा प्रस्तुत करते हैं।

समारोह में कत्थक नृत्य प्रस्तुत करती - नम्रता रॉय

यह अद्‌वितीय आयोजन क्षेत्र के पारंपरिक नृत्य रूपों को प्रदर्शित करने के साथ एक मंच के रूप में कार्य करती है जो नृत्य या नृत्य के रूप में व्यक्त किए गए अन्य क्षेत्रों के सांस्कृतिक लोकाचार को दर्शाता है। इस अवसर पर लाल, पीली, हरी बत्तियों वाले साइकेडेलिक हूक, नुक्कड़ और नटखट(जलती-बुझती) रोशनियां सूर्य मंदिर को, जनवरी की अंधेरी रातों में समय और स्थान को प्रभावशाली बनाती हैं।

रंग बिरंगी रोशनियों के बीच गुजरात के लोकनृत्य (जनवरी,2021)

भगवान सूर्य देव के इस मंदिर में जो सुन्दर एवं मनोहर दृश्य दिखाई देते है, उनका शब्दों में बयां करना मुश्किल है। यह प्राचीन सभ्यता का अद्‌भुत नमूना है। मन्दिर के परिसर में सभा मंडल में 50 से ज्यादा स्तंभ है और सभी स्तंभों पर रामयण, कृष्ण लीला तथा महाभारत के समय के मनोहर दृश्यों की बहुत ही सुन्दर नक्काशी की गई है।

शिल्पकला का अद्‌भुत उदाहरण प्रस्तुत करने वाले इस विश्व प्रसिद्ध मंदिर की सबसे बड़ी खासियत यह है कि पूरे मंदिर के निर्माण में जुड़ाई के लिए कहीं भी चूने का उपयोग नहीं किया गया है। इस सभा मंडल में प्राचीन काल में धर्मसभाओं का आयोजन किया जाता था। लेकिन आज के समय में गुजरात के पर्यटन निगम द्वारा प्रत्येक वर्ष जनवरी के तीसरे सप्ताह में मंदिर के सभा मंडल में 'उत्तरार्ध महोत्सव' का आयोजन किया जाता है।

मोढ़ेरा कैसे पहुंचे

वायु मार्ग : निकटतम हवाई अड्डा अहमदाबाद है। अहमदाबाद से मोढ़ेरा सूर्य मंदिर लगभग एक सौ कि.मी. दूर है। यहां से मोढ़ेरा के लिए सरकारी तथा निजी बसों के अलावा टैक्सियां भी मिलती हैं।

रेल मार्ग : निकटतम रेलवे स्टेशन मेहसाणा है। यह एक महत्वपूर्ण स्टेशन है जहां पूरे देश से रेल गाड़ियां उपलब्ध हैं। यहां से मोढ़ेरा की दूरी 25 कि.मी. है। यहां से भी टैक्सियों के अलावा, नियमित अंतराल पर सरकारी बसों की सेवाएं उपलब्ध हैं।

जब आप अपने वाहन अथवा टैक्सी से जाते हैं, तो मेहसाणा से 25 कि.मी. की हरे खेत के बीच यह एक सुखदायक ड्राइव है। मोढ़ेरा के रास्ते में देवी बाहुचराजी के मंदिर का दर्शन एक अलग ही अनुभव मिलता है। पुष्पावती नदी की पृष्ठभूमि के साथ लगे पेड़ों और उन पर पक्षियों का कलरव सुन कर पर्यटक प्रकृति के साथ एक हो जाते हैं, तन मन को विश्राम मिलता है।

मोढ़ेरा सूर्य मंदिर कब जाये ?

यह सूर्य मंदिर पहाडियों के बीच स्थित है इस लिहाज से यहां मानसून के आसपास आना चाहिए क्योंकि बरसात के समय पहाडियों पर से आता पानी मंदिर के परसिर से हो कर गुजरता है तो बहुत ही मनमोहक लगता है। आमतौर पर, सितम्बर माह से जनवरी माह के दौरान यहां पहाडियों पर हरियाली छाई रहती है, जो अलग ही नजारा प्रस्तुत करती है।

इसलिए यदि आप अहमदाबाद की यात्रा करने की योजना बनाएं तो अपने यात्रा कार्यक्रम में मोढेरा के सूर्य मंदिर को शामिल करना न भूलें।

***सम्प्रति : अध्यापिका, जामनगर। पर्यटन में विशेष रूचि, गुजराती के समाचार पत्रों में स्वतंत्र लेखन, अतुल्य भारत में निरंतर योगदान** (चित्र लेखिका द्वारा प्रस्तुत)

****

काव्यांजलि

प्रकृति

- इन्दुकांत आंगिरस

सूरज की उगती किरणों के साथ ही
टूट जाती है रात की नींद
नींद अपनी अधखुली आँखों से
देखती है जंगलों को
सुनती है उनकी ख़ामोशी को
फैलने लगते हैं जंगल
और फैलने लगते हैं सपने
धूप, हवा, पानी, पर्वत, झरने
सब मिलकर गाते हैं
प्रकृति का गीत ,
सपनों की अधखुली आंखों में
गिरती हैं बारिश की बूंदें
शाम ओढ़ लेती है रात की पोशाक
सूरज एक बार फिर डूब जाता है,
गहरे समुन्दर में
हवा सहलाने लगती है रात की
पलकों को
नींद आ ही जाती है
थके मांदे सूरज को
गुज़र जाता है एक और दिन
प्रकृति लेती है करवट और
सब प्रतीक्षा करते हैं
अगली सुबह की।

*****सम्प्रति: लेखक, कवि और ब्लागर**

ग़ज़ल : **हसीं लम्हें**

-घनश्याम दास बैरवा

ऐ गुजरे वक्त के हसीं लम्हों, मुझे जरा दम तो लेने दो
नज़र भर, फिर देखूं तुम्हें,दिल ओ जां तो संभलने दो ।
यादों के दरीचे(1)में, उजालों से फैले गुलशन, बे-शुमार(2)
महकायें बिसरे एहसास,वो बाद ए सबा(3)तो मचलने दो।
माना मरती है हर शय(4) यहां, वक़्त के आग़ोश (5)में
रुसवाइयों(6) को तुम, फिर से जावेंदां(7)तो होने दो।
वो दर्द ए हयात(8), जो सहे थे कभी तनहा हमने
वो शिद्दत-ए-गम(9) ,मुझे फिर से तो परखने दो।
कभी हम थे शरीक ए गुनाह,जिंदगी की राह में
फिर मुझे एक बार, शरीक ए गुनाह(10) तो होने दो ।
ऐ गुजरे वक्त के हसीं लम्हों,
मुझे जरा दम तो लेने दो...

हिन्दी में अर्थ (1)झरोखे, (2)अनगिनित, (3)सुबह की हवा, (4)चीज, (5)आलिंगन, (6)बदनामियां, (7)अमर, (8)जीवन के दुःख, (9)दुःख की प्रबलता (10)अपराध में शामिल

***सम्प्रति : सहायक निदेशक, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, भारतपर्यटन कार्यालय, सिंगापुर**

कई भाषाएं और संस्कृतियां देखते हैं,
पर्यटन से आप बहुत कुछ सीखते हैं !

काव्यांजलि

मैं गंगा हूँ

- इन्दुकांत आंगिरस

देवभूमि गंगोत्री, हिमालय की कोख से जन्मी
मैं आतुर हूँ धरती की फैली हुई बांहों में
सदा सदा के लिए बहने को
धरती के रिसते ज़ख्मों की पीड़ा सहने को
करोड़ों लोगो की आस्थाओं के दीप
मेरी लहरों पर बेख़ौफ़ तिरते हैं,
मेरी लहरों पर चाँदनी के फूल खिलते हैं,
मेरी पवित्र लहरों को छू कर
सूरज की किरणें भी जगमगा उठती हैं ...
उदास, नाम आँखें भी मुस्करा उठती हैं,
पेड़, झरनें, मिट्टी, फूल ,कलियां, जंगल
पहाड़, गांव, शहरों से गुज़रती,
पर, मैं सिर्फ़ एक नदी नहीं
करोड़ों आत्माओं का विशवास हूँ
दुनिया की कोई भी मिसाइल
मेरी लहरों को भेद नहीं सकती,
दुनिया का कोई भी एटम बम,
मेरे पानी को फाड़ नहीं सकता,
किस जेट विमान का गगन भेदी शोर भी
मेरी लहरों के संगीत को दबा नहीं सकता
मैं तो अनादि काल से बहती चली आ रही प्रेम,शान्ति, विशवास की एक अनंत नदी हूँ ..
धूप, हवा, पेड़, झरने, मिट्टी,फूल, जंगल
पहाड़, गांव, शहर सभी में मेरी प्रतिछाया है
मेरी लहरें जन्म और मृत्य की अनाम माया है
मेरी पारस पवित्र लहरों को छू कर
मुरझायें फूल भी खिल उठते हैं
अधूरे सपने भी मुस्कराने लगते हैं
लोहे के सिक्के स्वर्णमुद्राओं में तब्दील हो जाते हैं।
स्वर्ण फूल दीपों के प्रकाश में जगमगा उठते हैं
मेरी लहरों में स्नान कर,
महाकाल की आत्मा भी मुस्कुराने लगती है
ज़िंदगी का अधूरा नग़मा गुनगुनाने लगती है
ये पहाड़, जंगल, झरनें एक दिन बदल जाएंगे;
मिट्टी ,फूल और आदमी सब बदल जाएंगे
लेकिन मैं सदियों सदियों तक
यूँ ही बहूँगी अनवरत
जन्म और मृत्यु की अनाम गाथा
प्रेम, शान्ति और विश्वास की अनंत नदी
मैं गंगा हूँ।**

सम्प्रति : कवि लेखक और ब्लाग्र, नई दिल्ली।

विभिन्नता को देखिए कई वेश में,
कुछ दिन गुजारिए, भारत देश में !

काव्यांजलि :	**-अनीता कुमारी**
(1) माँ जब धूप छन कर पेड़ों से, तुम पर पड़ती है तुम मुझे उगती हुई किरणों सी लगती हो । तुम बिखर सी जाती हो, पूरे आकाश में मेरे और तुम मुझे बस मेरी भोर लगती हो वह कौन है? जिसको नहीं इंतज़ार सुबह का मैं रात हूँ और तुम संवार कर, भोर करती हो । माँ ! मैं अंश हूँ तेरा, अपने स्पर्श से मुझे तुम हर रोज नया सा करती हो जब धूप छन कर पेड़ो से, तुम पर पड़ती है तो तुम मुझे उगती हुई किरणों सी लगती हो।	**(2) तू क्या है**? मुझे कुछ वक्त दे, जान सकूं कि 'तू' क्या है, मैं इबादत में हूँ लेकिन जानती नहीं दुआ क्या है। मैं रहती रही हूँ इस जिस्म में लेकिन, पर जानती नहीं मेरी रज़ा क्या है। जो खुदा हो गया मुहब्बत में लेकिन, वो जनता नहीं की वो क्या है ? आईना भी क्या झूठ बोला करते है, मुझे मै नहीं दिखती और वो पूछता है, तू क्या है? ***सम्प्रति : डाटा एंट्री ऑपरेटर, पर्यटन मंत्रालय**
(3) तुमने कहा था तुमने कहा था, मैं मौन हूँ तुम्हारे भीतर का, "क्या"अर्थ यह है मुझसे दूर होने का तुम भी मेरी तरह बेहिस सी जिंदगी जी रहे, ये शोर-गुल कैसे सह रहे, दुनियादारी निभाते हुए, क्या तुम भी कोई पाषाण ही रहे तुमने कहा था, मैं मौन हूँ तुम्हारे भीतर का।	

याद इन्हें भी कर लें ! **नरेन्द्र चंचल**

आज से करीब 50 साल पहले फिल्म 'बॉबी' (1973) में एक आवाज सुनाई दी थी। सलाहियत और कैफियत से भरी, आसमान को चीरती, तार सप्तक की बुलंदियों पर खेलती सुरीली वह तान थी नरेंद्र चंचल की। नरेंद्र चंचल का गाया वह गीत **'वे मैं नईं बोलणा जा'**, हर इंसान पर जादू-सा असर गया था। उन दिनों मुहम्मद रफी, मुकेश, मन्ना डे और महेन्द्र कपूर का बोलबाला था। फिल्मों में काम मांगने का अर्थ था ठोकरें खाना। पर चंचल को अचानक ही वह मौका मिल जो मिनटों में स्टार बना देता है। इस गीत ने नरेंद्र चंचल को फिल्मफेयर का 'बेस्ट मेल प्लेबैक सिंगर अवार्ड' दिलवा दिया। लेकिन बाद के दौर में उस आवाज को अपनी जमीन बनाने के लिए किन संघर्षों से गुजरना पड़ा वो कहानी हैरान करने वाली है।

एक साक्षत्कार में श्री नरेंद्र चंचल ने बताया था, ''1970 की बात है, वह अमृतसर में एक दुकान से पकौड़े लेकर अपने घर जा रहे था, जिस अखबार के टुकड़े में पकौड़े थे, उसमें मशहूर सूफी गायक बुल्लेशाह की कुछ पंक्तियां छपी थी। यह पंक्तियां मुझे इतनी पसंद आयीं कि हरेक कार्यक्रम में, उन्हें जरूर गाता था। उन दिनों एक ग्रुप के

साथ मिलकर, अलग- अलग शहरों में जागरण के प्रोग्राम करते थे। इसी दौरान ऐसा ही एक कार्यक्रम मुंबई में किया था। मुंबई के प्रोग्राम में भी मैंने वही पंक्तियां गाई।

मुझे नहीं पता था कि उस शो में राज कपूर भी आए थे। प्रोग्राम के बाद उन्होंने मुझे बधाई दी और अगले दिन अपने दफ्तर में मिलने को कहा। इतनी बड़ी हस्ती ने बुलाया, जिनके बारे में कभी सोचा भी नहीं था। राज साहब ने बुल्ले शाह की वही पंक्तियां सुनाने को कहा। जो इस तरह हैं,' 'बेशक मंदिर मस्जिद तोड़े, बुल्लेशा ये कहता, पर प्यार भरा दिल कभी न तोड़ो इस दिल में है दिलबर रहता, जिस पलड़े में तुले मोहब्बत उसमें चांदी नहीं तोलना, तौबा मेरी, ढोलना मैं नी बोलना, ओ' मैं नहीं बोलणा, जा, मैं नी बोलणा'' उन्होंने दोबार सुना और बहुत खुश हुए। राज कपूर उन दिनों बॉबी फिल्म बना रहे थे। राज साहब ने बॉबी फिल्म के एक गीत के लिए मेरा नाम फाइनल कर दिया। असल में यह बुल्लेशाह की एक रचना थी जिसे गीत के रूप में प्रस्तुत किया गया था। माता रानी की कृपा से वह गाना बहुत ही मशहूर हुआ और इससे मुझे कुछ और फिल्मों में गाने का मौका मिला।''

16 अक्टूबर, 1940, अमृतसर में जन्में, नरेंद्र बचपन में स्कूल जाने से घबराते थे। स्कूल जाने लगे तो उनके कुछ दोस्तों ने सोचा कि अगर स्कूल में खूब शरारतें करेंगे तो मास्टर जी स्कूल से निकाल देंगे। बस फिर क्या था शरारतें शुरू हो गई। पढ़ना लिखना कुछ नहीं, सजा मिलती या दो चार थप्पड़ लगते तो भी हंसते रहते और आखिर एक दिन स्कूल से निकाल दिए गए। नरेंद्र की शरारतों पर दादी उसे चंचल कहने लगी तो दोस्तों ने भी चंचल कहना शुरू कर दिया। उन्हें दिनभर खेलना और शरारतें करने में मजा आता था।

उनकी मां कैलाशवती घर में और जब कोई मौका मिलता पास के मंदिर और गुरूद्वारे में भजन-कीर्तन गाती थीं। नरेंद्र उनको ध्यान से सुनता और धीरे धीरे मां के सुर के साथ उसका स्वर भी मिलने लगा। इस तरह मां ने ही उसे भजन गाना सिखाया। समय के साथ उसका झुकाव खुद की तुकबंदी के गीतों की तरफ चला गया और वही भजन बन गए। मां ने ही उसे माता वैष्णो देवी पर भेंट बनाने और गाने हेतु प्रेरित किया। वह अक्सर वह अपनी खिड़की पर

खड़ा होकर, लकड़ी के किसी खिलौने को माइक बना लेता, खुद ही अनाउंसमेंट करता और फिर ऊंची आवाज में गाने लगता, कभी दरवाजे तो कभी बेंच बजाकर गाता और उसकी मोहल्ला स्तर की ऑडिएंस तैयार होती गई, धीरे-धीरे लड़के की शोहरत बढ़ने लगी, उसने अपने नाम के साथ हमेशा के लिए चंचल जोड़ लिया और उनको नरेंद्र चंचल के नाम से गाने लगा। आस-पास के इलाकों से बुलावे आने लगे। लड़के का गाना सुनने वाले उसे हार पहना कर सम्मानित करते, जब घर आता तो पिता जी की मार पड़ती थी।

उनके पिता चेतराम, शेयर मार्केट से जुड़े थे, तो अक्सर कोई भाव पता करने के लिए चंचल को एक जगह भेज देते थे। वह हैरान होता था कि यहां कोई चीज तो बिकती नहीं, फिर भाव किस बात का? अक्सर, वहां भी पिता के दोस्त उसे पकड़कर बैठा लेते, गाना सुनाने को कहते, कभी चाय-समोसा देते और कभी कोई पैसे भी दे देता। घर में छह भाई और एक बहन, परिवार बड़ा था और कमाई कम, फिर भी किसी तरह गुजारा होता था। एक बार शेयर मार्केट बुरी तरह गोता खा गया, पिता का काफी पैसा डूब गया। उस आर्थिक झटके ने पिता को तो हताश कर दिया लेकिन लड़के के लिए उसके प्रिय शौक के लिए रास्ते खोल दिए क्योंकि जहां बाकी भाइयों पर काम करने का दबाव था, वहीं लड़का गाने गाकर कुछ-कुछ कमाने लगा था।

अब उसने नरेन्द्र चंचल के नाम से भजन गाने शुरू किए, उस समय कैसेट का जमाना नहीं था। बस रिकार्ड बजते थे। उन्होंने बचपन से ही अपनी मां को माता रानी के भजन गाते सुना था। उनकी प्रेरणा से ही भजनों में रुचि बढ़ी थी, इसलिए चंचल अपनी पहली गुरु अपनी मां को माना करते थे। इसके बाद उन्होंने प्रेम त्रिखा से संगीत सीखा। फिर वह भजन गाने लगे।

चंचल ने 1974 में 'बेनाम' फिल्म में 'मैं बेनाम हो गया', 1974 में ही उन्होंने 'रोटी कपड़ा और मकान' में 'बाकी कुछ बचा तो महंगाई मार गई'। 'आशा' (1980) में नरेंद्र चंचल ने 'तूने मुझे बुलाया शेरा वालिए' गीतों को आवाज दी। इसके अलावा भी उन्होंने 1985 में 'काला सूरज' के लिए 'दो घूंट पिला दे' और 1994 में 'अनजाने' के लिए 'हुए हैं कुछ ऐसे वो हमसे पराए' गीत गाए। राजेश खन्ना और शबाना आज़मी अभिनीत फिल्म 'अवतार' में महेंद्र कपूर और आशा भोंसले के साथ नरेंद्र चंचल का गाया गीत 'चलो बुलाया आया है माता ने बुलाया है' आज भी बेहद प्रसिद्ध भेंटों में शुमार है।

चंचल ने अपने जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना के बारे में बताया कि घर के पास ही मां काली के मंदिर में उन्हें भेंट गाने के लिए बुलाया, उसी दिन उन्हें भजन रिकार्ड के लिए मुंबई जाना था। चंचल ने जानबूझकर कहा कि बीमार हूं और वह काली माता मंदिर में भजन गाने की बजाय भजन रिकार्ड करवाने मुंबई चले गए। मुंबई भजन रिकार्ड करते समय उनकी आवाज बंद

हो गई। उन्हें समझ आ गया था की मां काली के मंदिर में उन्होंने भजन गाने से इनकार की सजा मां ने दी है। वो अमृतसर आए, मां काली मंदिर में जाकर माफी मांगी तो आवाज वापस आ गई।

नरेंद्र चंचल को मुख्य रूप से माता के भजन गायक के रूप में जाना जाता था। उनके गीत के बिना हर दुर्गा पूजा अधूरी होती है। पूरे उत्तर भारत में उनका बड़ा नाम था। नरेंद्र चंचल की लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि नरेंद्र चंचल पिछले कई दशकों से कीर्तन और जगरातों की दुनिया में सक्रिय थे। चंचल का पहला भजन 'तेरे नाम दी जपा माला ओ शेरा वालिये' म्यूजिक एलबम में रिलीज हुआ, जिसने सारे रिकार्ड तोड़ दिए। वह कहते थे कि बस यही हसरत है कि भजन गाते-गाते ही आखिरी सांस लूं। और अंततः उन्होंने 22 जनवरी, 2021 को नई दिल्ली में अंतिम सांस ली। नरेंद्र चंचल प्रतिवर्ष वर्ष के अंतिम दिन की रात वैष्णो देवी जरूर आते थे और मां के दरबार में वैष्णो देवी में अपना गायन प्रस्तुत करते थे।

याद इन्हें भी कर लें-// "देख लो आज हमको जी भर के : सागर सरहदी"

जिला मनशेरा (अब पाकिस्तान में) के एक कस्बे बफ्फा में, ठेकेदार थान सिंह तलवार और प्रेम के घर 11 मई 1933 को जन्मे गंगा सागर जब आठवीं कक्षा में थे कि देश के बंटवारे से हो रही हिंसा से बचने के लिए अपना घरबार छोड़कर दिल्ली आना पड़ा। दिल्ली में कुछ वक़्त तक उनके परिवार को रिफ्यूजी कैम्प में रहना पड़ा। उनके पिता बफ्फा के बड़े ठेकेदार थे और बड़े भाई भी कारोबार कर रहे थे। एक भाई बटवारे से कोई दो साल पहले से ही मुंबई में नौकरी कर रहे थे। दोनों ने अपनी बचत से दिल्ली में भी दो कमरों का मकान ले लिया। इसलिए उन्हें दूसरे शरणार्थियों की तरह रिफ्यूजी कैम्प में ज़्यादा दिन नहीं गुज़ारने पड़े।

दिल्ली में मैट्रिक की पढाई करने के बाद, वह अपने बड़े भाई के पास मुंबई आ गए। वहीं बी.ए. किया और साथ ही जेबखर्च के लिए एक विज्ञापन एजेंसी में छोटी-मोटी नौकरी करने लगे। साहित्य में रूचि थी, फिल्मों का भी शौक था, बचपन से ही राज कपूर की फिल्में बहुत पसंद थीं, सो उर्दू में लघु कथाएं और बाद में नाटक लिखने लगे। इसके बाद एम.ए. में भी दाखिला लिया, पर नौकरी की भाग-दौड़ में पढाई पर ध्यान नहीं लगा पाए और फेल हो गए। इसके बाद पढ़ाई छोड़ दी और एक ब्रिटिश कंपनी में बतौर हिन्दी-उर्दू ट्रांसलेटर काम करने लगे। कुछ समय वहां काम किया और वहां से इस्तीफ़ा दे दिया और नाटक लिखने लगे। वह सोच चुके थे कि नाटकों के साथ फिल्मों में डायलॉग्स लिखेंगे।

सागर सरहदी

अब समस्या उठी एक उपनाम की। क्योंकि उस वक़्त के लेखक अपने नाम के साथ एक उपनाम या तखल्लुस जोड़ते थे, वैसे ही गंगा सागर ने भी किया। चूंकि वो सरहद पार से आए तो उन्होंने अपना नाम रखा "**सागर सरहदी**"।

फिल्मों में कहानी लिखने का पहला काम यश चोपड़ा ने दिया। कुछ यूं हुआ कि देश हिंदुस्तान-पाकिस्तान विभाजन पर केंद्रित उनके एक नाटक 'मिर्ज़ा साहिबा' का मंचन हो रहा था। सागर के भतीजे रमेश तलवार ने नाटक देखने यश चोपड़ा को बुलाया था। रमेश तलवार उस वक़्त तक 'दीवार', 'इत्तेफाक' जैसी फिल्मों में बतौर असिस्टेंट डायरेक्टर काम कर चुके थे। यश चोपड़ा को यह नाटक बहुत पसंद आया और उन्होंने सागर को एक रोमांटिक फ़िल्म कहानी लिखने का काम दे दिया। सागर ने दिए वक़्त में फ़िल्म लिख दी। यश चोपड़ा को तो यह कहानी बहुत पसंद आई पर फ़िल्म से जुड़े बाकी लोगों को सागर के लिखे सीन बहुत किताबी लगे। मगर यश चोपड़ा ने उन सबकी बात को काटते हुए बिना किसी ख़ास फ़ेरबदल के कहानी को पास कर दिया और फ़िल्म बनी **'कभी कभी'**। यहां से सागर सरहदी का फ़िल्मी सफ़र शुरू हुआ। इसके बाद सागर ने यश चोपड़ा के साथ 'नूरी', 'फासलें', 'सिलसिला' जैसी कईं यादगार रोमांटिक फिल्में दीं।

सागर सरहदी लगातार रोमांटिक हिट फिल्में तो दे रहे थे, लेकिन बड़े ही बेमन से। विभाजन का दर्द वह उन्हें जीवन में अंतिम वर्षों तक सालता था। उन्हें प्रेम की सपनीली दुनिया से ज़्यादा असल ज़िंदगी की कड़वी हकीकत बताने वाली कहानी में ज़्यादा दिलचस्पी थी, जो समाज को कुछ सोचने पर विवश करे। उन्होंने विभाजन के कठिन समय के कुछ अनुभवों को फिल्म 'नूरी' में दिखाया और इस दर्द को 'बाज़ार' में बयां किया। यश चोपड़ा ने इस कहानी पर फिल्म बनाने का वायदा किया था। लेकिन काफी समय बीत जाने के बाद भी यश ने उत्साह नहीं दिखाया तो सागर ने खुद ही इस पर फिल्म बनाने का फैंसला किया। उनकी आर्थिक स्थिति फ़िल्म बनाने लायक नहीं थी, तो शशि कपूर से फ़िल्म के इक्विपमेंट मांगने के लिए गए। शशि कपूर ने भी बिना कोई किराया लिए सारा ज़रूरत का सामान आर.के. स्टूडियो से दिलवा दिया और कहा कि फ़िल्म चल जाए तो पैसे दे देना और नहीं चले तो मत देना। यह फ़िल्म बनाने में यश चोपड़ा ने भी कुछ मदद की। पूरे तौर से बनकर फ़िल्म 'बाज़ार' 1982 की शुरुआत में रिलीज़ हुई और खूब चली, गोल्डन जुबली हुई। दर्शकों ने फ़िल्म को पसंद किया।

फ़िल्म की सफ़लता के बाद उन्होंने शशि कपूर का शुक्रिया करते हुए उनके सामान का पूरा किराया अदा कर दिया।

'बाज़ार' के बाद सागर सरहदी ने कई फिल्मों के संवाद लिखे। जिनमें 'चांदनी', 'सिलसिला', यश जौहर की 'फासलें', शाहरुख खान की पहली फ़िल्म 'दीवाना' और हृतिक रोशन की पहली फ़िल्म 'कहो ना प्यार है' के नाम उल्लेखनीय हैं। उन्होंने नवाज़ुद्दीन और अमृता सुभाष के साथ 'चौसर' नाम की एक और फ़िल्म बनाई थी। जिसे अंत तक कोई डिस्ट्रीब्यूटर नहीं मिला और फ़िल्म रिलीज़ नहीं हो पाई क्योंकि इस कहानी में नवाज़ एक ऐसे पति का किरदार निभा रहे थे, जो जुए में अपनी पत्नी को दांव पर लगा देता है। अपने वो काम को लेकर बेहद उत्साहित थे और 'बाज़ार-2' बनाना चाहते थे। वह अज़ीज़न बाई, (जो अंग्रेज़ी शासन में राज घरानों की नर्तकी थीं मगर वक़्त आने पर देश के लिए अंग्रेजों के खिलाफ़ युद्ध में शामिल हो गई थी) के जीवन पर भी कहानी लिख रहे थे।

सागर सरहदी को अपने जीवन के अंतिम वर्षों में अधूरेपन का गहरा अहसास खलता रहा। उनका अधूरा काम किसी ने खरीदा नहीं, अधूरी प्रेम कहानियां उनके बस्ते में पड़ी रहीं, उनकी आर्थिक रूप से कमज़ोर होने के कारण कभी पूरा करने की हिम्मत नहीं जुटा सके। कुछ शिकायत उन्हें आज की नई पीढ़ी से भी रही, जिसने किताबों से मुंह मोड़कर मोबाइल को अपना लिया।

जब उनसे एक इंटरव्यू में एक पत्रकार ने पूछा कि आप इस उम्र में भी इतने खुश कैसे रहते हैं? इस सवाल का जो उन्होंने जवाब दिया, वो बेहद टीस भरा था। उन्होंने कहा "कैसे कह सकते हैं आप कि मैं खुश हूं? हंस रहा हूं इसलिए ?"। एक बार में शायद ना समझ आए। अब सागर सरहदी का 88 साल की उम्र में, 21 मार्च 2021 को मुंबई में निधन हो गया। उनकी फ़िल्म 'बाज़ार' के एक गाने कि ये पंक्तियां लोग आज भी गुनगुनाते हैं...।

"देख लो आज हमको जी भर के
कोई आता नहीं है फ़िर मर के"

अतुल्य भारत की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित ।

प्रस्तुति : मोहन सिंह, कंसल्टेंट, अतुल्य भारत, पर्यटन मंत्रालय, नई दिल्ली।

पर्यटन मंत्रालय के

सचित्र समाचार और गतिविधियां

देखो अपना देश "ट्रेन द्वारा बौद्ध परिपथ की यात्रा" वेबिनार

17 जनवरी, 2021 : पर्यटन मंत्रालय ने 'देखो अपना देश' श्रृंखला में 16 जनवरी, 2021 को "ट्रेन द्वारा बौद्ध परिपथ की यात्रा" शीर्षक से एक रोचक वेबिनार का आयोजन किया। इस वेबिनार के माध्यम से भारत की समृद्ध बौद्ध विरासत को बढ़ावा देने और इसका प्रदर्शन करने पर ध्यान केंद्रित किया गया, इतना ही नहीं भगवान बुद्ध द्वारा देश भर में व्यक्तिगत रूप से भ्रमण किए गए स्थलों के अलावा उनके शिष्यों द्वारा बनाये गये बौद्ध मठों को दर्शाया गया है, जिसमें आधुनिक मठ भी शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, वेबिनार में भारत के बौद्ध स्थलों की यात्रा (विशेष रूप से ट्रेन द्वारा) और ठहरने की व्यवस्था के लिए दर्शकों को प्राथमिक जानकारी प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

पर्यटन मंत्रालय के उप महानिदेशक श्री अरुण श्रीवास्तव ने वेबिनार की शुरुआत करते हुए कहा कि भारत के बौद्ध पर्यटन में दुनिया भर के 50 करोड़ बौद्धों को "भारत-बुद्ध की भूमि" की तरफ आकर्षित करने की जबरदस्त क्षमता है। भारत में भगवान बुद्ध के जीवन से जुड़े कई महत्वपूर्ण स्थलों के साथ एक समृद्ध प्राचीन बौद्ध धरोहर है और दुनिया भर से आने वाले बौद्ध धर्म के अनुयायियों के मन में भारतीय बौद्ध विरासत के प्रति बहुत गहरी रुचि है। उन्होंने कहा कि बौद्ध धर्म एक महत्वपूर्ण शक्ति, एक प्रेरणा और सबसे बढ़कर, हमारी परंपराओं एवं रीति-रिवाजों का एक मार्गदर्शन है। संक्षेप में, संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में इसके अद्वितीय योगदान ने भूमि की धार्मिक विविधता को जोड़ने के अलावा, भारतीय सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध किया है।

भारतीय रेलवे खानपान और पर्यटन निगम (आईआरसीटीसी) के संयुक्त महाप्रबंधक (पर्यटन और विपणन) डॉ. अच्युत सिंह द्वारा यह वेबिनार प्रस्तुत किया गया था। डॉ. अच्युत सिंह ने भगवान बुद्ध के जीवन और उनकी शिक्षाओं के बारे में जानकारी देने के साथ इस कार्यक्रम की शुरुआत की। उन्होंने बताया कि आईआरसीटीसी बौद्ध परिपथ पर्यटन ट्रेन की कल्पना बौद्ध

धर्म के सबसे सम्मानित स्थलों की यात्रा करने के लिए की गई थी, जिनमें से वह स्थान भी शामिल है, जहां पर भगवान बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था। यह पर्यटक ट्रेन उन सभी स्थानों को कवर करती है, जिनका भगवान बुद्ध के जीवन और शिक्षाओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

श्री सिंह ने कहा कि यद्यपि लुम्बिनी भारत-नेपाल सीमा पर स्थित है, फिर भी बौद्ध परिपथ पर्यटन रेलयात्रा कार्यक्रम के दौरान सभी मेहमानों को भगवान बुद्ध की माता को समर्पित महामाया देवी मंदिर के अलावा अन्य पवित्र स्थलों के दर्शन प्राप्त करने तथा प्रार्थना करने का अवसर मिलता है। बोधगया में महाबोधि वृक्ष के नीचे भगवान बुद्ध को अनंत काल के लिए प्राप्त ज्ञान स्थल इस यात्रा कार्यक्रम में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, दुनिया भर से बौद्ध परंपराओं के अपने संगम के स्मारकीय सौंदर्य के चलते इसका विशेष धार्मिक और विद्वतापूर्ण महत्व है।

बौद्ध परिपथ पर्यटन ट्रेन-यात्रा कार्यक्रम को तैयार करने में बुद्ध के मूल उपदेश स्थल को शामिल करने का विशेष ध्यान रखा गया है, जहां से बौद्ध धर्म की उत्पत्ति हुई, वह स्थान जहां से इसके सभी विविध रूपों, संप्रदायों और श्रेष्ठता को फैलाया गया। यह स्थल जिसे सारनाथ के नाम से जाना जाता है, भारतीय संस्कृति की सबसे प्राचीन जगहों में से एक है और वाराणसी के समीप है। यहीं पर हर शाम पवित्र गंगा तट पर आयोजित गंगा आरती से मेहमानों को मंत्रमुग्ध होने का अवसर भी मिलता है।

भौतिक जगत के बंधनों में उनके जन्म से लेकर उनके अंतिम समय तक भगवान बुद्ध के जीवन वृतांत को देखते हुए, बौद्ध परिपथ पर्यटन ट्रेन की व्यापक यात्रा में कुशीनगर का महापरिनिर्वाण मंदिर भी शामिल है, जो बुद्ध की दिव्य आत्मा के यात्रा विश्राम की अंतिम सांसारिक स्थिति को दर्शाता है। बौद्ध धर्म में गहरी अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के इच्छुक व्यक्ति, बुद्ध द्वारा दिए गए धर्मोपदेशों पर चिंतन करते हुए इसकी गूढ़ता में तल्लीन हो सकते हैं, विशेष रूप से, जेतावाना मठ में।

अंत में, इस यात्रा को पूरा करने के निमित्त भव्य ताजमहल तैयार है, जो अतिथियों और पर्यटकों को आत्म-अनुशासन तथा सकारात्मक चिंतन के लिए प्रेरित करेगा। यह यात्रा समरसता वाली शांति प्रदान करती है।

‘देखो अपना देश’ वेबिनार **‘21वीं सदी में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की प्रासंगिकता’**

23 जनवरी, 2021 : पर्यटन मंत्रालय की देखो अपना देश श्रृंखला में 22 जनवरी 2021 को ‘21वीं सदी में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की प्रासंगिकता’ पर अपना 73वां वेबिनार आयोजित किया।

‘ओपन प्लेटफॉर्म फॉर नेताजी’ के प्रवक्ता एवं संयोजक श्री चन्द्र कुमार बोस ने इस वेबिनार को प्रस्तुत किया। श्री चन्द्र कुमार बोस सामाजिक मुद्दों पर कार्य करते हैं और भारत में मानवाधिकारों पर लोगों के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने वाले एक संस्थान इंडियन सोशलिस्ट डेमोक्रेटिक फोरम से जुड़े हैं। वह कोलकाता से बाहर तथा लंदन से संचालित नेताजी सुभाष फाउंडेशन के साथ जुड़े रहे हैं, जो एक अनुसंधान संस्थान है और आजाद हिंद फौज तथा सुभाष चन्द्र बोस से संबंधित सामग्री प्रस्तुत/ प्रकाशित करता है।

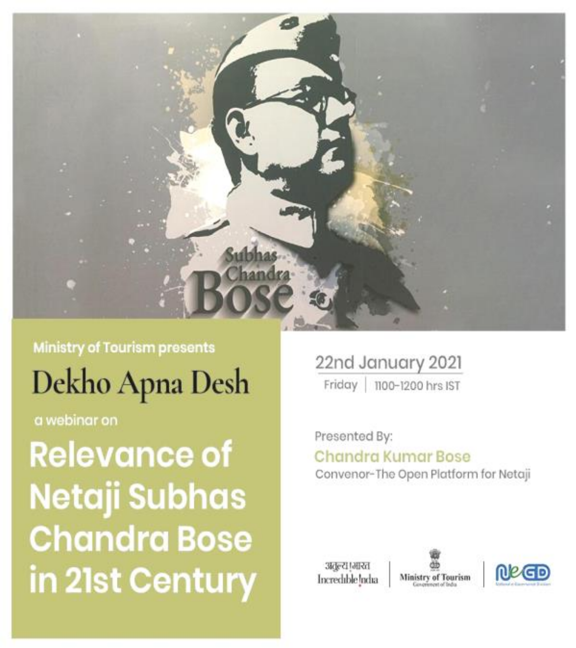

23 जनवरी, 2021 को ही देश ने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की 125वीं जयंती मनाई है। सरकार ने प्रत्येक वर्ष इस दिन को ‘पराक्रम दिवस’ के रूप में मनाने का निर्णय किया है। 22 जनवरी को आयोजित यह वेबिनार नेताजी के जन्म और भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान के प्रति एक श्रद्धांजलि के रूप में आयोजित किया गया। अखंड और प्रगतिशील भारत के लिए सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक मोर्चे पर भारत के सर्वांगीण विकास पर जोर के साथ भारत को अंग्रेजों की दासता, शोषण एवं उत्पीड़न से मुक्त कराना ही नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का दर्शन, विचारधारा और दृष्टिकोण तथा मुख्य चिंता और लक्ष्य था ।

कारगिल में राष्ट्रीय पर्यटन दिवस

25 जनवरी 2021: माननीय पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री जी ने केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख के कारगिल जिले में आइस हॉकी रिंग, बियामाथांग में राष्ट्रीय पर्यटन दिवस का उद्घाटन किया। मंत्री जी ने स्थानीय प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने तथा आत्म-निर्भर भारत के सपने को

साकार करने के लिए इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ स्कीइंग एंड माउंटेनियरिंग की एक शाखा स्थापित करने की घोषणा की।

मंत्री जी ने कहा कि बाहरी दुनिया को यह संदेश जाना चाहिए कि कारगिल एक युद्ध क्षेत्र नहीं बल्कि एक शांतिपूर्ण क्षेत्र है। उन्होंने बल देते हुए कहा पर्यटन और रोजगार के अवसरों के लिए एक अनुकूल वातावरण बनाने और कारगिल की प्रतिष्ठा को पुनः वापस लाने के लिए भारत सरकार कारगिल में अंतर्राष्ट्रीय स्तर की पर्यटन अवसंरचना के निर्माण के साथ एक स्कीइंग और पर्वतारोहण संस्थान स्थापित करने हेतु प्रतिबद्ध है।

लद्दाख से सांसद, श्री जम्यांग सेरिंग नामग्याल तथा अधिकारियों के साथ माननीय पर्यटन मंत्री जी।

कारगिल को विश्व स्तरीय साहसिक खेल गंतव्य बनाने की एक सार्थक योजना के द्वारा पर्वतारोहण, स्कीइंग, आइस हॉकी और अन्य शीतकालीन खेलों के क्षेत्र में स्थानीय प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने हेतु सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। इससे कारगिल को शीतकालीन पर्यटन के अच्छे अवसरों का लाभ मिलेगा और इसमें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व करने की क्षमता भी उत्पन्न होगी। मंत्री जी ने कहा कि सरकार इस क्षेत्र के हितों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है और इन स्कीइंग पाठ्यक्रमों के माध्यम से स्थानीय खिलाड़ियों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। उन्होंने छात्रों से आग्रह किया कि आतिथ्य में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए भारतीय पर्यटन और यात्रा प्रबंधन संस्थान (आईआईटीटीएम) के पाठ्यक्रमों में दाखिला लें।

लद्दाख से सांसद, श्री जम्यांग सेरिंग नामग्याल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार नवगठित संघ शासित प्रदेश के सभी क्षेत्रों में विकास लाने के लिए दृढ़ संकल्पित है। पर्यटन और साहसिक पर्यटन की अनेक गतिविधियों के लिए कारगिल में बहुत अधिक क्षमता है। जंस्कार में जबरदस्त सर्दी के बावजूद, शीतकालीन उत्सव और राष्ट्रीय पर्यटन दिवस के आयोजन और शीतकालीन खेल-कार्यशालाओं और टूर्नामेंटों के उद्घाटन के अवसर पर माननीय मंत्री जी का यहां पधारना, यह दर्शाता है कि पर्यटन को बढ़ावा देने की दिशा में केंद्र

सरकार प्रतिबद्ध है। श्री जम्यांग ने कहा कि लद्दाख में पर्यटन ग्रामीण केंद्रित है इसलिए और अधिक अतिथिगृह बनाने के लिए सरकार द्वारा आवश्यक प्रावधान किए जाने चाहिए।

एडवेंचर पर्यटन की राष्ट्रीय प्रतियोगिता (एनईएटी) कारगिल 2021 के आईआईएसएम कप के अंतिम दिन के मैच खेले गए। मंत्री जी ने विजेता और भाग लेने वाले खिलाड़ियों को पदक देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर कारगिल के उपायुक्त श्री बशीर-उल-हक चौधरी, शीतकालीन खेल प्रतियोगिता के मुख्य आयोजक जे.एस.ढिल्लन, आईआईटीटीएम के निदेशक प्रोफेसर आलोक शर्मा, नागरिक, पुलिस प्रशासन और सेना के अधिकारी, एथलीट और खेल प्रेमी भी उपस्थित थे। समारोह के दौरान एक भव्य सांस्कृतिक समारोह का भी आयोजन किया गया।

लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला द्वारा पर्यटन मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल की उपस्थिति में 'भारत पर्व 2021' का उद्घाटन

26 जनवरी, 2021: लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला ने 'भारत पर्व 2021' का उद्घाटन किया। देश की विविध संस्कृति, व्यंजनों और हस्तशिल्प को प्रदर्शित करने वाला यह एक आभासी राष्ट्रीय पर्व है। इस अवसर पर पर्यटन और संस्कृति राज्य मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल भी उपस्थित थे।

श्री बिरला ने अपने संबोधन में गणतंत्र दिवस के अवसर पर सभी को बधाई दी और भारत के लोकतंत्र की प्रशंसा करते हुए कहा कि संविधान द्वारा प्रदत्त मार्गदर्शक भावना के कारण, हमारे देश में पिछले सात दशकों की यात्रा में लोकतंत्र परिपक्व, सुदृढ़ और मजबूत हुआ है। उन्होंने कहा कि हमारे देश का ऐसा कोई राज्य या जिला नहीं है, जिसकी पर्यटन क्षेत्र में अपनी कोई विशेषता नहीं हो। इस विशिष्टता के कारण ही अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के लिए भारत आकर्षण का एक महत्व पूर्ण केंद्र बन गया है। सरकार पूरे देश को पर्यटन और संस्कृति के माध्यम से जोड़ने के लिए काम कर रही है।

'भारत पर्व' कार्यक्रम के माध्यम से पर्यटन मंत्रालय ने भारत के पर्यटन, आध्यात्मिक और अन्य गतिविधियों को एक मंच पर लाने का सराहनीय कार्य किया है। कोरोना-19 महामारी ने पर्यटन क्षेत्र के लिए सबसे बड़ी चुनौती खड़ी की है और हमने सभी बाधाओं के बावजूद, पर्यटन क्षेत्र में इस चुनौती को एक अवसर में बदलने का काम किया है। भारत में पर्यटन क्षेत्र एक ऐसा क्षेत्र है जो लोगों को सबसे अधिक रोजगार प्रदान करता है। यदि हम अपने देश में सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों को बदलना चाहते हैं तो यह जरूरी है कि पर्यटन क्षेत्र के विकास हेतु अधिक प्रयास किए जाएं।

मानननीय पर्यटन मंत्री जी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि देश की सांस्कृतिक विविधता और समृद्ध विरासत को प्रदर्शित करने के लिए पर्यटन सबसे प्रभावी माध्यम है। पर्यटन मंत्रालय की ''देखो अपना देश'' पहल का उद्देश्य देशवासियों को देश के भीतर व्यापक रूप से यात्रा करने और विदेशी पर्यटकों को यात्रा करने के लिए प्रोत्साहित करना है। उन्होंने आगे कहा कि कोविड -19 महामारी के दौरान पर्यटन सबसे अधिक प्रभावित उद्योग था लेकिन सरकार सकारात्मक रूख और प्रभावी योजना से इस उद्योग को शानदार तरीके से पटरी पर लौटने में मदद कर रही है।

इस अवसर पर सचिव (पर्यटन), श्री योगेन्द्र त्रिपाठी ने कहा कि पर्यटन मंत्रालय 2016 से दिल्ली में लाल किले की प्राचीर के सामने 26 से 31 जनवरी के बीच लगातार भारत पर्व का आयोजन करता रहा है। इस वर्ष भी अन्य केंद्रीय मंत्रालयों के सहयोग से 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना को प्रदर्शित करते हुए 26 से 31 जनवरी 2021 तक 'भारत पर्व' कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। इस मेगा इवेंट के जरिये देशभक्ति की भावना उत्पन्न करने की परिकल्पना के साथ देश की समृद्ध और विविध सांस्कृतिक विविधता को प्रदर्शित किया जाता है। भारत पर्व "भारत का गुण" बताता है। सचिव ने कहा कि कोविड महामारी की परिस्थितियों के कारण इस वर्ष भारत पर्व का आयोजन 26 जनवरी से लेकर 31 जनवरी 2021 तक वर्चुअल प्लेटफॉर्म www.bharatparv2021.com के माध्यम से किया गया था।

विभिन्न केंद्रीय मंत्रालय जैसे संस्कृति मंत्रालय, आयुष मंत्रालय, उपभोक्ता मामले मंत्रालय, रेल मंत्रालय, नागरिक उड्डयन मंत्रालय और अन्य संगठन जैसे विकास आयुक्त हथकरघा, विकास आयुक्त हस्तशिल्प, ललित कला अकादमी, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, राष्ट्रीय संग्रहालय, नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट्स, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की मीडिया इकाइयां, खादी और ग्रामोद्योग आयोग इत्यादि उत्सव के दौरान पूरे भारत से हस्तशिल्प, हथकरघा, संगीत, नृत्य, पेंटिंग, साहित्यिक सामग्री और अन्य चीजों इसमें प्रदर्शित करते हैं।

इस वर्ष गणतंत्र दिवस परेड की झलक और आभासी मंच पर सशस्त्र बल संगीत बैंड के रिकॉर्ड किए गए कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। देश के विभिन्न केंद्रीय होटल प्रबंधन संस्थानों और भारतीय पाक संस्थान ने भी वीडियो के द्वारा व्यंजनों का प्रदर्शन किया।

वर्चुअल भारत पर्व 2021 के स्टैच्यू ऑफ यूनिटी मंडप में हाई रेजोल्यूशन वीडियो, चित्रों और ई-ब्रोशरों आदि के साथ गंतव्यों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई है। इसके अलावा, 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के विचारों के साथ - भाषा ज्ञान, संस्कृति, परंपरा और संगीत, पर्यटन

और व्यंजन, खेल और सर्वोत्तम प्रथाओं के आदान-प्रदान आदि के क्षेत्रों में एक निरंतर और संरचनात्मक सांस्कृतिक जुड़ाव की जानकारी दी गई।

'अतुल्य भारत' मंडप में देश में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों तथा देश के पर्यटन स्थलों के बारे में अधिक सूचना प्रदान करने हेतु पर्यटन मंत्रालय की वेबसाइट के लिंक और विभिन्न प्रसंगों और विषयों पर वीडियो भी शामिल किए गए थे।

आसियान- भारत के पर्यटन मंत्रियों की 8वीं बैठक

05 फरवरी, 2021 : माननीय पर्यटन राज्य मंत्री जी ने कंबोडिया के पर्यटन मंत्री डॉ. थॉन्ग खोन के साथ आज वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से आसियान-भारत पर्यटन मंत्रियों की आठवीं बैठक की सह-अध्यक्षता की। यह बैठक आसियान पर्यटन मंत्रियों (एम-एटीएम) की 24वीं बैठक के संयोजन के साथ आयोजित की गई थी।

आरम्भ में, मंत्रियों ने कोविड-19 वैश्विक महामारी के परिणामस्वरूप इस क्षेत्र के लोगों के लिए जीवन और आजीविका को हुए नुकसान के लिए सहानुभूति और संवेदना व्यक्त की। बैठक में मंत्रियों ने पर्यटन क्षेत्र पर महामारी के प्रभाव को कम करने में संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया।

माननीय मंत्री जी ने न केवल कोविड-19 महामारी को रोकने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के प्रयासों की सराहना की बल्कि दवाओं और चिकित्सा उपकरणों की आपूर्ति करके अन्य देशों की मदद करने के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने आसियान देशों के साथ भारत के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों का उल्लेख करते हुए कहा कि आसियान सदस्य देशों के पर्यटकों द्वारा बौद्ध पर्यटन के लिए भारत एक ऐसा बाजार है जो बौद्ध परिपथ के रूप में प्रमुख पर्यटक आवागमन की सुविधाएं प्रदान करता है। भारत की बौद्ध विरासत के बारे में जागरूकता पैदा करने और बौद्ध स्थलों पर विदेशी पर्यटकों के आगमन को सुविधाजनक बनाने के लिए पर्यटन मंत्रालय ने बौद्ध परिपथ में अवसंरचना को उन्नत करने के लिए प्रमुख रूप से निवेश किया है। पर्यटन मंत्रालय, दो वर्ष में एक बार, अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध कॉन्क्लेव का आयोजन करता है। आसियान के सदस्य देशों को इस सम्मे्लन में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

उन्होंने चिकित्सा पर्यटन और निरोगता के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि उन्नत गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य देखभाल, कम लागत, कम समय और आसान चिकित्सा वीजा प्रक्रिया के कारण भारत चिकित्सा उपचार के क्षेत्र में एक पसंदीदा देश के रूप में उभर रहा है।

मंत्री जी ने ''साथी'' यानी आतिथ्य उद्योग के लिए मूल्यांकन, जागरूकता और प्रशिक्षण प्रणाली और अतुल्य भारत पर्यटक सुविधाप्रदाता (आईआईटीएफ) प्रमाणन कार्यक्रम जैसी पहल पर प्रकाश डालते हुए मंत्रालय की रूपरेखा के बारे में जानकारी प्रदान की। पर्यटन मंत्रालय द्वारा विभिन्न संस्कृति, विरासत, अनदेखे स्थलों और लोकप्रिय पर्यटन स्थलों के अनछुए पहलुओं को प्रदर्शित करने हेतु 'देखो अपना देश' कार्यक्रम के तहत वेबिनार की एक श्रृंखला का भी उल्लेख किया।

मंत्री जी ने आसियान-भारत साझेदारी और पर्यटन में सहयोग को और मजबूत करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। एक संयुक्त मीडिया वक्तव्य के साथ बैठक संपन्न हुई। इस संयुक्त वक्तव्य में मंत्रियों ने आसियान और भारत के बीच समझौता ज्ञापन के तहत पर्यटन में आसियान-भारत सहयोग को और बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की।

देखो अपना देश - वेबिनार

''खगोलीय पर्यटन: प्रकृति आधारित पर्यटन की अगली सीमा"

06 फरवरी, 2021 : पर्यटन मंत्रालय की 'देखो अपना देश' वेबिनार श्रृंखला का शीर्षक "एस्ट्रो-टूरिज्म: द नेक्स्ट फ्रंटियर ऑफ नेचर-बेस्ड टूरिज्म" यानी खगोलीय पर्यटन : प्रकृति आधारित पर्यटन की अगली सीमा था। यह प्रकृति आधारित पर्यटन के संवर्धन पर केंद्रित है। कोविड महामारी के बाद प्रकृति आधारित पर्यटन दुनिया में मजबूती से उभर रहा है। वेबिनार में दूर-दराज के समुदायों में सामाजिक, आर्थिक और संरक्षण के सकारात्मक लाभ प्रदान करने हेतु अपनी अपार क्षमता को तलाशने पर ध्यान देते हुए, खगोलीय पर्यटन के विकास को सबसे प्रामाणिक और पर्यावरण-अनुकूल यात्रा के तरीकों में से एक के रूप में तलाश करना था।

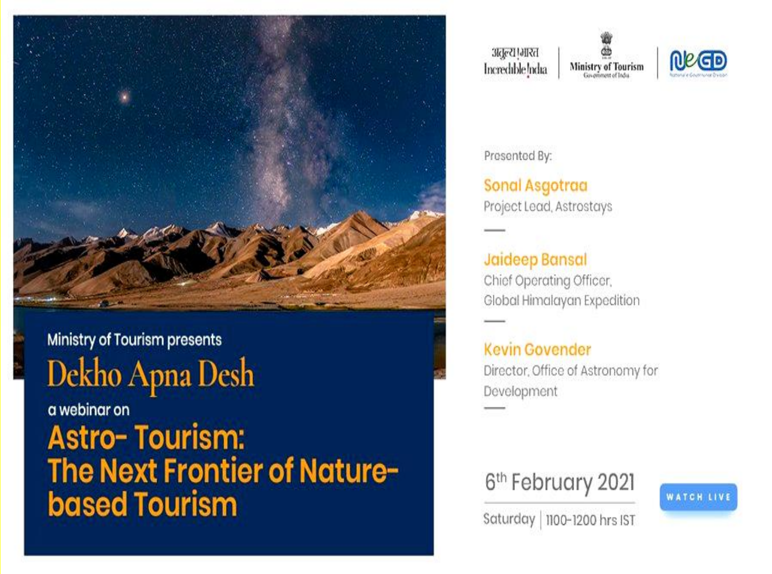

अपर महानिदेशक, सुश्री रूपिंदर बरार ने वेबिनार को आरम्भ करते हुए कहा कि खगोलीय पर्यटन एक नया रूप है जो दुनिया भर में तेज़ी से बढ़ रहा है। उन्होंने बताया कि भारत में दुनिया की सभी भौतिक और भौगोलिक विशेषताओं वाले प्रकृति आधारित पर्यटन के संबंध में अपार संभावनाएं हैं। इन रहस्यमय तरीके में लोगों की रूचि जागृत करना भी पर्यटन को एक माध्यम से प्रदान करना है।

वेबिनार की प्रस्तुति वैश्विक हिमालयी अभियान के मुख्य परिचालन अधिकारी श्री जयदीप बंसल द्वारा की गई थी। यह अभियान एक सामाजिक उद्यम है जो सुदूर हिमालयी गांवों में सौर ऊर्जा के उपयोग पर अभियान चलाता है।

वेबिनार की अन्य प्रस्तुतकर्ता जीएचई के खगोल विज्ञान की प्रोजेक्ट लीडर सुश्री सोनल असगोत्रा थीं। इस संस्था को एस्ट्रोस्टेज (www.astrostays.com) के नाम से भी जाना जाता है। इसके अलावा ऑफिस ऑफ डेवलपमेंट के संस्थापक और वर्तमान निदेशक श्री केविन गोवेंडर ने भी इस वेबिनार में अपनी प्रस्तुति दी। सुश्री सोनल 2013 के अंतरराष्ट्रीय अंटार्कटिक अभियान दल की सदस्य रही हैं। इस अभियान दल का नेतृत्व ध्रुवीय अन्वेषक सर रॉबर्ट स्वान, ओबीई ने किया था, जबकि श्री केविन गोवेंडर पहले दक्षिण अफ्रीकी खगोलीय वेधशाला में दक्षिणी अफ्रीकी बड़े दूरबीन के समानांतर लाभ के कार्यक्रम (खगोलीय पर्यटन सहित) के प्रबंधक थे। इसके आलावा वे अंतर्राष्ट्रीय खगोलीय संघ के साथ मिलकर एडिनबर्ग मेडल के संयुक्त प्राप्तकर्ता और अफ्रीकन खगोलीय समिति की स्थापना के सूत्रधार थे।

वेबिनार के शुरू में प्रस्तुतकर्ताओं ने खगोलीय-पर्यटन और सतत तथा जिम्मेदार पर्यटन को चलाने और इसकी क्षमता के बारे में जानकारी प्रदान की। उन्होंने खगोलीय-पर्यटन के बारे में जानकारी दी जो एक समुदाय द्वारा संचालित ऐसा ज्योतिष मॉडल है जो समुदायों को पर्यटन मॉडल के केंद्र में रखता है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य आर्थिक आधार पर विविधता लाने और एक महत्वपूर्ण विकास हस्तक्षेप के रूप में खगोलीय-पर्यटन का उपयोग करके रोजगार सृजन के

नए अवसरों का सृजन करके समुदायों को सशक्त और मजबूत करना है। यह मॉडल अनुभव पर आधारित और सतत पर्यटन का एक अभिनव रूप भी है जो दुनिया के दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों के लिए आर्थिक लाभ उत्पन्न करता है ।

खगोल विज्ञान की मूल बातों और सक्रिय दूरबीनों की जानकारी के आधार पर प्रशिक्षित, स्थानीय गृह स्वामी (ज्यादातर महिलाएं) आने वाले पर्यटकों के लिए रात्रि के समय आसमान को निहारने वाले सत्र आयोजित करती हैं, जिससे समुदायों के लिए आय का एक नया अवसर तैयार होता है। इससे अंततः स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए प्रोत्साहन में वृद्धि होती है और स्थानीय युवाओं को अपना घर छोड़कर रोज़गार के लिये बाहर नहीं जाना पड़ता। इसके अलावा सदियों पुरानी सांस्कृतिक हिमालयी विरासत का संरक्षण भी सुनिश्चित होगा।

उन्होंने बताया कि अब तक, 35 स्थानीय महिलाओं को लद्दाख के काफी ऊंचाई वाले हिमालयी रेगिस्तान में पांच खगोलीय निवास के लिये प्रशिक्षित किया गया है, जिससे स्थानीय समुदायों को एक अच्छी आमदनी हो रही है।

प्रस्तुतकर्ताओं ने कुछ प्रमुख स्थलों पर भी प्रकाश डाला, जिन्हें भारत में खगोलीय पर्यटन स्थलों के रूप में प्रचारित किया जा सकता है। पैंगोंग झील (लद्दाख), कच्छ का रण (गुजरात), मांडू (मध्य प्रदेश), लाहौल और स्फीति (हिमाचल प्रदेश) आदि स्थलों पर खगोलीय पर्यटन को प्रोत्साहन देने के साथ ही, राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभयारण्यों में रात के समय में खगोलीय पर्यटन स्थलों के रूप में बढ़ावा देने पर और अधिक गहन विचार प्रस्तुत किए।

देखो अपना देश वेबिनार

"वोकल फॉर लोकल: स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाना: गुजरात का अनुभव"

13 फरवरी 2021: पर्यटन मंत्रालय ने देखो अपना देश वेबिनार श्रृंखला के 76वें संस्करण के तहत "वोकल फॉर लोकल: स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाना: गुजरात का अनुभव" विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया। वेबिनार में पर्यटन के माध्यम से स्थानीय समुदायों के लिए जीवन स्तर में सुधार, रोजगार के अवसर और आमदनी बढ़ाने के माध्यम के रुप में उद्यमिता के महत्व को स्वीकार किया गया। वेबिनार में केवड़िया में स्टेच्यू ऑफ यूनिटी के आसपास बसे स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाने तथा गुजरात में बने कपड़ों के विपणन को बढ़ावा देने के उपायों पर चर्चा की गई।

गुजरात के टूरिस्ट गाइड श्री गौतम बी. पोपट ने वेबिनार की प्रस्तुति दी। श्री पोपट 20 वर्षों तक भारतीय वायु सेना में सेवा कर चुके हैं और पर्यटन में उनकी गहरी रुचि है। उन्होंने गुजरात के बुनकर समाज, बुनकरों के समृद्ध इतिहास और उनकी विरासत से संबंधित तथ्यों के बारे में विस्तार से बताया कि गुजरात में बने कपड़े सिंधु घाटी सभ्यता काल से जुड़ी भारत की विरासत का एक हिस्सा रहे हैं। कच्छ, पाटन, अहमदाबाद, सुरेन्द्रनगर, सूरत, जामनगर, वाधवान, भरूच और उदवाड़ा गुजरात के मुख्य कपड़ा उत्पादक और कढ़ाई के केंद्र हैं। गुजरात में बनाए कपड़ों में अजरख ब्लॉक प्रिंटिंग, खरद बुनाई, बंधनी (टाई एंड डाई), अहीर कढ़ाई, सूफ कढ़ाई, रोगन पेंटिंग, आरी कढ़ाई, तंगालिया बुनाई और पटोला बुनाई वाले कपड़े खास हैं। सरकार और गैर सरकारी संगठन इन स्थानीय हस्तशिल्पों को संरक्षित करने में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। इन कलाओं और शिल्पों के बारे में समय समय पर विभिन्न तरह की पर्यटन कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं जो न केवल स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाती हैं बल्कि सदियों पुरानी विरासत को संरक्षित करने के लिए लोगों को प्रेरित भी करती हैं। गुजरात में बने वस्त्र एक तरह से पर्यटन से जुड़े उत्पाद हैं और राज्य की हस्तकला विरासत स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर का माध्यम बन रही है

श्री मयूरसिंह राहुल ने एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल के रूप में केवडिया के बारे में बताया कि यह गुजरात का एक अनूठा पर्यटन स्थल है। सतपुड़ा और विंध्याचल पर्वत श्रृंखलाओं के बीच नर्मदा जिले के केवड़िया में भारत के लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 182 मीटर ऊंची प्रतिमा है, जिसे स्टेच्यू ऑफ यूनिटी के रूप में जाना जाता है। यह प्रतिमा देश को एक राष्ट्र के रुप में संगठित करने में सरदार पटेल के योगदान के लिए देशवासियों की ओर से उन्हें दिए गए सम्मान का प्रतीक है। स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के सामने नर्मदा नदी और विशाल सरदार सरोवर बांध का दृश्य है।

यह सड़क मार्ग से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। अहमदाबाद से स्टेच्यू ऑफ यूनिटी के लिए सीप्लेन सेवा भी उपलब्ध है। केवड़िया को हर आयु वर्ग के लिए एक रुचिकर पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया गया है। डाइनो ट्रेल, जंगल सफारी, फूलों की घाटी, बटरफ्लाई गार्डन, विश्व वन, कैक्टस गार्डन, एकता नर्सरी और साइकिल ट्रैक आदि जैसे विभिन्न थीम पार्कों में आरामदायक सुविधाएं और साहसिक यात्राएं इस जगह को और अधिक दिलचस्प बनाती हैं।

एसोसिएशन ऑफ डोमेस्टिक टूर ऑपरेटर्स ऑफ इंडिया का केवडिया में वार्षिक सम्मेलन

14 फरवरी, 2021: माननीय मंत्री जी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से 12 फरवरी, 2021 को गुजरात के केवड़िया में पर्यटन मंत्रालय और एसोसिएशन ऑफ डोमेस्टिक टूर ऑपरेटर्स ऑफ इंडिया द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित तीन दिवसीय वार्षिक सम्मेलन का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर उद्घाटन समारोह में अपने वीडियो संदेश में, मंत्री जी ने कहा, "अगर हम अच्छी मंशा और योजना के साथ काम करते हैं तो हम शानदार चीजें हासिल कर सकते हैं और स्टैच्यू ऑफ यूनिटी स्मारक इसका एक उदाहरण है।" उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जी की कर्मभूमि में ऐसी कई अनोखी चीजें देखने को मिलती हैं। पर्यटन उद्योग के हितधारकों को बधाई देते हुए, मंत्री जी ने आग्रह किया कि पर्यटन में 34वें स्थान से भारत बहुत जल्द शीर्ष स्थान पर पहुंच जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हम 'वसुधैव कुटुम्बकम' में विश्वास रखते हैं। इसलिए भारत ने 140 देशों को दवाइयां दी थी और अब तक 16 देशों को कोरोना की वैक्सीन भी उपलब्ध करा चुका है। इससे पर्यटन पर पहले जैसा सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

यह सम्मेलन गुजरात पर्यटन की मदद से पर्यटन मंत्रालय और एडीटीओआई ने संयुक्त रूप से आयोजित किया था। इसका उद्देश्य देश में घरेलू पर्यटन को दोबारा खड़ा करने के लिए जनता में यात्रा करने के प्रति विश्वास पैदा करना था। पूरे भारत से एडीटीओआई के सदस्यों, होटल कारोबारियों, एयरलाइंस के प्रतिनिधियों, वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों, मीडियाकर्मियों तथा पर्यटन उद्योग के हितधारकों सहित लगभग 400 प्रतिनिधियों ने सम्मेलन में भाग लिया ।

इस अवसर पर अपने संबोधन में सचिव (पर्यटन) श्री अरविंद सिंह ने कहा कि महामारी ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तरों पर, इंसानों की आवाजाही पर लगी रोक ने, पर्यटन में तेज गिरावट के रूप में असर डाला है। अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के निलंबन, हवाई अड्डे और सीमाएं बंद होने, घरेलू सफर समेत यात्रा पर सख्त पाबंदियां लागू होने से पर्यटन सहित कई क्षेत्रों में एक संकट खड़ा हो गया था, जिसके जोखिम से लाखों लोगों के रोजगार ज्यादा प्रभावित हुए। यह वर्ष कुछ सकारात्मक संकेत दे रहा है। नागरिकों की मदद से केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा की गई कोशिशों से पॉजिटिव मामलों की संख्या में उल्लेखनीय गिरावट आई है। यात्रियों पर से पाबंदियों को कम किया गया है और देश भर में राज्यों के बीच आवाजाही शुरू हुई है। वैक्सीन पर उत्साहजनक खबरों ने सुधार की उम्मीदें बढ़ाई हैं। यात्रा के सभी साधनों जैसे एयरलाइंस, रेल और सड़क परिवहन सभी से आगंतुकों के आवागमन में लगातार वृद्धि की सूचना मिल रही है।

उन्होंने आगे कहा, “घरेलू पर्यटन आगे बढ़ रहा है और यही पर्यटन क्षेत्र को पुनर्जीवित करने में मदद करेगा।”

।

सचिव महोदय ने बताया कि मंत्रालय ने अपनी स्वदेश दर्शन और प्रसाद योजनाओं के तहत देश में लोगों के पर्यटन के अनुभव को बेहतर बनाने के उद्देश्य के साथ विभिन्न पर्यटन स्थलों और तीर्थस्थानों के लिए 7103.12 करोड़ रुपये की 132 परियोजनाओं को मंजूरी दी है। मंत्रालय 19 प्रतिष्ठित स्थलों को भी विकसित कर रहा है और इन प्रतिष्ठित स्थलों को दुनिया के सर्वश्रेष्ठ मानकों पर स्थापित किया जाएगा। उन्होंने सरकारों और निजी क्षेत्र सहित सभी हितधारकों से आपस में एकजुट होने और नागरिकों तक यह संदेश पहुंचाने की अपील की कि यह दोबारा यात्रा करने और ‘देखो अपना देश’ का समय है।

इस संदेश को फैलाने के लिए आवश्यक प्रोटोकॉल और सुरक्षा उपायों के साथ स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, केवडिया से बेहतर कोई दूसरी जगह नहीं हो सकती है और ना ही घरेलू टूर ऑपरेटर्स के वार्षिक सम्मेलन से बेहतर दूसरा कोई मौका। उन्होनें आगे कहा कि केवडिया अच्छा उदाहरण है कि कैसे पर्यटन सभी स्तरों पर लोगों के जीवन को प्रभावित कर सकता है। सभी सुविधाओं के साथ केवड़िया एक पूर्ण पारिवारिक गंतव्य स्थल में बदल गया है। यह देश के प्रमुख शहरों जैसे दिल्ली, मुंबई, वाराणसी, चेन्नई और अहमदाबाद के साथ सीधे रेल से जुड़ा है। अहमदाबाद - केवडिया जन शताब्दी में विस्टाडोम कोच लगे हैं जो यात्रियों को एक अनूठा अनुभव देते हैं।

इस अवसर पर एडीटीओआई मैनुअल और विशेषाधिकार कार्ड भी जारी किया गया। जंगल सफारी, पोषण वाटिका और स्टैच्यू ऑफ यूनिटी जैसे महत्वपूर्ण स्थानों को मिलाकर केवडिया शहर को घूमने के अलावा सम्मेलन के दूसरे दिन एक 'एकता मैराथन' का भी आयोजन किया गया।

दार्जिलिंग में तीन दिवसीय अतुल्य भारत मेगा होमस्टे विकास एवं प्रशिक्षण कार्यशाला।

22 फरवरी, 2021: दार्जिलिंग क्षेत्र में आने वाले पर्यटकों को बेहतर पर्यटन अनुभव और होमस्टे मालिकों के आतिथ्य कौशल में वृद्धि करने के लिए दार्जिलिंग में 22 से 24 फरवरी, 2021 के बीच तीन दिवसीय होमस्टे विकास एवं प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। भारतपर्यटन, क्षेत्रीय कार्यालय (पूर्व) कोलकाता, ने (संसाधन साझेदार के रूप में) ईस्टर्न हिमालयाज ट्रैवल एंड टूर ऑपरेटर एसोसिएशन और (ज्ञान साझेदार के रूप में) आईआईएएस स्कूल ऑफ मैनेजमेंट के साथ मिलकर इस कार्यशाला का आयोजन किया था। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य पर्यटकों के लिए बेहतर अनुभव सुनिश्चित हेतु क्षेत्र के होमस्टे मालिकों के आतिथ्य कौशल में वृद्धि करना था।

इस अवसर पर अपने संबोधन में मंत्री जी ने कहा कि पश्चिम बंगाल का पूर्वी हिमालयी भाग भारत में सबसे अहम पर्यटक स्थलों में है। दार्जिलिंग हिमालयन रेलवेज (यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज) और हिमालयन पर्वतारोहण संस्थान की मौजूदगी से भी पहाड़ों की रानी के महत्व का पता चलता है। होमस्टे के इस नए चलन के उभरने के साथ पहाड़ों में यह एक लोकप्रिय व्यवस्था हो गई है और पर्यटकों की तरफ से मांग बढ़ने के साथ हजारों स्थानीय लोगों ने अपने

घरों को होम-स्टे में परिवर्तित कर दिया है। आतिथ्य कौशल सुधार के माध्यम से होमस्टे के विकास से स्थानीय समुदाय आत्मनिर्भर बनेंगे।

इस कार्यशाला में दार्जिलिंग, कलिम्पोंग और द्वार क्षेत्र के कुल 725 होम स्टे मालिकों ने भाग लिया। इस तीन दिवसीय कार्यशाला में उन्हें होमस्टे का प्रचार करने, आतिथ्य कौशल में वृद्धि करने और इस परंपरा की व्यवस्था के बारे में उन्हें और अधिक जानकारी देने से संबंधित प्रशिक्षण दिए गए ताकि वह अपने होमस्टे को प्रोत्साहित करने के लिए और प्रभावी तौर तरीकों का इस्तेमाल कर सकें। दार्जिलिंग से लोकसभा सदस्य श्री राजू गुप्ता ने कहा कि इस प्रशिक्षण से न सिर्फ यहां आने वाले पर्यटकों को आतिथ्य का एक बेहतर अनुभव मिलेगा बल्कि इससे घरेलू पर्यटकों और विदेशी पर्यटकों के लिए पूर्वी हिमालयी क्षेत्र को एक पसंदीदा पर्यटन गंतव्य बनाया जा सकेगा और स्थानीय पर्यटन अर्थव्यवस्था में व्यापक रूप से मदद करेगा। साथ ही साथ यह पर्यटन मंत्रालय और यूएनडब्ल्यूटीओ के सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) को हासिल करने में भी योगदान कर सकता है। इस अवसर पर पर्यटन मंत्रालय की अपर महानिदेशक (पर्यटन) सुश्री रुपिंदर बराड़ भी उपस्थिति थीं।

भारतपर्यटन, कोच्चि **"भारत की विभिन्न पर्यटन सम्पदाएं"**

28 फरवरी,2021 : भारत फिलहाल अनलॉक के चरण में है और पर्यटन मंत्रालय और उसके क्षेत्रीय कार्यालय 'देखो अपना देश' अभियान के अंतर्गत पर्यटन संवर्धन के विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर रहे हैं। भारतपर्यटन, कोच्चि कार्यालय ने केरल होम स्टे एंड टूरिज्म सोसायटी के साथ मिलकर हाल में पर्यटन मंत्रालय की होमस्टेस/ बैड एंड ब्रेकफास्टे इकाइयों से जुड़ी योजना के बारे में अवगत कराने के लिए होमस्टेस/ बीएंडबी इकाइयों के मालिकों के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला में, विशेष रूप से आतिथ्य उद्योग के लिए तैयार किए गए ''निधि'' और ''साथी'' प्रमाणन के बारे में भी जानकारी दी गई। कार्यशाला में कोच्चि और निकटवर्ती जिलों के 54 होमस्टेस/ बीएंडबी इकाइयों के मालिकों ने भाग लिया। एक अन्य कार्यक्रम में, भारतपर्यटन, कोच्चि ने जिला पर्यटन संवर्धन परिषद एर्नाकुलम, केरल के साथ मिलकर केरल की अनूठी सांस्कृतिक विरासत को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से उलसावम के एक सप्ताह तक चले सांस्कृतिक महोत्सव के 13वें आयोजन को सहायता प्रदान की। इस महोत्सव में लगभग 200 कलाकारों की भागीदारी के साथ केरल की 28 कलाओं का प्रदर्शन किया गया। इस महोत्सव का उद्घाटन कोच्चि निगम की मेयर ने किया और सांसद श्री हिबी एडेन ने उद्घाटन भाषण दिया।

छत्तीसगढ़ : **"माँ बम्लेश्वरी देवी मंदिर का विकास" परियोजना की आधारशिला।**

02 मार्च, 2021 : माननीय पर्यटन मंत्री जी ने आज वर्चुअल माध्यम से छत्तीसगढ़ के डोंगरगढ़ में "माँ बम्लेश्वरी देवी मंदिर का विकास" परियोजना की आधारशिला रखी। यह परियोजना पर्यटन मंत्रालय द्वारा प्रशाद योजना के तहत स्वीकृत की गई है। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल भी वर्चुअल माध्यम से इस कार्यक्रम में उपस्थित हुए।

इस अवसर पर अपने संबोधन में मंत्री जी ने कहा कि पर्यटन मंत्रालय ने अक्टूबर 2020 में 43.33 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत के साथ “माँ बम्लेश्वरी देवी मंदिर”, डोंगरगढ़, विकास परियोजना अनुमोदित की है। इस परियोजना में 'तीर्थ यात्रा केंद्र' में तीर्थ यात्रा के अवसंरचना के विकास कार्य के साथ श्रीयंत्र आकार की प्रतिष्ठित इमारत,सीढ़ियों का निर्माण,शेड, पैदलपथ, आस पास के इलाके की रोशनी व्यवस्था, झील का सौंदर्यीकरण, अन्य सार्वजनिक सुविधाओं के साथ पार्किंग स्थल का विकास और माँ बम्लेश्वरी देवी मंदिर और प्रज्ञागिरी में तीर्थ यात्रा के लिये सुविधाएं उपलब्ध कराने के कार्य शामिल हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस परियोजना के सफलता पूर्वक सम्पन्न होने के बाद निश्चित रूप से मंदिर में दर्शन करने हेतु आने वाले तीर्थयात्रियों को बेहतर सुविधाएं मिल सकेंगी।

देखो अपना देश :

“सेवा एवं एयरबीएनबी भारत, ग्रामीण भारत की आर्थिक प्रगति”

08 मार्च, 2021 : पर्यटन मंत्रालय ने देखो अपना देश अभियान के तहत “सेवा एवं एयरबीएनबी भारत, ग्रामीण भारत की आर्थिक प्रगति को बढ़ावा देना” विषय पर 6 मार्च, 2021 को 79वां वेबिनार आयोजित किया। 8 मार्च अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया जा रहा है और महिलाओं की पर्यटन के क्षेत्र में जबर्दस्त भूमिका और संभावित अवसरों का लाभ उठाने के लिहाज से आज इस विषय का जिक्र करना काफी उपयुक्त है।

वर्तमान में भारत में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सभी रोजगारों में पर्यटन क्षेत्र का योगदान 12.95 प्रतिशत है और इसमें स्थानीय समुदायों खासकर महिला उद्यमियों के लिए आर्थिक विकास के अनेक अवसर हैं। महिलाओं का आर्थिक रूप से सशक्तीकरण करने से न केवल उन्हें स्वावलम्बी बनाने बल्कि उनकी आय सृजन में मदद मिलती है और इससे वह सामाजिक बदलाव में अहम कारक भी बनती हैं। इस वेबिनार में स्व-रोजगार में लगी महिलाओं की आजीविका में तकनीकी प्रशिक्षण एवं लघु अवधि वित्त के जरिये उनका सशक्तीकरण करने पर विमर्श किया गया।

स्वयं सहायता महिला संघ (सेवा) की स्थापना 1972 में कपड़ा क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए की गई थी। ‘’सेवा’’ भारत में असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिला श्रमिकों की एकमात्र राष्ट्रीय यूनियन है, जिसमें 18 राज्यों से 15 लाख से अधिक महिला सदस्य हैं। इस

समय युवा पीढ़ी का सेवा में 35 प्रतिशत सदस्यता योगदान है और कुछ वर्ष पहले ही यह संगठन पर्यटन के क्षेत्र में आया था और गुजरात में अपनी सफलता की कहानी बया कर रहा है। एयरबीएनबी ने ''सेवा'' के साथ साझेदारी की है। अभी तक 15 से अधिक देशों के 4500 से ज्यादा पर्यटकों ने 40 होमस्टे की सेवाओं का आनंद लिया। यह साझेदारी पर्यटकों को संस्कृति तथा विरासत का एक विशिष्ट तथा प्रामाणिक अनुभव प्रदान करती है। इसके साथ ही हाशिए पर रह रहे वर्गों से आने वाली महिला उद्यमियों को भी आय सृजन के अवसर प्रदान करती है।

इस वेबिनार में सुश्री विनीता दीक्षित, प्रमुख जन नीति, भारत और श्री तेजस भाई रावल, तकनीकी प्रमुख, ''सेवा'' ने दोनों संगठनों के बीच साझेदारी, उनकी प्रगति की विकास यात्रा तथा अन्य पहलुओं पर प्रकाश डाला कि पर्यटन स्थानीय समुदायों, खासकर महिला उद्यमियों के लिए आर्थिक अवसर प्रदान करता है।

सेवा की सबसे अधिक बुजुर्ग सदस्य दो महिलाएं गौरीबेन और मीताबेन हैं, जो सफल उद्यमी भी साबित हुई हैं। उन्होंने इस दौरान बताया कि अपने होमस्टे में पर्यटकों को ठहराकर, वह न केवल आर्थिक रूप से मजबूत हुई हैं, बल्कि तकनीकी और ज्ञान के स्तर में भी उन्हें लाभ हुआ है। यह वाकई गर्व का क्षण था, जब गौरीबेन ने बताया कि होमस्टे के माध्यम से किस प्रकार न केवल उन्होंने अपनी आमदनी बढ़ाई, बल्कि उनके पति और घर के अन्य सदस्य भी इसमें शामिल हुए और उन्होंने अन्य लोगों को भी रोजगार दिया। जब उन्होंने सभी लोगों को अपने होमस्टे में आने का निमंत्रण दिया तो वह पल दिल को छू लेने वाला था।

अपर महानिदेशक सुश्री रूपिन्द बराड़ ने भारत सरकार की पहल वोकल फॉर लोकल पर जोर दिया और ''सेवा'' की दोनों सदस्यों गौरीबेन और मीताबेन की सफलता की कहानियों को सुनने के बाद कहा कि यह बात पूरी तरह सच है कि जहां चाह, वहां राह होती ही है और रास्ते में चाहे कितनी भी बाधाएं आए अगर कोई व्यक्ति ठान ले, तो वह अपना रास्ता बना ही लेता है। उन्होंने धोर्डो के निवासियों के उन अनुभवों को भी साझा किया, जब 2001 में गुजरात के भुज में भूकंप से बुरी तरह प्रभावित लोगों के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी (तत्कालीन मुख्यमंत्री) ने एक टैंट सिटी की स्थापना की थी। केवडिया में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के आस-पास के गांव की महिलाओं ने स्वयं सहायता समूहों की स्थापना की है और राज्य सरकार की मदद से वे कैफेटेरिया चला रही हैं और वहां आने वाले पर्यटकों की गाइड बनने के अलावा पर्यटन क्षेत्र में अन्य भूमिकाएं भी निभा रही हैं। सुश्री बराड़ ने पर्यटन के क्षेत्र में महिलाओं को आगे बढ़ाने के भारत सरकार के दृष्टिकोण को दोहराते हुए कहा कि आने वाले वर्षों में महिलाओं की भूमिका इस क्षेत्र में बहुत अहम हो सकती है।

'माइस' सम्मेलन : 'खजुराहो- एक प्रतिष्ठित पर्यटन गंतव्य' के रूप में विकास ।

पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल और मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने मध्य प्रदेश के खजुराहो में पर्यटन मंत्रालय की स्वदेश दर्शन योजना के तहत खजुराहो में विकसित 'महाराजा छत्रसाल सम्मेलन केन्द्र' का उद्घाटन किया। इस अवसर पर मध्य प्रदेश की पर्यटन व संस्कृति मंत्री श्रीमती उषा ठाकुर, भारत सरकार में पर्यटन सचिव श्री अरविंद सिंह, मध्य प्रदेश सरकार में पर्यटन व संस्कृति के प्रधान सचिव श्री शिव शेखर शुक्ला सहित भारत सरकार तथा मध्य प्रदेश सरकार के अन्य वरिष्ठस अधिकारी और गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

माननीय पर्यटन मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल तथा मध्य प्रदेश के मुख्यरमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने दीप प्रज्जवलित कर सम्मेलन का उद्घाटन किया।

श्री पटेल ने सम्बोधित करते हुए कहा कि, हमें भारत के विभिन्न राज्यों में प्रतिष्ठित पर्यटन स्थलों को और अधिक विकसित करना है, लेकिन इसके साथ ही साथ हमें अपनी प्राचीन पुरानी संस्कृति का संरक्षण भी करना होगा। केंद्र सरकार तथा राज्य सरकार को मिलकर इन प्रतिष्ठित पर्यटन स्थलों को विकसित करने के लिए जुड़कर काम करना होगा ताकि उनके रख-रखाव पर उचित ध्यान दिया जा सके। इससे हम अपनी लोक संस्कृति और पारंपरिक संस्कृति की भी रक्षा करने में भी मदद कर पाएंगे।

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने केंद्र सरकार की मदद से राज्य के सभी पर्यटन स्थलों को विकसित करने में मध्य प्रदेश सरकार के पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। उन्होंने मध्य प्रदेश में कई पर्यटन स्थलों को विकसित करने में राज्य सरकार द्वारा उठाए गए विभिन्न उपायों पर भी ध्यान आकृष्ट कराया।

इस अवसर पर मध्य प्रदेश की पर्यटन व संस्कृति मंत्री श्रीमती उषा ठाकुर, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव, श्री अरविंद सिंह और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

भारत अध्यात्मिक पर्यटन का देश है,
आत्मा को शांति मिले ऐसा परिवेश है.

05 जनवरी, 2021 को नई दिल्ली में पर्यटन मंत्री जी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से भारतीय पर्यटन और यात्रा प्रबंधन संस्थान (IITTM) के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स की बैठक की अध्यक्षता की । उनके साथ सचिव (पर्यटन) श्री योगेन्द्र त्रिपाठी तथा सुश्री मीनाक्षी शर्मा, महानिदेशक (पर्यटन) भी मौजूद थे।

18 जनवरी, 2021 को नई दिल्ली में पर्यटन मंत्री जी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से राष्ट्रीय होटल प्रबंधन और खानपान प्रौद्योगिकी परिषद की आम सभा की बैठक की अध्यक्षता की। इस अवसर पर सचिव (पर्यटन) श्री योगेन्द्र त्रिपाठी तथा श्री ज्ञान भूषण, आर्थिक सलाहकार (पर्यटन) तथा अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे ।

26 जनवरी, 2021 को नई दिल्ली में 'भारत पर्व-2021' कार्यक्रम के आभासी तौर पर उद्घाटन के अवसर पर माननीय लोकसभा अध्यक्ष, श्री ओम बिरला और माननीय पर्यटन मंत्री जी, सचिव (पर्यटन) तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण

'भारत पर्व-2021' में भाग लेने वाले पंजाब के कलाकारों के साथ लोकसभा अध्यक्ष, श्री ओम बिरला और पर्यटन और संस्कृति राज्य मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल।

पर्यटन राज्य मंत्री जी ने 26 फरवरी,2021 को नई दिल्ली में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से पर्यटन मंत्रालय की प्रशाद योजना के तहत केरल के गुरुवायुर में मल्टी लेवल कार पार्किंग और पर्यटक सुविधा केंद्र का शुभारम्भ किया।

02 मार्च, 2021 को छत्तीसगढ़ के डोंगरगढ़ में प्रशाद योजना के तहत मां बम्लेश्वरी मंदिर की विकास परियोजना की आधारशिला रखी गई। इस अवसर पर माननीय पर्यटन मंत्री जी तथा अन्य अधिकारियों ने नई दिल्ली में वीडियो कांफ्रेसिंग से जरिए कार्यक्रम में भाग लिया।

मत भूलिए.....कोरोना अभी खत्म नहीं हुआ है !

कुफरी, हिमाचल प्रदेश में लगी पर्यटकों की भीड़। (साभार-हिन्दुस्तान टाइम्स)

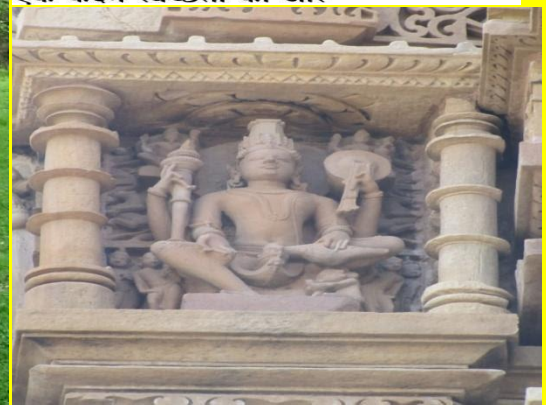

कंदारिया महादेव मंदिर में विराजमान विष्णु जी।

इंडिया गेट, नई दिल्ली बादल का दृश्य

अतुल्य भारत

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, कमरा नं-2, 7वां तल, चन्द्रलोक बिल्डिंग,

36, जनपथ, नई दिल्ली -110001

पर्यटक हैल्पलाइन 1800111363 लघु कोड : 1363 [24X7]